फ़ज़ाइले आमाल

भाग–1

- हिकायाते सहाबा रज़ि०
- फ़ज़ाइले नमाज़
- फ़ज़ाइले तबलीग़
- फ़ज़ाइले ज़िक्र
- फ़ज़ाइले रमज़ान
- फ़ज़ाइले कुरआन मजीद
- फ़ज़ाइले दरूद शरीफ़
- मुसलमानों की मौजूदा पस्ती का वाहिद इलाज

शैख़ुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया (रह०) कांधलवी

फ़ज़ाइले आमाल

भाग–1

- हिकायाते सहाबा रज़ि०
- फ़ज़ाइले नमाज़
- फ़ज़ाइले तबलीग़
- फ़ज़ाइले ज़िक्र
- फ़ज़ाइले रमज़ान
- फ़ज़ाइले कुरआन मजीद
- फ़ज़ाइले दरूद शरीफ़
- मुसलमानों की मौजूदा पस्ती का वाहिद इलाज

शैख़ुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया (रह०) कांधलवी

قال النبي صلى الله عليه وسلم بلغوا عني ولو آية

फ़ज़ाइले आमाल

जिसमें आठ किताबें शामिल हैं।

जिल्द अव्वल

1. हिकायाते सहाबा रज़ि०
2. फ़ज़ाइले नमाज़
3. फ़ज़ाइले तब्लीग़
4. फ़ज़ाइले ज़िक्र
5. फ़ज़ाइले क़ुरआन मजीद
6. फ़ज़ाइले रमज़ान
7. फ़ज़ाइले दरूद शरीफ़
8. मुसलमानों की मौजूदा पस्ती का वाहिद इलाज

लेखक :

हज़रत मौलाना अल-हाज्ज अल-हाफ़िज़

मुहम्मद ज़करिया साहब रह०

मज़ाहिर उलूम, सहारनपुर

खुर्शीद बुक डिपो (रजि०)

2256, अहाता हज्जन बी, लाल कुआँ, देहली-6

Click-->

لَقَدْ كَانَ فِي قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِأُولِي الْأَلْبَابِ

बेशक उनके क़िस्से में (बड़ी) इबरत है
समझदारों के लिए

हिकायाते सहाबा

यानी
सच्ची कहानियां

जिसमें
हज़रत मौलाना अल-हाज्ज, अल-हाफ़िज़ अश्शह अब्दुल क़ादिर
साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि के इर्शाद से
फ़ख़रुल अमासिल ज़ुब्दतुल अफ़ाज़िल हज़रत मौलाना अल-हाज्ज,
अल-हाफ़िज़ अल-मुहद्दस **मुहम्मद ज़करिया** साहिब रह०
शेख़ुल हदीस, मदरसा मज़ाहिरे उलूम सहारनपुर ने
सहाबी मर्दों, सहाबी औरतों, सहाबी बच्चों के ज़ुहद व तक़्वा,
फ़क़्र व इबादत, इल्मी मशाग़िल, ईसार व हमदर्दी, बे-मिसाल
जुरात व बहादुरी, हैरत अंगेज़ जांबाज़ी वग़ैरह के ईमान-अफ़रोज़
हालात बयान किये हैं।

प्रकाशक
सय्यद सिराज अहमद

ख़ुर्शीद बुक डिपो (रजि.)
2256, अहाता ख़ज़ान जी, लाल कुआँ, देहली-6

Click-->

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अपनी बात

हम अल्लाह तआला का लाख-लाख शुक्र अदा करते हैं कि उसके फ़ज़्ल से उर्दू की मशहूर किताब 'तब्लीग़ी निसाब' जिल्द अव्वल का हिन्दी एडीशन पेश करने की हमें तौफ़ीक़ हुई है।

आज हमारे मुल्क में हिंदी का जैसा कुछ चलन है, इसे कौन नहीं जानता। मुल्क के कई सूबों में हमारे भाई सिर्फ़ हिंदी जानते और उसी में पढ़ते लिखते हैं। उर्दू उनके लिए अजनबी ज़बान बन गयी है। उन्हें इस्लामी तालीमात में से वाक़िफ़ कराने।, इस्लामी तारीख़ के ईमान बढ़ाने वाले वाक़िआत बतलाने, नमाज़ क़ुरआन मजीद, ज़िक्र, दरूद शरीफ़ के फ़ज़ाइल समझाने और दीन की तब्लीग़ की फ़ज़ीलत और अहमियत से वाक़िफ़ कराने की शदीद ज़रूरत एक अर्से से महसूस हो रही थी। इन तमाम बातों की जामेअ किताब 'तब्लीग़ी निसाब' का इंतिख़ाब इसी लिए किया गया और उसका हिंदी एडीशन तैयार कराने की पूरी कोशिश इसी लिए की गयी, ताकि अपने भाइयों की इस ज़रूरत को पूरा किया जा सके।

हमने इस किताब की तैयारी में शेख़ुल हदीस हज़रत मौलाना ज़करिया की ख़्वाहिश या उनकी ज़बान को, जैसी कुछ वह है, देवनागरी लिपि में बदल दी है। जहां बहुत ज़्यादा मुश्किल लफ़्ज़ आ गये हैं, उनकी हाशिए में तशरीह कर दी है ताकि लोगों को समझने में परेशानी न हो। अरबी मतन भी दे दिया गया है ताकि अरबी जानने वाले भी फ़ायदा उठा सकें या उसकी बुनियाद पर अरबी जानने वालों के मशविरे भी लिए जा सकें और मफ़्हूम समझने में आसानी हो जाए।

अल्लाह तआला से दुआ है कि उर्दू एडीशन की तरह यह भी पढ़ने वालों के लिए ज़्यादा फ़ायदा उठाने की वजह बन जाए, आमीन!

हज़रत मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहब रह० की

हालाते ज़िन्दगी

पैदाइश

हज़रत शैख़ुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहब रह० 'कांधला' में रमज़ानुल मुबारक 1315 हि० में पैदा हुआ। हज़रत शैख़ुल हदीस रह० के वालिद माजिद हज़रत मौलाना मुहम्मद यह्या साहब रह० उस ज़माने में हज़रते अक़सद मौलाना रशीद अहमद गंगोही कि ख़ानक़ाह में रहते थे। हज़रत शैख़ुल हदीस रह० को भी बचपन में वहीं ले गये थे।

तालीम

गंगोह में डाक्टर अब्दुर्रहमान साहब के पास आप ने तालीम की 'बिस्मिल्लाह' की और उन्हीं से 'क़ायदा बग़दादी' पढ़ कर ख़त्म किया। इब्तिदाई क़ायदा सीपारा पढ़ने के बाद क़ुरआन करीम हिफ़्ज़ किया। इस के बाद उर्दू दीनियात की इब्तिदाई किताबें और फ़ारसी की इब्तिदाई किताबें मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह अलैहि से गंगोह में पढ़ीं, उस वक़्त आप की उम्र बारह-तेरह साल की थी।

इस के बाद मौलाना मुहम्मद यह्या साहब मय अह्ल व अयाल के सहारनपुर चले गये। गंगोह में आप का किताबों का तिजारती कुतुबख़ाना था, चुनांचे सहारनपुर में भी यह काम जारी रहा और मदरसा मज़ाहिरुल उलूम में मुदर्रिस (टीचर) हो गये। हज़रत शैख़ुल हदीस रह० की बाक़ी तालीम सहारनपुर ही में हुई। मंतिक़ (तर्क शास्त्र) वग़ैरह की किताबें हज़रत अब्दुल लतीफ़ साहब मोहतमिम मदरसा मज़ाहिरुल उलूम और मौलाना अब्दुल वहीद साहब संभली से पढ़ी।

हदीस की किताबें, अलावा दूसरे असातज़ा (उस्तादों) के ख़ुद अपने वालिद मौलाना मुहम्मद यह्या साहब रह० से भी पढ़ीं। पढ़ने के ज़माने में आप ने बड़ी मेहनत और शौक़ से पढ़ा। वालिद साहब को भी आप की तर्बियत और तालीम वग़ैरह का बहुत ख़्याल था। अक्सर सबक़ों में निगरानी फ़रमाते थे। किताबों के और उस्तादों के एहतराम की बहुत ताकीद फ़रमाते थे। हदीस शरीफ़ की तरफ़ वालिद साहब रह०

भी उनको लगाना चाहते थे और खुद उनकी भी तबियत उसी में लगती थी।

उस्ताद की हैसियत से

तालीम से फ़ारिग़ होने के बाद मुहर्रम 1335 हि० में आप मदरसा मज़ाहिरुल उलूम में मुदर्रिस हो गये। शुरू में इब्तिदाई किताबें पढ़ाने को मिलीं, 'उसूले शाशी', 'इल्मुस्सीग़ा', इससे अगले साल में 'मक़ामाते हरीरी' 'सबअ: मुअल्लक़', पढ़ाए। इसके बाद मिश्कात पढ़ाई और ये सब किताबें बड़ी मेहनत और मुताला से पढ़ायीं। मुदर्रिसी के छठे या सातवें साल में आप के पास बुख़ारी शरीफ़ के तीन पारे आए और उनके साथ ही मिश्कात भी जारी रही।

हज़रत मौलाना ख़लील अहमद साहब सहारनपुरी जो मदरसा मज़ाहिरे उलूम के शैख़ुल हदीस थे और हज़रत शैख़ुल हदीस रह० के उस्ताद और पीर व मुर्शिद थे। उन्होंने जब अबूदाऊद शरीफ़ की शरह 'बज़्लुल मज्हूद' लिखना शुरू की तो उस में शुरू ही से हज़रत शैख़ुल हदीस रह० को अपने काम में मददगार की हैसियत से रखा। किताबों में मजामीन तलाश करना उन को मुनासिब मक़ामात पर हज़रत मौलाना ख़लील अहमद साहब रह० की हिदायत के मुताबिक़ नक़ल करना और जो इम्ला करायें, उसको लिखना यह काम हज़रत शैख़ुल हदीस साहब रह० करते रहे। आख़िरी दौर में कुछ और ज़िम्मेदारियां भी आप के सुपुर्द हो गयीं थीं।

हज़रत मौलाना ख़लील अहमद साहब सहारनपुरी को हज़रत रह० के ऊपर काफ़ी एतमाद था और आप के काम से ख़ुश थे, इस लिए जब आप ने हज का इरादा किया तो हज़रत शैख़ुल हदीस साहब को भी अपने साथ ही ले गये। वहां भी शरह अबूदाऊद का काम जारी रहा और शैख़ुल हदीस साहब रह० असिस्टेंट रहे, क्योंकि असल ग़रज़ आप के साथ जाने की यही थी कि शरह अबूदाऊद के काम में मदद देते रहें, चुनांचे हज़रत सहारनपुरी ने वहां मुस्तक़िल क़ियाम फ़रमाया। लेकिन मदरसा मज़ाहिरे उलूम में मुदर्रिस की ज़रूरत थी, वहां के तक़ाज़े की वजह से हज़रत सहारनपुरी ने हज़रत शैख़ुल हदीस साहब रह० को शैख़ुल हदीस के ओहदे पर लगा कर हिंदुस्तान भेज दिया और बैअत की इजाज़त भी दे दी।

हिंदुस्तान आने के बाद शैख़ुल हदीस साहब रह० पूरी तवज्जोह के साथ पढ़ाने के कामों में लग गये। इसके साथ ही 'औजज़ुल मसालिक' शरह मुअत्ता इमाम मालिक का काम भी जारी रहा, जो कि हिजाज़ के क़ियाम के ज़माने में ही शुरू कर दिया था।

किताबें

'औजज़ुल मसालिक, शरहे मुअत्ता इमाम मालिक' (छः जिल्दें) यह आप की चालीस साला मेहनतों का निचोड़ है। हिजाज़ तक के बड़े-बड़े उलमा इसकी तारीफ़ से नहीं थकते। इसमें से कुछ ऊंचे क़िस्म के उलमा का कहना है कि अगर इस किताब के मुसन्निफ़ (लेखक) किताब के शुरू में अपना हनफ़ी होना न लिख देते, तो हम उन्हें कभी भी हनफ़ी न समझते, बल्कि मालिकी ही समझते, क्योंकि फ़िक़्हे मालिकी की तफ़्सीली बातें इतनी ज़्यादा इस किताब में जमा की गयी हैं कि उनका एक ही वक़्त में किसी और मालिकी फ़िक़्ह की किताब में मिलना मुश्किल है।

इसी तरह 'लामिअुद्दरारी अला जामिअिल बुख़ारी' (तीन जिल्दें) कौकबुद्दरी (दो ज़िल्दें) 'जुज़ हज्जतिल विदाअ' और 'अल-अब्वाबु वत्तराजुम लिल बुख़ारी मुतअद्दद' जिल्दों में उन की हदीस की ख़िदमत का बेहतरीन नमूना है।

जैसे जैसे मुताले का शौक़ बढ़ता रहा, और नज़र में फैलाव होता रहा, नयी-नयी किताबें लिखते गये। अब आप की तमाम किताबों की तायदाद 89 है, जिन में 29 छप चुकी हैं और बाक़ी अभी नहीं छप सकी हैं।

हज़रत शैख़ुल हदीस की किताबों में 'औजज़ुल मसालिक' सब से ज़्यादा मशहूर किताब है। इसके अलावा सुनने तिर्मिज़ी शरीफ़ पर मौलाना रशीद अहमद साहब गंगोही मर्हूम की तक़रीरात, जो शैख़ुल हदीस रह० के वालिद हज़रत मौलाना यह्या साहब ने अरबी में लिखी थीं, आप ने उनको भी छापा और उन पर मुख़्तसर हाशिए भी लिखे। इसी का नाम 'कौकबुद्दरी' है, यह दो जिल्दों में है।

हज़रत शैख़ुल हदीस की एक किताब 'ख़साइले नबवी' भी है। यह असल में इमाम तिर्मिज़ी की किताब 'अश-शिमाइल' का उर्दू तर्जुमा है। इस में जगह-जगह अरबी और उर्दू हाशिए भी हैं।

फ़ज़ाइल की किताबें

हज़रत मौलाना मुहम्मद इल्यास रहमतुल्लाहि अलैहि, जमाअते तब्लीग़ के बानी ने यह महसूस की कि तब्लीग़ी जमाअतों में शिर्कत करने वालों के मुताले और उनकी मज़हबी और दीनी मालूमात के लिए कुछ किताबें लिखी जाएं। चुनांचे आप ने हज़रत शैख़ुल हदीस को हुक्म फ़रमाया कि फ़्लां-फ़्लां मौज़ूअ (विषय) पर किताबें लिखें, इसलिए इस मजमूए की अकसर किताबें हज़रत मौलाना मोहम्मद इलयास रह० के हुक्म से ही लिखी गयी हैं, जैसा कि इनके शुरू में इसका बयान है।

ये किताबें अवाम में बहुत मक़्बूल हुयीं और बड़ी तादाद में मुख़्तलिफ़ जगहों पर छपी हैं।इनके मज्मूए का नाम आजकल 'फ़ज़ाइले आमाल' है। इस निसाब की दूसरी जिल्द 'फ़ज़ाइले सदक़ात मुकम्मल व फ़ज़ाइले हज' है, जो बहुत उम्दा और काफ़ी मोटी है और बड़ी मुफ़ीद मालूमात का मज्मूआ है।

एक बुज़ुर्ग इन्सान

हज़रत शैख़ बहुत मुत्तक़ी, परहेज़गार और इबादत गुज़ार थे। हर-हर बात में शरीअत का बहुत ध्यान रखते थे। आप की ज़ात से लोगों को बहुत फ़ैज़ हो रहा है। अक्सर आप के यहां मेहमानों का मज्मा रहता है। लोग दूर-दूर से आप से मुलाक़ात करने के लिए आते थे। आप के मुरीदों का हल्क़ा भी बहुत लंबा चौड़ा है। अवाम के अलावा बहुत से उलमा भी आप से बैअत का ताल्लुक़ रखते हैं।

उस वक़्त हज़रत शैख़ुल हदीस की ज़ात दीन का एक बड़ा मीनार ज़ुह्द व तक़्वा का एक रोशन स्तून और तमाम दीनी इदारों और दीन का काम करने वालों के लिये रूहानी पेशवा और सरपरस्त थे।

हिदायत चाहने वालों के नफ़्स की इस्लाह, मज़ाहिरे उलूम की जिस्मानी व रूहानी सरपरस्ती, तब्लीग़ी जमाअत की रूहानी पेशवाई, किताबों का लिखना, ये हैं वे चीज़ें जिन में हज़रत शैख़ुल हदीस रह० अपनी कमज़ोरी व बुढ़ापे के बावजूद दिन व रात लगे रहते थे।

बिला मुबालग़ा कहा जा सकता है कि इस वक़्त तमाम दीनी इदारों, दीनी जमाअतों और दीनी काम करने वाले लोगों के लिये हज़रत शैख़ुल हदीस की ज़ातें

बा बरकत एक मनारे की हैसियत रखती है। मुख़्तलिफ़ मिज़ाज़ वाली जमाअतें और लोग, जो आपस में काफ़ी दूरी रखते हैं, हज़रते वाला की ज़ात पर सब जमा हो जाते हैं और सभी आप को अपना पेशवा और सरपरस्त समझते थे और अपने ज़ाती मामलों में मशिवरा तलब करते रहते थे। फिर आप भी सब पर अपनी मुहब्बत का साया फैलाए हुये थे और आप का दरवाज़ा सब के लिये खुला था। अल्लाह तआला से दुआ है कि आप का लुत्फ़ व करम इसी तरह क़ायम रहे।

विषय-सूची

क्या?		कहाँ?
	पहला बाब	
तम्हीद		1
	दीन की ख़ातिर सख़्तियों को बर्दाश्त करना और तकालीफ़ और मशक़्क़त का झेलना	20
1.	हुज़ूरे अक़रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ताइफ़ के सफ़र का क़िस्सा	20
2.	क़िस्सा हज़रत अनस बिन नज़्र रज़ि० की शहादत का	23
3.	सुलह हुदैबिया और अबू जंदल रज़ि० और अबू बसीर रज़ि० का क़िस्सा	24
4.	हज़रत बिलाल हब्शी रज़ि० का इस्लाम और मसाइब	26
5.	हज़रत अबूज़र गिफ़ारी रज़ि० का इस्लाम	28
6.	हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० बिन अल-अरित की तक्लीफ़ें	30
7.	हज़रत अम्मार रज़ि० और उनके वालिदैन का ज़िक्र	31
8.	हज़रत सुहैब रज़ि० का इस्लाम	32
9.	हज़रत उमर रज़ि० का क़िस्सा	34
10.	मुसलमानों की हब्शा की हिजरत और शुअब बिन अबी तालिब में क़ैद होना	36
	दूसरा बाब	
	अल्लाह जल्ले जलालुहू व अम्म नवालुहू का ख़ौफ़ और डर	40
1.	आंधी के वक़्त हुज़ूर सल्ल० का तरीक़ा	40
2.	अंधेरे में हज़रत अनस रज़ि० का फ़ेल	42
3.	सूरज ग्रहण में हुज़ूर सल्ल० का अमल	42
4.	हुज़ूर सल्ल० का तमाम रात रोते रहना	43
5.	हज़रत अबूबक्र रज़ि० पर अल्लाह का डर	44
6.	हज़रत उमर रज़ि० की हालत	45

क्या? कहाँ?

7. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० की नसीहत 47
8. तबूक के सफ़र में क़ौमे समूद की बस्ती पर गुज़र 48
9. तबूक में हज़रत काब रज़ि० की ग़ैर-हाज़िरी और तौबा 50
10. सहाबा रज़ि० के हंसने पर हुज़ूर सल्ल० की तंबीह और क़ब्र की याद 56
11. हज़रत हंज़ला रज़ि० को निफ़ाक़ का डर 57
12. तक्मील-अल्लाह के ख़ौफ़ के मुतफ़र्रिक़ अहवाल 59

तीसरा बाब

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन के ज़ुहद और फ़क़्र के बयान में 63
1. हुज़ूर सल्ल० का पहाड़ों को सोना बना देने से इन्कार 63
2. हज़रत उमर रज़ि० के वुस्अत तलब करने पर तंबीह और हुज़ूर सल्ल० के गुज़र की हालत 64
3. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० की भूख में हालत 66
4. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० का बैतुलमाल से वज़ीफ़ा 67
5. हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० का बैतुल्माल से वज़ीफ़ा 68
6. हज़रत बिलाल रज़ि० का हुज़ूर सल्ल० के लिए एक मुश्रिक से क़र्ज़ लेना 70
7. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० का भूख में मस्अला दर्याफ़्त करना 72
8. हुज़ूर सल्ल० का सहाबा रज़ि० से दो शख़्सों के बारे में सवाल 74
9. हुज़ूर सल्ल० से मुहब्बत करने वाले पर फ़क्र की दौड़ 75
10. सरीयतुल अम्बर में फ़क्र की हालत 75

चौथा बाब

सहाबा किराम रज़ि० के तक़्वा के बयान में 76
1. हुज़ूर सल्ल० की एक जनाज़े से वापसी और एक औरत की दावत 77
2. हुज़ूर सल्ल० का सदक़ा की खजूर के ख़ौफ़ से तमाम रात जागना 77
3. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० का एक काहिन के खाने से क़ै करना 78

क्या?		कहाँ?
4.	हज़रत उमर रज़ि० की सदक़ा के दूध से क़ै	79
5.	हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० का एहतियातन बाग़ वक़्फ़ करना	79
6.	हज़रत अली बिन माबद रह० का किराये के मकान से तहरीर को ख़ुश्क करना	80
7.	हज़रत अली रज़ि० का एक क़ब्र पर गुज़र	81
8.	हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद, जिसका खाना हराम हो, लेना हराम	82
9.	हज़रत उमर रज़ि० का अपनी बीवी को मुश्क तौलने से इंकार	83
10.	हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ि० का हज्जाज के हाकिम को हाकिम न बनाना	84

पाँचवा बाब

	नमाज़ का शग़फ़ और ज़ौक़ शौक़ और उसमें ख़ुशूअ और ख़ुज़ूअ	85
1.	अल्लाह तआला का इर्शाद नवाफ़िल वाले के हक़ में	85
2	हुज़ूर सल्ल० का तमाम रात नमाज़ पढ़ना	86
3.	हुज़ूर सल्ल० का चार रकअत में छः पारे पढ़ना	86
4.	हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ व इब्ने ज़ुबैर व हज़रत अली रज़ि० वग़ैरह की नमाज़ों के हालात	88
5.	एक मुहाजिर और एक अंसारी की चौकीदारी और मुहाजिर का नमाज़ में तीर खाना	90
6.	हज़रत अबू तल्हा रज़ि० का नमाज़ में ख़्याल आ जाने से बाग़ वक़्फ़ करना	91
7.	हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० का नमाज़ की वजह से आँख न बनवाना	92
8	सहाबा रज़ि० का नमाज़ के वक़्त फ़ौरन दुकानें बन्द करना	93
9.	हज़रत ख़ुबैब रज़ि० का क़त्ल के वक़्त नमाज़ और ज़ैद रज़ि० व आसिम रज़ि० का क़त्ल	94
10.	हुज़ूर सल्ल० की जन्नत में मसर्रत के लिए नमाज़ की मदद	98

छठा बाब

	ईसार व हमदर्दी और अल्लाह की राह में ख़र्च करना	99

क्या?		कहाँ?
1.	सहाबी रज़ि० का मेहमान की ख़ातिर चिराग़ बुझा देना	100
2.	रोज़ादार के लिए चिराग़ बुझा देना	100
3.	एक सहाबी रज़ि० का ज़कात में ऊँट देना	101
4.	हज़रात शैख़ैन का सदक़े में मुक़ाबला	102
5.	सहाबा रज़ि० का दूसरों की वजह से प्यासे मरना	103
6.	हज़रत हम्ज़ा रज़ि० का कफ़न	104
7.	बकरे की सिरी का चक्कर काट कर वापस आना	105
8.	हज़रत उमर रज़ि० का अपनी बीवी को ज़चगी में ले जाना	106
9.	अबू तल्हा का बाग़ वक़्फ़ करना	107
10.	हज़रत अबूज़र रज़ि० का अपने ख़ादिम को तंबीह फ़र्माना	108
11.	हज़रत जाफ़र रज़ि० का क़िस्सा	111

सातवां बाब

	बहादुरी, दिलेरी और मौत का शौक़	113
1.	इब्ने जहश रज़ि० और इब्ने सअद रज़ि० की दुआयें	113
2.	उहद की लड़ाई में हज़रत अली रज़ि० की बहादुरी	114
3.	हज़रत हंज़ला रज़ि० की शहादत	116
4.	अम्र बिन जमह रज़ि० की तमन्ना-ए-शहादत	116
5.	हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ि० की शहादत	117
6.	यर्मूक की लड़ाई में हज़रत सअद रज़ि० का ख़त	119
7.	हज़रत वह्ब बिन क़ाबूस रज़ि० की उहद में शहादत	120
8.	बिअरे मऊना की लड़ाई	121
9.	हज़रत उमैर रज़ि० का क़ौल कि खजूरें खाना तवील ज़िन्दगी है	124
10.	हज़रत उमर रज़ि० की हिजरत	124
11.	ग़ज़्वा-ए-मौता का क़िस्सा	125
12.	हज़रत सअद बिन ज़ुबैर और हज्जाज की गुफ़्तगू	128

आठवां बाब

	इल्मी वलवला और उसका इन्हिमाक	133
1.	फ़त्वे का काम करने वाली जमाअत की फ़ेहरिस्त	134

क्या? कहाँ?

2. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० का मज्मूए को जला देना 135
3. तब्लीग़ हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ि० 136
4. हज़रत उबई बिन काब रज़ि० की तालीम 137
5. हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० का एहतमामे फ़ितन 139
6. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० का अहादीस को हिफ़्ज़ करना 140
7. क़त्ले मुसैलिमा व क़ुरआन का जमा करना 142
8. हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० की एहतियात रिवायते हदीस में 144
9. हज़रत अबू दर्दा रज़ि० के पास हदीस के लिए जाना 145
10. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० का अंसारी के पास जाना 148

नवां बाब

हुज़ूर सल्ल० की फ़र्माबरदारी और इम्तिसाले हुक्म
और यह देखना कि हुज़ूर सल्ल० का मन्शा-ए-मुबारक क्या है? 157
1. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० का चादर को जला देना 158
2. अंसारी का मकान को ढ़ाह देना 158
3. सहाबा रज़ि० का सुर्ख़ चादरों को उतारना 160
4. हज़रत वाइल रज़ि० का ज़ुबाब के लफ़्ज़ से बाल कटवा देना 161
5. हज़रत सुहैल बिन हंज़ला रज़ि० की आदत और
खुरैम रज़ि० का बाल कटवा देना 161
6. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० का अपने बेटे से न बोलना 162
7. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से सवाल के
नमाज़ क़ब्ल क़ुरआन में नहीं 163
8. हज़रत इब्ने मुग़फ़्फ़ल रज़ि० का ख़ज़्फ़
की वजह से कलाम छोड़ देना 164
9. हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़ि० का सवाल से अह्द 165
10. हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० का जासूसी के लिए जाना 166

दसवां बाब

औरतों का दीनी जज़्बा 168
1. तस्बीहात हज़रत फ़ातिमा रज़ि० अनहा 168

क्या? कहाँ?

2. हज़रत आइशा रज़ि० का सदक़ा 170
3. हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० का हज़रत आइशा रज़ि० को सदक़े से रोकना 171
4. हज़रत आइशा रज़ि० की हालत अल्लाह के ख़ौफ़ से 172
5. हज़रत उम्मे सल्मा रज़ि० के ख़ाविंद की दुआ और हिजरत 173
6. हज़रत उम्मे ज़ियाद रज़ि० की चंद औरतों के साथ ख़ैबर की जंग में शिर्कत 175
7. हज़रत उम्मे हराम रज़ि० की ग़ज़वतुल बहर में शिर्कत की तमन्ना 176
8. हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० की लड़के के मरने पर ख़ाविन्द से हमबिस्तरी 177
9. हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि० का अपने बाप को बिस्तर पर न बिठाना 179
10. हज़रत ज़ैनब रज़ि० का इफ़्क़ के मामले में सफ़ाई पेश करना 180
11. हज़रत ख़नसा रज़ि० की अपने चार बेटों समेत जंग में शिर्कत 183
12. हज़रत सफ़िया रज़ि० का यहूदी को तन्हा मारना 184
13. हज़रत अस्मा रज़ि० का औरतों के अज्र के बारे में सवाल 185
14. हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ि० का इस्लाम और जंग में शिर्कत 187
15. हज़रत उम्मे हकीम रज़ि० का इस्लाम और जंग में शिर्कत 190
16. हज़रत सुमैया, उम्मे अम्मार की शहादत 191
17. हज़रत अस्मा रज़ि० बिन्ते अबूबक्र रज़ि० की ज़िंदगी और तंगी 191
18. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० का हिजरत के वक़्त माल ले जाना और हज़रत अस्मा रज़ि० का अपने दादा को इत्मीनान दिलाना 193
19. हज़रत अस्मा रज़ि० की सख़ावत 194
20. हुज़ूर सल्ल० की बेटी हज़रत ज़ैनब रज़ि० की हिजरत और इंतिक़ाल 195
21. हज़रत रुब्बीअ बिन्ते मुअव्वज़ की ग़ैरते दीनी 196

मालूमात

क्या?	कहाँ?
हुज़ूर सल्ल० की बीवियाँ और औलादें	198
हुज़ूर सल्ल० की औलादें	210

ग्यारहवां बाब

	बच्चों का दीनी वलवला और बचपन में दीन का एहतमाम	216
1.	बच्चों को रोज़ा रखवाना	217
2.	हज़रत आइशा रज़ि० की अहादीस और आयत का नुज़ूल	218
3.	हज़रत उमैर रज़ि० का जिहाद की शिर्कत का शौक़	219
4.	हज़रत उमैर रज़ि० का बद्र की लड़ाई में छुपना	219
5.	दो अंसारी बच्चों का अबू जहल को क़त्ल करना	220
6.	हज़रत राफ़ेअ रज़ि० और हज़रत जुन्दुब रज़ि० का मुक़ाबला	221
7.	हज़रत ज़ैद रज़ि० का क़ुरआन की वजह से तक़द्दुम	223
8.	हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० के बाप का इंतिक़ाल	224
9.	हज़रत सलमा बिन अक्वअ रज़ि० की ग़ाबा पर दौड़	225
10.	बद्र का मुक़ाबला और हज़रत बरा रज़ि० का शौक़	227
11.	हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उबई का अपने बाप से मामला	228
12.	हज़रत जाबिर रज़ि० की हमरउल असद में शिर्कत	229
13.	हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० की बहादुरी रूम की लड़ाई में	231
14.	हज़रत अम्र बिन सलमा का कुफ़्र की हालत में क़ुरआन पाक का याद करना	232
15.	हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० का अपने ग़ुलाम के पांव में बेड़ी डालना	233
16.	हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० का बचपन में हिफ़्ज़े क़ुरआन	233
17.	हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल आस रज़ि० का हिफ़्ज़े हदीस	234
18.	हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० का फ़िफ़्ज़े क़ुरआन	236
19.	हज़रत इमाम हसन रज़ि० का बचपन में इलमी मशग़ला	237
20.	हज़रत इमाम हुसैन रज़ि० का इल्मी मशग़ला	238

क्या? कहाँ?

बारहवां बाब

	हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मुहब्बत के वाक़िआत में	241
1.	हज़रत अबूबक्र रज़ि० के एलाने इस्लाम और तक्लीफ़	241
2.	हज़रत उमर रज़ि० का हुज़ूर सल्ल० के विसाल पर रंज	244
3.	एक औरत का हुज़ूर सल्ल० की ख़बर के लिए बेक़रार होना	245
4.	हुदैबिया में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० और मुग़ीरह रज़ि० का फ़ेल और आम सहाबा रज़ि० का तर्ज़े अमल	246
5.	हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० का ख़ून पीना	150
6.	हज़रत मालिक बिन सनान का ख़ून पीना	250
7.	हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ि० का अपने बाप को इंकार	251
8.	हज़रत अनस बिन नज़्र रज़ि० का अमल उहद की लड़ाई में	253
9.	हज़रत साद बिन रबीअ का पयाम उहद में	254
10.	हुज़ूर सल्ल० की क़ब्र देखकर एक औरत की मौत	254
11.	सहाबा की मुहब्बत के मुतफ़र्रिक़ क़िस्से	255

ख़ात्मा

सहाबा किराम रज़ि० के साथ बर्ताव और उनके इज्माली फ़ज़ाइल	261

तम्हीद

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ وَنُسَلِّمُ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَاَتْبَاعِهِ الْحُمَاةِ لِلدِّيْنِ الْقَوِيْمِ

नह्मदुहू व नुसल्ली व नुसल्लिमु अला रसूलिहिल करीमि व आलिही व सह्बिही व अत्बाअिही अल-हुमाति लिद्दीनिल क़वीमि०

अम्मा बअ्दु– अल्लाह के एक बरगुज़ीदा बन्दे और मेरे मुरब्बी व मुह्सिन का इर्शाद सन् 1353 हि० में हुआ कि सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन के चन्द क़िस्से बिलख़ुसूस कम-सिन सहाबा और औरतों की दीनदारी की कुछ हालत उर्दू में लिखी जाए ताकि जो लोग क़िस्सों के शौक़ीन हैं, वह वाही-तबाही झूठी हिकायात के[1] बजाए अगर उनको देखें तो उनके लिए दीनी तरक़्क़ी का सबब हो और घर की औरतें अगर रातों में बच्चों को झूठी कहानियों के बजाए इनको सुनायें तो बच्चों के दिल में सहाबा रज़ि० की मुहब्बत और अज़्मत के साथ दीनी उमूर[2] की तरफ़ रग़बत[3] पैदा हो। मेरे लिए इस इर्शाद की तामील बहुत ही ज़रूरी थी कि एहसानात में डूबे हुए होने के अलावा अल्लाह वालों की ख़ुशनूदी दोनों जहान में फ़लाह का सबब होती है, मगर इसके बावजूद अपनी कम-मायगी से यह उम्मीद न हुई कि मैं इस ख़िदमत को मरज़ी के मुवाफ़िक़ अदा कर सकता हूं, इसलिए चार वर्ष तक बार-बार इस इर्शाद को सुनता रहा और अपनी ना-अह्लियत से शर्मिंदा होता रहा कि सफ़र सन् 1357 हि० में एक मर्ज़ की वजह से चन्द रोज़ के लिए दिमाग़ी काम से रोक दिया गया, तो मुझे ख़्याल हुआ कि इन ख़ाली अय्याम को इस बा-बरकत मश्ग़ले में गुज़ार दूं कि अगर ये औराक़ पसंद ख़ातिर[4] न हुए तब भी मेरे ये ख़ाली औक़ात तो बेहतरीन और बा-बरकत मश्ग़ला में गुज़र ही जाएंगे।

इसमें शक नहीं कि अल्लाह वालों के क़िस्से उनके हालात यक़ीनन इस क़ाबिल हैं कि उनकी तह्क़ीक़ और तफ़्तीश[5] की जाए और उनसे सबक़ हासिल किया जाए, बिल-ख़ुसूस सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन की जमाअत, जिनको अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने लाडले नबी और प्यारे रसूल की मुसाहबत[6] के लिए चुना, इसकी

---

1. क़िस्से, 2. मामलों, 3. चाव, 4. पसंदीदा, 5. खोज, छान-फटक,
6. यानी साथ रहने के लिए,

मुस्तहक़ है कि उसका इत्तिबाअ[1] किया जाए। इसके अलावा अल्लाह वालों के ज़िक्र से अल्लाह की रहमत नाज़िल होती है।

सूफ़िया के सरदार हज़रत जुनैद बग़दादी रह० का इर्शाद है कि हिकायतें अल्लाह के लश्करों में से एक लश्कर है जिससे मुरीदीन के दिलों को तक़्वियत हासिल होती है। किसी ने दर्याफ़्त किया कि इसकी कोई दलील भी है? फ़र्माया, हां, अल्लाह जल्ल-शानुहू का इर्शाद है-

وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنبَاءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهِ فُؤَادَكَ
وَجَاءَكَ فِي هَٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَذِكْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ

व कुल्लन नक़ुस्सु अलैक मिन अंबाइर्रुसुलि मा नुसब्बितु बिही फ़ुआद क व जाअ क फ़ी हाज़िहिल हुक्कु व मौइज़तुंव्व ज़िक्रा लिल्मुअ्मिनीन०

तर्जुमा— 'और पैग़म्बरों के क़िस्सों में से हम यह सारे क़िस्से आप से बयान करते हैं जिनके ज़रिए से हम आपके दिल को तक़्वियत देते हैं। (एक फ़ायदा तो यह हुआ) और इन क़िस्सों में आपके पास ऐसा मज़्मून पहुंचता है जो ख़ुद भी रास्त और वाक़ई है और मुसलमानों के लिए नसीहत है (और अच्छे काम करने की) याद दहानी है।'[2]

एक ज़रूरी बात यह भी दिल में जमा लेने की है कि नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसें हों या बुज़ुर्गों के हालात, इसी तरह मसाइल की किताबें हो या मोतबर लोगों के वाज़ व इर्शादात, यह ऐसी चीज़ें नहीं होतीं कि एक मर्तबा देख लेने के बाद हमेशा को ख़त्म कर दिया जाए, बल्कि अपनी हालत और इस्तेदाद के मुवाफ़िक़ बार-बार देखते रहना चाहिए।

अबू सुलैमान दारानी एक बुज़ुर्ग हैं, वह फ़र्माते हैं कि मैं एक वाइज़ की मज्लिस में हाज़िर हुआ। उनके वाज़ ने मेरे दिल पर असर किया, मगर जब वाज़ ख़त्म हुआ तो वह असर भी ख़त्म हो गया। मैं दोबारा उनकी मज्लिस में हाज़िर हुआ तो उस वाज़ का असर फ़ारिग़ होने के बाद घर के रास्ते में भी रहा। तीसरी मर्तबा फिर हाज़िर हुआ, तो उसका असर घर में पहुंचने पर भी रहा। मैंने घर जाकर अल्लाह की ना-फ़र्मानी के जो अस्बाब थे, सब तोड़ दिए और अल्लाह का रास्ता इख़्तियार

---

1. पैरवी, 2. बयानुल क़ुरआन = (लेखक)

कर लिया। इसी तरह दीनी किताबों का भी हाल है कि महज़ सरसरी तौर पर एक मर्तबा उनके पढ़ लेने से असर कम होता है, इसलिए कभी-कभी पढ़ते रहना चाहिए। पढ़ने वालों की सहूलत और मजामीन के दिलनशीन होने के ख़्याल से मैंने इस रिसाले को बारह बाबों और एक ख़ात्मे पर तक़सीम किया है-

पहला बाब– दीन की ख़ातिर सख़्तियों का बर्दाश्त करना और तकालीफ़ व मशक़्क़त का झेलना।

दूसरा बाब– अल्लाह जल्ल जलालुहु का ख़ौफ़ और डर, जो सहाबा किराम की ख़ास आदत थी।

तीसरा बाब– सहाबा किराम रज़ि० के ज़ाहिदाना और फ़क़ीराना ज़िंदगी का नमूना।

चौथा बाब– सहाबा के तक़्वा और परहेज़गारी की हालत।

पांचवां बाब– नमाज़ का शौक़ और इसका एहतमाम।

छठा बाब– हमदर्दी और अपने ऊपर दूसरों को तर्जीह देना और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करना।

सातवां बाब– बहादुरी व दिलेरी और हिम्मत व शुजाअत और मौत का शौक़।

आठवां बाब– इल्मी मशाग़िल और इल्मी इन्हिमाक का नमूना।

नवां बाब– हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के इर्शादात की तामील।

दसवां बाब– औरतों का दीनी जज़्बा और बहादुरी और हुज़ूर सल्ल० की बीवियों और औलादों का बयान।

ग्यारहवां बाब– बच्चों का दीनी वल्वला और बचपन में दीन का एहतमाम।

बारहवां बाब– हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम के साथ मुहब्बत का नमूना।

ख़ात्मा– सहाबा रज़ि० के हुक़ूक़ और उनके मुख़्तसर फ़ज़ाइल।

पहला बाब

दीन की ख़ातिर सख़्तियों का बर्दाश्त करना और तकालीफ़ और मशक़्क़त का झेलना

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ि० ने दीन के फैलाने में जिस क़दर तक्लीफ़ें और मशक़्क़तें बर्दाश्त की हैं, उन का बर्दाश्त करना तो दरकिनार, उसका इरादा करना भी हम जैसे नालायकों से दुश्वार है। तारीख़ की किताबें इन वाक़िआत से भरी हुई हैं, मगर उन पर अमल करना तो अलाहिदा रहा, हम उनके मालूम करने की भी तक्लीफ़ नहीं करते। इस बाब में चन्द क़िस्सों को नमूने के तौर पर ज़िक्र करना है। इनमें सबसे पहले ख़ुद हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक क़िस्से से इब्तिदा करता हूं कि हुज़ूर सल्ल० का ज़िक्र बरकत का ज़रिया है।

1. हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ताइफ़ के सफ़र का क़िस्सा

नुबुव्वत मिल जाने के बाद नौ वर्ष तक नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का मुकर्रमा में तब्लीग़ फ़र्माते रहे, और क़ौम की हिदायत और इस्लाह की कोशिश फ़र्माते रहे, लेकिन थोड़ी सी जमाअत के सिवा, जो मुसलमान हो गई थी और थोड़े से ऐसे लोगों के अलावा जो बावजूद मुसलमान न होने के आप की मदद करते थे, अक्सर कुफ़्फ़ारे मक्का आपको और आप के सहाबा रज़ि० को हर तरह की तकलीफ़ें पहुंचाते थे, मज़ाक़ उड़ाते थे और जो हो सकता था, उससे दरगुज़र न करते थे।

हुज़ूर सल्ल० के चचा अबूतालिब भी उन्हीं नेक दिल लोगों में थे जो बावजूद मुसलमान न होने के हुज़ूर सल्ल० की हर क़िस्म की मदद फ़र्माते थे। दसवें साल में जब अबूतालिब का भी इन्तिक़ाल हो गया तो काफ़िरों को और भी हर तरह खुले मुहार[2] इस्लाम से रोकने और मुसलमानों को तकलीफ़ पहुंचाने का मौक़ा मिला। हुज़ूर सल्ल० इस ख़्याल से ताइफ़ तशरीफ़ ले गये कि वहां क़बीला सक़ीफ़ की बड़ी जमाअत है। अगर वह क़बीला मुसलमान हो जाये तो मुसलमानों को इन तकलीफ़ा

---

1. अध्याय, 2. खुले आम, पूरी आज़ादी के साथ।

से निजात मिले और दीन के फैलने की बुनियाद पड़ जाए। वहां पहुंच कर क़बीले के तीन सरदारों से, जो बड़े दर्जे के समझे जाते थे, गुफ़्तगू फ़र्माई और अल्लाह के दीन की तरफ़ बुलाया और अल्लाह के रसूल की यानी अपनी मदद की तरफ़ मुतवज्जह किया मगर उन लोगों ने बजाय इसके, कि दीन की बात को क़ुबूल करते या कम से कम अरब की मशहूर मेहमान-नवाज़ी के लिहाज़ से एक नौ-वारिद[2] मेहमान की ख़ातिर-मुदारात करने से साफ़ जवाब दे दिया और निहायत बे-रुखी और बद-अख़्लाक़ी से पेश आये। उन लोगों ने यह भी गवारा न किया कि आप यहां क़ियाम फ़र्मा लें। जिन लोगों को सरदार समझ कर यह बात की थी कि शरीफ़ होंगे और मुहज़्ज़ब गुफ़्तगू करेंगे, उनमें से एक शख़्स बोला, कि ओहो, आप को ही अल्लाह ने नबी बनाकर भेजा है, दूसरा बोला कि अल्लाह को तुम्हारे सिवा कोई और मिलता ही नहीं था, जिसको रसूल बनाकर भेजते। तीसरे ने कहा, मैं तुझसे बात नहीं करना चाहता, इसलिए कि अगर तू वाक़ई नबी है जैसा कि दावा है, तो तेरी बात से इन्कार कर देना मुसीबत से ख़ाली नहीं, अगर झूठ है तो मैं ऐसे शख़्स से बात नहीं करना चाहता। इसके बाद उन लोगों से ना-उम्मीद होकर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने और लोगों से बात करने का इरादा फ़र्माया कि आप तो हिम्मत और इस्तिक़लाल के पहाड़ थे, मगर किसी ने भी क़ुबूल न किया, बल्कि बजाए क़ुबूल करने के हुज़ूर सल्ल० से कहा कि हमारे शहर से फ़ौरन निकल जाओ और जहां तुम्हारी चाहत की जगह हो, वहां चले जाओ। हुज़ूरे अकरम सल्ल० जब उनसे बिल्कुल मायूस होकर वापस होने लगे तो उन लोगों ने शहर के लड़कों को पीछे लगा दिया कि आप का मज़ाक़ उड़ायें, तालियां पीटें, पत्थर मारें, हत्ता कि आप के दोनों जूते ख़ून के जारी होने से रंगीन हो गये। हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० इसी हालत में वापस हुए। जब रास्ते में एक जगह इन शरीरों से इत्मीनान हुआ, तो हुज़ूर सल्ल० ने यह दुआ मांगी-

اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ اَشْكُوْ ضُعْفَ قُوَّتِيْ وَقِلَّةَ حِيْلَتِيْ وَهَوَانِيْ عَلَى النَّاسِ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَنْتَ
رَبُّ الْمُسْتَضْعَفِيْنَ وَاَنْتَ رَبِّيْ اِلٰى مَنْ تَكِلُنِيْ اِلٰى بَعِيْدٍ يَتَجَهَّمُنِيْ اَمْ اِلٰى عَدُوٍّ مَلَّكْتَهٗ اَمْرِيْ
اِنْ لَّمْ يَكُنْ بِكَ عَلَيَّ غَضَبٌ فَلَا اُبَالِيْ وَلٰكِنْ عَافِيَتُكَ هِيَ اَوْسَعُ لِيْ اَعُوْذُ بِنُوْرِ وَجْهِكَ الَّذِيْ
اَشْرَقَتْ لَهُ الظُّلُمَاتُ وَصَلُحَ عَلَيْهِ اَمْرُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ مِنْ اَنْ يَّنْزِلَ بِيْ غَضَبُكَ اَوْ يَحِلَّ
عَلَيَّ سَخَطُكَ لَكَ الْعُتْبٰى حَتّٰى تَرْضٰى وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِكَ (كذا في سيرة ابن هشام قلت

واختلفت الروايات في الفاظ الدعاء كما

في قرة العيون)

1. नये आये मुसलमान

ऐ अल्लाह तुझी से शिकायत करता हूं मैं अपनी कमज़ोरी और बेकसी की और लोगों में ज़िल्लत व रुसवाई की। ऐ अर्हमर्राहमीन ! तू ही ज़ुअफ़ा[1] का रब है और तू ही मेरा परवरदिगार है। तू मुझे किस के हवाले करता है। किसी अजनबी बेगाने के, जो मुझे देख कर तुर्शरू[2] होता है और मुंह चिढ़ाता है या कि किसी दुश्मन के, जिसको तूने मुझ पर क़ाबू दे दिया। ऐ अल्लाह ! अगर तू मुझ से नाराज़ नहीं है तो मुझे किसी की भी परवाह नहीं है। तेरी हिफ़ाज़त मुझे काफ़ी है। मैं तेरे चेहरे के उस नूर के तुफ़ैल, जिससे तमाम अंधेरियां रौशन हो गयीं और जिससे दुनिया और आख़िरत के सारे काम दुरुस्त हो जाते हैं, इस बात से पनाह मांगता हूं कि मुझ पर तेरा गुस्सा हो या तू मुझसे नाराज़ हो, तेरी नाराज़गी का उस वक़्त तक दूर करना, ज़रूरी है जब तक तू राज़ी न हो, न तेरे सिवा कोई ताक़त है, न कुव्वत।

मालिकुल मुल्क की शान क़हहारी को इस पर जोश आना ही था कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने आकर सलाम किया और अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला ने आपकी क़ौम की वह गुफ़्तगू, जो आप से हुई, सुनी और उनके जवाबात सुने और एक फ़रिश्ते को जिस के मुताल्लिक़ पहाड़ों की ख़िदमत है, आप के पास भेजा है कि आप जो चाहें उसको हुक्म दें। इसके बाद उस फ़रिश्ते ने सलाम किया, और अर्ज़ किया कि जो इर्शाद हो, मैं उसकी तामील करूं ! अगर इर्शाद हो तो दोनों जानिब के पहाड़ों को मिला दूं जिससे यह सब दर्मियान में कुचल जायें या और जो सज़ा आप तज्वीज़ फ़र्मायें। हुज़ूर सल्ल० की रहीम व करीम ज़ात ने जवाब दिया कि मैं अल्लाह से इसकी उम्मीद रखता हूं कि अगर यह मुसलमान नहीं हुए तो इनकी औलादों में से ऐसे लोग पैदा हों जो अल्लाह की परिस्तिश[3] करें और उसकी इबादत करें।

फ़— यह हैं अख़्लाक़ उस करीम ज़ात के जिस के हम लोग नाम लेवा हैं कि हम ज़रा सी तकलीफ़ से किसी को मामूली गाली दे देने से ऐसे भड़क जाते हैं कि फिर उम्र भर उसका बदला नहीं उतरता ! ज़ुल्म पर ज़ुल्म करते रहते हैं और दावा करते हैं अपने मुहम्मदी होने का, नबी के पैरू बनने का। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इतनी सख़्त तकलीफ़ और मशक़्क़त उठाने के बावजूद न बद-दुआ फ़रमाते हैं, न कोई बदला लेते हैं।

---

1. कमज़ोरों, 2. मुंह बिगाड़ना, 3. पूजा, बंदगी

2. क़िस्सा हज़रत अनस बिन नज़र रज़ि० की शहादत का

हज़रत अनस बिन नज़र रज़ि० एक सहाबी थे जो बदर की लड़ाई में शरीक नहीं हो सके थे। उनको इस चीज़ का सदमा था, इस पर अपने नफ़्स को मलामत[1] करते थे कि इस्लाम की पहली अज़ीमुश्शान लड़ाई और तू उसमें शरीक न हो सका। उनकी तमन्ना थी कि कोई दूसरी लड़ाई हो तो हौसले पूरे करूं। इत्तिफ़ाक़ से उहद की लड़ाई पेश आ गई, जिसमें यह बड़ी बहादुरी और दिलेरी से शरीक हुए। उहद की लड़ाई में अव्वल-अव्वल तो मुसलमानों को फ़तह हुई, मगर आख़िर में एक ग़लती की वजह से मुसलमानों को शिकस्त हुई, वह ग़लती यह थी कि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुछ आदमियों को एक ख़ास जगह मुक़र्रर फ़र्माया था कि तुम लोग इतने में न कहूं, इस जगह से न हटना कि वहां से दुश्मन के हमला करने का अन्देशा था। जब मुसलमानों को शुरू में फ़तह हुई तो काफ़िरों को भागता हुआ देखकर यह लोग भी अपनी जगह से यह समझकर हट गए कि अब जंग ख़त्म हो चुकी, इसलिए भागते हुए काफ़िरों का पीछा किया जाये और ग़नीमत का माल हासिल किया जाये। इस जमाअत के सरदार ने मना भी किया कि हुज़ूर सल्ल० की मुमानअत थी, तुम यहां से न हटो, मगर उन लोगों ने यह समझ कर कि हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद सिर्फ़ लड़ाई के वक़्त के वास्ते था, वहां से हट कर मैदान में पहुंच गए। भागते हुए काफ़िरों ने उस जगह को ख़ाली देख कर उस तरफ़ से आकर हमला कर दिया। मुसलमान बे-फ़िक्र थे, इस अचानक बे-ख़बरी के हमले से मग़लूब[2] हो गये और दोनों तरफ़ से काफ़िरों के बीच में आ गए, जिस की वजह से इधर-उधर परेशान भाग रहे थे। हज़रत अनस रज़ि० ने देखा कि सामने से एक दूसरे सहाबी हज़रत साद बिन मआज़ रज़ि० आ रहे हैं। उनसे कहा कि ऐ साद ! कहां जा रहे हो ? ख़ुदा की क़सम! जन्नत की ख़ुश्बू उहद के पहाड़ से आ रही है, यह कह कर तलवार तो हाथ में थी ही, काफ़िरों के हुजूम[4] में घुस गए और जब तक शहीद नहीं हो गये, वापस नहीं हुए, शहादत के बाद उनके बदन को देखा गया तो छलनी हो गया था। अस्सी से ज़्यादा ज़ख़्म तीर और तलवारों के बदन पर थे। उन की बहन ने उंगलियों के पोरों से उन को पहचाना।

---

1. बुरा-भला कहना, 2. मग़लूब, 3. जिन पर काबू पा लिया जाये, 4. भीड़

फ़— जो लोग इख़्लास और सच्ची तलब के साथ अल्लाह के काम में लग जाते हैं, उनको दुनिया ही में जन्नत का मज़ा आने लगता है। यह हज़रत अनस रज़ि० ज़िंदगी ही में जन्नत की ख़ुश्बू सूंघ रहे थे। अगर इख़्लास आदमी में हो जावे तो दुनिया में भी जन्नत का मज़ा आने लगता है। मैंने एक मोतबर शख़्स से जो हज़रते अक़्दस मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहिब रायपुरी रहमतुल्लाहि अलैहि के मुख़्लिस ख़ादिम हैं, हज़रत का मक़ूला[1] सुना है कि 'जन्नत का मज़ा आ रहा है।' फ़ज़ाइले रमज़ान में इस क़िस्से को लिख चुका हूं।

3. सुलह हुदैबिया और अबूजंदल रज़ि० और अबूबसीर रज़ि० का क़िस्सा

सन् 06 हि० में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उमरा के इरादे से मक्का तशरीफ़ ले जा रहे थे। कुफ़्फ़ारे मक्का को इस की ख़बर हुई और वह इस ख़बर को अपनी ज़िल्लत समझे, इसलिए मुज़ाहमत[2] की और हुदैबिया में आपको रुकना पड़ा। जांनिसार सहाबा साथ थे, जो हुज़ूर सल्ल० पर जान क़ुर्बान करना फ़ख़्र समझते थे। लड़ने को तैयार हो गए। मगर हुज़ूर सल्ल० ने मक्का वालों की ख़ातिर से लड़ने का इरादा नहीं फ़र्माया और सुलह की कोशिश की और बावजूद सहाबा रज़ि० की लड़ाई पर मुस्तैदी और बहादुरी के हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुफ़्फ़ार की इस क़दर रियायत फ़र्मायी कि उन की हर शर्त को क़ुबूल फ़र्मा लिया। सहाबा रज़ि० को इस तरह दब कर सुलह करना बहुत ही नागवार था, मगर हुज़ूर सल्ल० के इर्शाद के सामने क्या हो सकता था कि जांनिसार थे और फ़र्मांबर्दार। इस लिए हज़रत उमर रज़ि० जैसे बहादुरों को दबना पड़ा। सुलह में जो शर्तें तय हुईं, इन शर्तों में एक शर्त यह थी कि काफ़िरों में जो शख़्स इस्लाम लाये और हिजरत करे, मुसलमान उस को मक्का वापिस कर दें और मुसलमानों में से ख़ुदा न ख़्वास्ता अगर कोई शख़्स मुर्तद[3] हो कर चला आये तो वह वापस न किया जाए। यह सुलहनामा अभी तक पूरा लिखा भी नहीं गया था कि हज़रत अबूजंदल एक सहाबी थे, जो इस्लाम लाने की वजह से तरह-तरह की तकलीफ़ें बर्दाश्त कर रहे थे और ज़ंजीरों में बंधे हुए थे, इसी हालत में गिरते-पड़ते मुसलमानों के लश्कर में इस उम्मीद पर पहुंचे

---

1. कथन, क़ौल, 2. रोक थाम, बाधा 3. इस्लाम से फिर जाने वाला

कि इन लोगों की हिमायत में जाकर इस मुसीबत से छुटकारा पाऊंगा। उनके बाप सुहैल ने जो इस सुलहनामां में कुफ़्फ़ार की तरफ़ से वकील थे, और उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे, फ़तह मक्का में मुसलमान हुए, उन्होंने साहबज़ादे के तमाचे मारे और वापस ले जाने पर इस्रार किया। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि अभी सुलहनामा मुरत्तब भी नहीं हुआ, इसलिए अभी पाबंदी किस बात की, मगर उन्होंने इस्रार किया। फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, एक आदमी मुझे माँगा ही दे दो, मगर वह लोग ज़िद पर थे, न माने। अबूजंदल रज़ि० ने मुसलमानों को पुकार कर फ़रियाद भी की कि मैं मुसलमान होकर आया और कितनी मुसीबतें उठा चुका, अब वापस किया जा रहा हूं। उस वक़्त मुसलमानों के दिलों पर जो गुज़र रही होगी, अल्लाह ही को मालूम है मगर हुज़ूर सल्ल० के इर्शाद से वापस हुए। हुज़ूर सल्ल० ने तसल्ली फ़र्मायी और सब्र करने का हुक्म दिया और फ़र्माया अंक़रीब हक़ तआला शानुहु तुम्हारे लिए रास्ता निकालेंगे। सुलहनामा के मुकम्मल हो जाने के बाद एक दूसरे सहाबी अबूबसीर भी मुसलमान हो कर मदीना मुनव्वरा पहुंचे। कुफ़्फ़ार ने उन को वापस बुलाने के लिए दो आदमी भेजे। हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हस्बे वायदा वापस फ़र्मा दिया। अबूबसीर रज़ि० ने अर्ज़ भी किया कि या रसूलल्लाह ! मैं मुसलमान होकर आया, आप मुझे कुफ़्फ़ार के पंजे में फिर भेजते हैं। आपने उनसे भी सब्र करने को इर्शाद फ़र्माया कि इन्शा अल्लाह अंक़रीब तुम्हारे लिए रास्ता खुलेगा। यह सहाबी इन दोनों काफ़िरों के साथ वापस हुए। रास्ते में इन में से एक से कहने लगे, यार ! तेरी यह तलवार तो बड़ी नफ़ीस मालूम होती है। शेख़ी बाज़ आदमी ज़रा सी बात में फूल ही जाता है, वह नियाम से निकाल कर कहने लगा कि हां, मैंने बहुत से लोगों पर इसका तज्रुबा किया। यह कह कर तलवार उनके हवाले कर दी, उन्होंने उसी पर उसका तर्ज़ुबा किया। दूसरा साथी यह देख कर कि एक को निमटा दिया, अब मेरा नम्बर है, भागा हुआ मदीना आया और हुज़ूर अक़्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि मेरा साथी मर चुका है, अब मेरा नम्बर है। उसके बाद अबूबसीर रज़ि० पहुंचे और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! आप अपना वायदा पूरा फ़र्मा चुके कि मुझे वापस कर दिया और मुझ से कोई अहद इन लोगों का नहीं है, जिस की ज़िम्मेदारी हो। वह मुझे मेरे दीन से हटाते हैं, इसलिए मैंने यह किया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि लड़ाई भड़काने वाला है, काश ! कोई इसका मुईन व मददगार होता, वह इस कलाम से समझ गये कि अब भी अगर कोई मेरी तलब में आयेगा, तो मैं वापस कर दिया जाऊंगा, इसलिए वह वहां से चल कर समुद्र के किनारे एक जगह आ पड़े। मक्का वालों को इस क़िस्से

का हाल मालूम हुआ तो अबूजंदल रज़ि० भी, जिनका क़िस्सा पहले गुज़रा, छुप कर वहीं पहुंच गये। इस तरह जो शख़्स मुसलमान होता, वह उन के साथ जा मिलता। चन्द रोज़ में यह एक मुख़्तसर सी जमाअत हो गई। जंगल में जहां न खाने का इन्तज़ाम, न वहां बाग़ात और आबादियाँ, इस लिये उन लोगों पर जो गुज़री होगी, वह तो अल्लाह ही को मालूम है। मगर जिन ज़ालिमों के ज़ुल्म से परेशान हो कर यह लोग भागते थे, उनका नातक़ा[1] बंद कर दिया। जो क़ाफ़िला उधर को जाता, उससे मुक़ाबला करते और लड़ते, हत्ता कि कुफ़्फ़ारे मक्का ने परेशान होकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आजिज़ी और मन्नत करके अल्लाह का और रिश्तेदारी का वास्ता देकर आदमी भेजा कि इस बेसिरी जमाअत को आप अपने पास बुला लें कि यह मुआहदा[2] में तो दाख़िल हो जाएं और हमारे लिए आने-जाने का रास्ता खुले। लिखा है कि हुज़ूर सल्ल० का इजाज़तनामा जब इन हज़रात के पास पहुंचा है तो अबूबसीर रज़ि० मरज़ुल मौत[3] में गिरफ़्तार थे। हुज़ूर सल्ल० का वाला नामा हाथ में था कि इसी हालत में इन्तिक़ाल फ़र्माया (रज़ियल्लाहु अन्हु व अर्ज़ाहु)[4]।

फ़— आदमी अगर अपने दीन पर पक्का हो, बशर्ते कि दीन भी सच्चा हो तो बड़ी से बड़ी ताक़त उसको नहीं हटा सकती और मुसलमान की मदद का तो अल्लाह का वायदा है, बशर्ते कि वह मुसलमान हो।

4. हज़रत बिलाल हब्शी रज़ि० का इस्लाम और मसाइब

हज़रत बिलाल हब्शी रज़ि० एक मशहूर सहाबी हैं, जो मस्जिदे नबुवी के हमेशा मुअज़्ज़िन[5] रहे। शुरू में एक काफ़िर के ग़ुलाम थे, इस्लाम ले आये जिसकी वजह से तरह-तरह की तकलीफ़ें दी जाती थीं। उमैय्या बिन ख़ल्फ़ जो मुसलमानों का सख़्त दुश्मन था, उनको सख़्त गर्मी में दोपहर के वक़्त तपती हुई रेत पर सीधा लिटा कर उनके सीने पर पत्थर की बड़ी चट्टान रख देता था ताकि वह हरकत न कर सकें। और कहता था कि या इस हाल में मर जाएं और ज़िन्दगी चाहें तो इस्लाम से हट जायें, मगर वह इस हालत में भी 'अहद-अहद' कहते थे यानी माबूद

1. रास्ता बन्द कर दिया, 2. समझौता, 3. मौत का मर्ज़ यानी जिस मर्ज़ में मौत हो जाए, 4. बुख़ारी व फ़त्ह 5. अज़ान देने वाले,

एक ही है। रात को ज़ंजीरों में बांध कर कोड़े लगाये जाते और अगले दिन उन ज़ख़्मों को गर्म ज़मीन पर डाल कर और ज़्यादा ज़ख़्मी किया जाता ताकि बेक़रार होकर इस्लाम से फिर जायें, या तड़प-तड़प कर मर जाएं। अज़ाब देने वाले उक्ता जाते, कभी अबू जहल का नम्बर आता कभी उमैय्या बिन ख़ल्फ़ का, कभी औरों का और हर शख़्स इसकी कोशिश करता कि तकलीफ़ देने में ज़ोर ख़त्म कर दे। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने इस हालत में देखा तो उनको ख़रीद कर आज़ाद फ़र्माया।

फ़— चूंकि अरब के बुतपरस्त अपने बुतों को भी माबूद कहते थे। इसलिए उनके मुक़ाबले में इस्लाम की तालीम तौहीद की थी, जिसकी वजह से हज़रत बिलाल रज़ि० की ज़बान पर 'एक ही एक' का विर्द था। यह ताल्लुक़ और इश्क़ की बात है। हम झूठी मुहब्बतों में देखते हैं कि जिससे मुहब्बत हो जाती है, उसका नाम लेने में लुत्फ़ आता है, बे-फ़ायदा उसको रटा जाता है, तो अल्लाह की मुहब्बत का क्या कहना जो दीन और दुनियां में दोनों जगह काम आने वाली है। यही वजह है कि हज़रत बिलाल रज़ि० को हर तरह से सताया जाता था, सख़्त से सख़्त तकलीफ़ें पहुंचाई जाती थीं, मक्का के लड़कों के हवाले कर दिया जाता कि वह उनको गली-कूचों में चक्कर देते फिरें और यह थे कि, 'एक ही एक है' की रट लगाते थे। इसी का यह सिला[1] मिला कि फिर हुज़ूर सल्ल० के दरबार में मुअज़्ज़िन बने और सफ़रे-हज़र में हमेशा अज़ान की ख़िदमत इनके सुपुर्द हुई। हुज़ूर सल्ल० के विसाल[2] के बाद मदीना-तय्यिबा में रहना और हुज़ूर सल्ल० की ख़ाली जगह देखना मुश्किल हो गया, इसलिए इरादा किया कि अपनी ज़िंदगी के जितने दिन हैं, जिहाद में गुज़ार दूं, इसलिए जिहाद में शिरकत की नीयत से चल दिए। एक अर्से तक मदीना मुनव्वरा लौट कर नहीं आये। एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल० की ख़्वाब में ज़ियारत की। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, बिलाल! यह क्या ज़ुल्म है हमारे पास कभी नहीं आते, तो आंख खुलने पर मदीना तैयबा हाज़िर हुए। हज़रत हसन व हुसैन रज़ि० ने अज़ान की फ़र्माइश की, नाइतों की दरख़्वास्त ऐसी नहीं थी कि इन्कार की गुंजाइश होती। अज़ान कहना शुरू की और मदीना में हुज़ूर सल्ल० के ज़माने की अज़ान कानों में पड़ कर कुहराम मच गया। औरतें तक रोती हुई घर से निकल पड़ीं। चंद रोज़ क़याम के बाद वापस हुए और सन् 20 हिजरी के क़रीब दमिश्क़ में विसाल हुआ।[3]

---

1. बदला, 2. इंतिक़ाल, 3. असदुलग़ाबा,

5 हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि० का इस्लाम

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि० मशहूर सहाबी हैं, जो बाद में बड़े ज़ाहिदों और बड़े उलमा में से हुए। हज़रत अली करमल्लाहु वज्हहू का इर्शाद है कि अबूज़र रज़ि० ऐसे इल्म को हासिल किए हुए हैं, जिससे लोग आजिज़ हैं, मगर उन्होंने इसको महफ़ूज़ कर रखा है। जब उनको हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबूवत की पहली ख़बर पहुंची तो उन्होंने अपने भाई को हालात की तहक़ीक़ के वास्ते मक्का भेजा कि जो शख़्स यह दावा करता है कि मेरे पास वही आती है और आसमान की ख़बरें आती हैं, उनके हालात मालूम करें और उसके कलाम को ग़ौर से सुनें। वह मक्का मुकर्रमा आये और हालात मालूम करने के बाद अपने भाई से जाकर कहा कि मैंने उनको अच्छी आदतों और उम्दा अख़्लाक़ का हुक्म करते देखा और एक ऐसा कलाम सुना, जो न शेर है न काहिनों का कलाम है। अबूज़र रज़ि० की इस मुजमल[1] बात से तशफ़्फ़ी[2] न हुई तो ख़ुद सामाने सफ़र किया और मक्का पहुंचे और सीधे मस्जिदे हराम में गये। हुज़ूर सल्ल० को पहचानते नहीं थे और किसी से पूछना मसलेहत के ख़िलाफ़ समझा। शाम तक इसी हाल में रहे। शाम को हज़रत अली करमल्लाहु वज्हहू ने देखा कि एक परदेसी मुसाफ़िर है, मुसाफ़िरों की, ग़रीबों की, परदेसियों की ख़बरगीरी, उनकी ज़रूरतों का पूरा करना, इन हज़रात की घुट्टी में पड़ा हुआ था, इसलिए उनको अपने घर ले आये मेज़बानी फ़र्मायी, लेकिन इसके पूछने की ज़रूरत न समझी कि कौन हो, क्यों आये हो, मुसाफ़िर ने भी कुछ ज़ाहिर न किया, सुबह को फिर, मस्जिद में आ गये और दिन भर इसी हाल में गुज़रा कि ख़ुद पता न चला और दर्याफ़्त किसी से किया नहीं, ग़ालिबन इसकी वजह यह होगी कि हुज़ूर सल्ल० के साथ दुश्मनी के क़िस्से बहुत मशहूर थे। आपको और आपके मिलने वालों को हर तरह की तकलीफ़ें दी जाती थीं। उनको ख़्याल हुआ हो कि सही हाल मालूम नहीं होगा। और बद-गुमानी की वजह से मुफ़्त की तक़लीफ़ अलाहिदा रही। दूसरे दिन शाम को भी हज़रत अली रज़ि० को ख़्याल हुआ कि परदेसी मुसाफ़िर है। ब-ज़ाहिर जिस ग़रज़ के लिए आया है, वह पूरी नहीं हुई, इसलिए फिर अपने घर ले गये और रात को खिलाया सुलाया, मगर पूछने की उस रात को भी नौबत न आयी। तीसरी रात को फिर यही सूरत हुई तो हज़रत अली रज़ि० ने दर्याफ़्त किया

---

1. जो सपष्ट न हो, 2. तस्कीन,

कि तुम किस काम से आये हो ? क्या ग़रज़ है? तो हज़रत अबूज़र रज़ि० ने अव्वल उनको क़सम और अहद व पैमां दिए इस बात के कि वह सही बतायें। इसके बाद अपनी ग़रज़ बतायी। हज़रत अली करमल्लाहु वज्हहु ने फ़र्माया कि वह बेशक अल्लाह के रसूल हैं और सुबह को जब मैं जाऊं तो तुम मेरे साथ चलना, मैं वहाँ तक पहुँचा दूंगा, लेकिन मुख़ालफ़त का ज़ोर है, इसलिए अगर रास्ते में मुझे कोई ऐसा शख़्स मिला जिससे मेरे साथ चलने की वजह से तुम पर कोई अन्देशा हो तो मैं पेशाब करने लगूंगा, या अपना जूता दुरुस्त करने लगूंगा, तुम सीधे चले चलना, मेरे साथ ठहरना नहीं, जिसकी वहज से तुम्हारा-मेरा साथ होना मालूम न हो। चुनांचे सुबह को हज़रत अली करमल्लाहु वज्हहु के पीछे-पीछे हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचे, वहां जाकर बात-चीत हुई। उसी वक़्त मुसलमान हो गये। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी तकलीफ़ के ख़्याल से फ़र्माया, अपने इस्लाम को अभी ज़ाहिर न करना। चुपके से अपनी क़ौम में चले जाओ, जब हमारा ग़लबा हो जाए, उस वक़्त चले आना। उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि इस कलाम-ए तौहीद को उन बे-ईमानों के बीच चिल्ला चिल्ला के पढ़ूंगा, चुनांचे उसी वक़्त मस्जिदे हराम में तशरीफ़ ले गए और बुलंद आवाज से-

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

अशहदु अल्लाइला ह इल्लल्लाह व अशहदुअन्न मुहम्मदर्ररसूलुल्लाह०

(मैं गवाही देता हूं कि एक अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं) पढ़ा, फिर क्या था, चारों तरफ़ से लोग उठे और इस क़दर मारा कि ज़ख़्मी कर दिया, मरने के क़रीब हो गये। हुज़ूर सल्ल० के चचा हज़रत अब्बास जो उस वक़्त तक मुसलमान भी नहीं हुए थे, उनके ऊपर बचाने के लिए लेट गये और लोगों से कहा क्या ज़ुल्म करते हो, यह शख़्स क़बीला ग़िफ़ार का है और यह क़बीला मुल्क शाम के रास्ते में पड़ता है, तुम्हारी तिजारत वग़ैरह सब मुल्क शाम के साथ है। अगर यह मर गया तो शाम का आना जाना बन्द हो जायेगा, इस पर उन सब लोगों को भी ख़्याल हुआ कि मुल्क शाम से सारी ज़रूरतें पूरी होती हैं, वहां का रास्ता बन्द हो जाना मुसीबत है, इसलिए उनको छोड़ दिया। दूसरे दिन फिर इसी तरह उन्होंने जाकर ब-आवाज़ बुलंद कलमा पढ़ा और लोग इस कलमे के सुनने को ताब न ला सकते थे, इसलिए उन पर टूट पड़े। दूसरे दिन भी हज़रत अब्बास रज़ि० ने इसी तरह उनको समझा कर हटाया कि तुम्हारी तिजारत का रास्ता बन्द हो जायेगा।

फ़— हुज़ूर सल्ल० के इस इर्शाद के बावजूद कि अपने इस्लाम को छुपाओ, उनका यह फ़ेल हक़ के इज़्हार का वलवला[1] और ग़ल्बा था कि जब यह दीन हक़ है तो किसी के बाप का क्या इजारा है, जिससे डर कर छुपाया जाये और हुज़ूर सल्ल० का मना फ़र्माना शफ़क़त की वजह से था कि मुम्किन है तकालीफ़ का तहम्मुल न[2] हो वरना हुज़ूर सल्ल० के हुक्म के ख़िलाफ़ सहाबा रज़ि० की यह मजाल ही न थी। चुनांचे इसका कुछ नमूना मुस्तक़िल बाब में आ रहा है। चूंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद ही दीन के फैलाने में हर क़िस्म की तकलीफ़ें बर्दाश्त फ़र्मा रहे थे। इसलिए हज़रत अबूज़र रज़ि० ने सहूलत पर अमल के बजाय हुज़ूर सल्ल० के इत्तिबाअ[3] को तर्जीह दी। यही एक चीज़ थी कि जिसकी वजह से हर क़िस्म की तरक़्क़ी दीनी और दुनियावी सहाबा किराम रज़ि० के क़दम चूम रही थी और हर मैदान उनके क़ब्ज़े में था कि जो भी शख़्स एक मर्तबा कलमा-ए-शहादत पढ़ कर इस्लाम के झंडे के नीचे आ जाता था, बड़ी से बड़ी कुव्वत भी उसको रोक न सकती थी और न बड़े से बड़ा ज़ुल्म उसको दीन की इशाअत से हटा सकता था।

6 हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० बिन अल-अरित की तक्लीफ़ें

हज़रत ख़ब्बाब बिन अल-अरित रज़ि० भी उन्हीं मुबारक हस्तियों में हैं जिन्होंने इम्तिहान के लिए अपने आप को पेश किया था और अल्लाह के रास्ते में सख़्त से सख़्त तक्लीफ़े बर्दाश्त कीं। शुरू ही में पांच-छः आदमियों के बाद मुसलमान हो गये थे, इसलिए बहुत ज़माने तक तक्लीफ़ें उठायीं। लोहे की ज़िरह (कवच) पहना कर इनको धूप में डाल दिया जाता जिस से गर्मी और तपिश की वजह से पसीनों पर पसीने बहते रहते थे। अक्सर औक़ात बिल्कुल सीधा गर्म रेत पर लिटा दिया जाता, जिसकी वजह से कमर का गोश्त तक गल कर गिर गया था। यह एक औरत के ग़ुलाम थे। उसको ख़बर पहुंची कि यह हुज़ूर अक़्दस सल्ल० से मिलते हैं, तो उसकी सज़ा में लोहे को गर्म करके उनके सर को उससे दाग़ देती थी। हज़रत उमर रज़ि० ने एक मर्तबा अर्से के बाद अपने ज़माना-ए-ख़िलाफ़त में हज़रत ख़ब्बाब से उनकी तक्लीफ़ों की तफ़्सील पूछी, जो उनको पहुंचाई गईं। उन्होंने अर्ज़ किया कि मेरी कमर देखें। हज़रत उमर रज़ि० ने कमर देख कर फ़र्माया कि ऐसी कमर किसी की देखी ही नहीं। उन्होंने अर्ज़ किया मुझे आग के अंगारों पर डाल कर घसीटा गया।

---

1. जोश-शौक़, 2. पैरवी, 3. बर्दाश्त, सहन

मेरी कमर की चर्बी और ख़ून से वह आग बुझी। इन हालात के बावजूद जब इस्लाम को तरक़्क़ी हुई और फ़ुतूहात[1] का दरवाज़ा खुला तो उस पर रोया करते थे कि ख़ुदा-न-ख़्वास्ता हमारी तकालीफ़ का बदला कहीं दुनियां ही में तो नहीं मिल गया। हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० कहते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़िलाफ़ आदत बहुत ही लम्बी नमाज़ पढ़ी। सहाबा रज़ि० ने उसके मुताल्लिक़ अर्ज़ किया, तो हुज़ूरे सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि यह रग़बत व डर की नमाज़ थी। मैंने इस में अल्लाह तआला से तीन दुआयें की थीं। दो उनमें से क़ुबूल हुई और एक को इन्कार फ़र्मा दिया। मैंने यह दुआ की कि मेरी सारी उम्मत क़हत से हिलाक न हो जाये, यह क़ुबूल हो गई। दूसरी यह कि उन पर कोई ऐसा दुश्मन मुसल्लत न हो जो उनको बिल्कुल मिटा दे। यह भी क़ुबूल हो गई। तीसरी यह दुआ की कि इनमें आपस में लड़ाई-झगड़े न हों यह बात मंज़ूर न हुई। हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० का इन्तिक़ाल 37 हिजरी में हुआ और कूफ़ा में सबसे पहले सहाबी यही दफ़न हुए। इनके इन्तिक़ाल के बाद हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहु का गुज़र इनकी क़ब्र पर हुआ तो इर्शाद फ़र्माया- 'अल्लाह ख़ब्बाब पर रहम फ़र्मायें अपनी रग़बत से मुसलमान हुआ और ख़ुशी से हिजरत की और जिहाद में ज़िन्दगी गुज़ार दी और मुसीबतें बर्दाश्त कीं। मुबारक है वह शख़्स जो क़यामत को याद रखे और हिसाब किताब की तैयारी करे और गुज़ारे के क़ाबिल माल पर क़नाअत[2] करे और अपने मौला को राज़ी कर लें।[3]

फ़— हक़ीक़त में मौला को राज़ी कर लेना, उन्हीं लोगों का हिस्सा था कि इनकी ज़िन्दगी का हर काम मौला ही की रज़ा के वास्ते था।

7. हज़रत अम्मार रज़ि० और उनके वालिदैन का ज़िक्र

हज़रत अम्मार रज़ि० और उनके मां-बाप को भी सख़्त से सख़्त तक्लीफ़ें पहुंचाई गयीं। मक्का की सख़्त गर्म और रेतीली ज़मीन में उनको अज़ाब दिया जाता और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उस तरफ़ गुज़र होता तो सब्र की

1. जीत-विजय, 2. बस जानना, काफ़ी समझना, 3. असदुलग़ाबा,

तल्क़ीन[1] फ़र्माते और जन्नत की बशारत फ़र्माते। आख़िर उनके वालिद हज़रत यासिर रज़ि० इसी हालते तकलीफ़ में वफ़ात पा गए कि ज़ालिमों ने मरने तक चैन न लेने दिया और उनकी वालिदा हज़रत सुमैय्या रज़ि० की शर्मगाह में अबूजहल मल्ऊन ने एक बरछा मारा, जिससे वह शहीद हो गई, मगर इस्लाम से न हटीं, हालांकि बूढ़ी थीं ज़ईफ़ थीं मगर उस बद-नसीब ने किसी चीज़ का भी ख़्याल नहीं किया। इस्लाम में सबसे पहली शाहदत इनकी है और इस्लाम में सब से पहली मस्जिद हज़रत अम्मार रज़ि० की बनाई हुई। जब हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिजरत फ़र्मा कर मदीना तशरीफ़ ले गये तो हज़रत अम्मार रज़ि० ने कहा कि हुज़ूर सल्ल० के लिए एक मकान साये का बनाना चाहिए, जिसमें तशरीफ़ रखा करें, दोपहर को आराम फ़र्मा लिया करें और नमाज़ भी साये में पढ़ सकें। तो क़ुबा में हज़रत अम्मार रज़ि० ने अव्वल पत्थर जमा किए और फिर मस्जिद बनाई। लड़ाई में निहायत जोश से शरीक होते थे। एक मर्तबा मज़े में आकर कहने लगे कि अब जाकर दोस्तों से मिलेंगे, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनकी जमाअत से मिलेंगे, इतने में प्यास लगी और पानी किसी से मांगा, उसने दूध सामने किया, उसको पिया और पीकर कहने लगे मैंने हुज़ूर सल्ल० से सुना कि तू दुनिया में सबसे आख़िरी चीज़ दूध पिएगा, इसके बाद शहीद हो गए। उस वक़्त चौरानवें वर्ष कि उम्र थी। बाज़ ने एक आध साल कम बतलाई है।[2]

8 हज़रत सुहैब रज़ि० का इस्लाम

हज़रत सुहैब रज़ि० भी हज़रत अम्मार रज़ि० ही के साथ मुसलमान हुए। नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत अरक़म रज़ि० सहाबी के मकान पर तशरीफ़ फ़र्मा थे कि यह दोनों हज़रात अलाहिदा-अलाहिदा हाज़िरे ख़िदमत हुए और मकान के दरवाज़े पर दोनों इत्तिफ़ाक़िया इकट्ठा हो गए। हर एक ने दूसरे को ग़रज़ मालूम की तो एक ही ग़रज़ यानी इस्लाम लाना और हुज़ूर सल्ल० के फ़ैज़ से मुस्तफ़ीद होना दोनों का मक़्सूद था। इस्लाम लाये और इस्लाम लाने के बाद जो उस ज़माने में इस क़लील और कमज़ोर जमाअत को पेश आना था, वह पेश आया

---

1. नसीहत, 2. असदुलग़ाबा, 3. तीर चलाने

और हर तरह सताये गये, तकलीफ़े पहुंचाई गयीं, आख़िर तंग आकर हिजरत का इरादा फ़र्माया तो काफ़िरों को यह चीज़ भी गवारा न थी कि यह लोग किसी दूसरी ही जगह जाकर आराम से ज़िन्दगी बसर कर लें, इसलिए जिस किसी की हिजरत का हाल मालूम होता था, उसको पकड़ने की कोशिश करते थे कि तकालीफ़ से निजात न पा सके। चुनांचे इनका भी पीछा किया गया और एक जमाअत इनको पकड़ने के लिए गई। उन्होंने अपना तरकश[1] संभाला जिसमें तीर थे और उन लोगों से कहा कि देखो तुम्हें मालूम है कि मैं तुम सब से ज़्यादा तीर अन्दाज़[2] हूं। जब तक एक तीर मेरे पास बाक़ी रहेगा, तुम लोग मुझ तक नहीं आ सकोगे और जब एक भी तीर न रहेगा, तो मैं अपनी तलवार से मुक़ाबला करूंगा, यहां तक कि तलवार भी मेरे हाथ में न रहे। इसके बाद तुमसे जो हो सके करना। इस लिए अगर तुम चाहो तो अपनी जान के बदले में अपने माल का पता बतला सकता हूं, जो मक्का में है और दो बांदियां भी हैं, वह सब तुम ले लो। इस पर वह लोग राज़ी हो गये और अपना माल देकर जान छुड़ाई। इसी बारे में आयत पाक-

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ بِالْعِبَادِ

व मिनन्नासि मंय्यशरी नफ़्स हुब्तिग़ा अ मर्ज़ातिल्ला हि वल्लाहु रऊफ़ुम बिल अिबादि० नाज़िल हुई।[3]

तर्जुमा– बाज़ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह की रज़ा के वास्ते अपनी जान को ख़रीद लेते हैं और अल्लाह तआला बन्दों पर मेहरबान हैं। हुज़ूर सल्ल० उस वक़्त क़ुबा में तशरीफ़ फ़र्मा थे, सूरत देख कर इर्शाद फ़र्माया कि नफ़ा की तिजारत की। सुहैब रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० उस वक़्त खजूर नोश फ़र्मा रहे थे और मेरी आंख दुख रही थी, मैं भी साथ खाने लगा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, कि आंख तो दुख रही है और खजूरें खाते हो। मैंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल० उस आंख की तरफ़ से खाता हूं जो तन्दुरुस्त है। हुज़ूर सल्ल० यह जवाब सुनकर हंस पड़े। हज़रत सुहैब रज़ि० बड़े ही ख़र्च करने वाले थे, हालांकि हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे फ़र्माया कि तुम फ़ुज़ूल ख़र्ची करते हो। उन्होंने अर्ज़ किया कि ना-हक़ कहीं ख़र्च नहीं करता। हज़रत उमर रज़ि० का जब विसाल होने लगा तो उन्हीं को जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने की वसीयत फ़र्माई थी।[4]

---

1. जिस में तीर रखे जाते हैं, 2. दुर्रेमंसूर, 3. असदुलग़ाबा, 4. मशहूर।

9 हज़रत उमर रज़ि० का क़िस्सा

हज़रत उमर रज़ि० जिनके पाक नाम पर आज मुसलमानों को फ़ख़्र है और जिनके जोशे ईमानी से आज चौदह सौ वर्ष बाद तक काफ़िरों के दिल में ख़ौफ़ है, इस्लाम लाने से क़ब्ल मुसलमानों के मुक़ाबले और तकलीफ़ पहुंचाने में भी मुमताज[1] थे, नबी अकरम सल्ल० के क़त्ल के दरपै[2] रहते थे। एक रोज़ कुफ़्फ़ार ने मश्वरा की कमेटी क़ायम की कि कोई है जो मुहम्मद सल्ल० को क़त्ल कर दे। उमर ने कहा कि मैं करूंगा। लोगों ने कहा कि बेशक तुम्हीं कर सकते हो। उमर रज़ि० तलवार लटकाये हुए उठे और चल दिए। इसी फ़िक्र में जा रहे थे कि एक साहब क़बीला ज़ोहरा के, जिनका नाम हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० है और बाज़ों ने और साहब लिखे हैं, मिले। उन्होंने पूछा उमर रज़ि० कहां जा रहे हो? कहने लगे कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के क़त्ल की फ़िक्र में हूं।' (नऊज़ुबिल्लाह) सअद ने कहा कि बनू हाशिम और बनू ज़ोहरा और बनू अब्दे मनाफ़ से कैसे मुत्मइन हो गये वह तुमको बदले में क़त्ल कर देंगे। इस जवाब पर बिगड़ गए और कहने लगे कि मालूम होता है तू भी बे-दीन (यानी मुसलमान) हो गया, ला पहले, तुझी को निमटा दूं। यह कह कर तलवार सौंत ली और हज़रत सअद रज़ि० ने भी यह कह कर कि हां मैं मुसलमान हो गया हूं, तलवार संभाल ली। दोनों तरफ़ से तलवार चलने को थी, कि हज़रत सअद रज़ि० ने कहा कि पहले अपने घर की तो ख़बर ले, तेरे बहन और बहनोई दोनों मुसलमान हो चुके हैं। यह सुनना था कि ग़ुस्से से भर गए और सीधे बहन के घर गए। वहाँ हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० जिन का ज़िक्र नं० 6 पर गुज़रा किवाड़ बन्द किए हुए दोनों मियां-बीवी को क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा रहे थे। हज़रत उमर रज़ि० ने किवाड़ खुलवाये। इनकी आवाज़ से हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० तो जल्दी से अन्दर छुप गए और वह सहीफ़ा[3] भी जल्दी में बाहर ही रह गया, जिस पर आयते क़ुरआनी लिखी हुई थीं। हमशीरा ने किवाड़ खोले। हज़रत उमर रज़ि० के हाथ में कोई चीज़ थी, जिसको बहन के सर पर मारा, जिससे सरसे ख़ून बहने लगा और कहा कि अपनी जान की दुश्मन, तू भी बद-दीन हो गई। इसके बाद घर में आये और पूछा कि क्या कर रहे थे और यह आवाज़ किस की थी। बहनोई ने कहा कि बात-चीत कर रहे थे, कहने लगे, 'क्या तुमने अपने दीन को छोड़ कर दूसरा दीन इख़्तियार कर लिया ? बहनोई ने कहा कि 'अगर दूसरा दीन हक़ हो तब !' यह सुनना

---

1. मशहूर, 2. तैयार, 3. किताब,

था कि उनकी दाढ़ी पकड़ कर खींची और बे-तहाशा टूट पड़े और ज़मीन पर गिरा कर ख़ूब मारा। बहन ने छुड़ाने की कोशिश की तो उनके मुंह पर इस ज़ोर से एक तमांचा मारा कि ख़ून निकल आया। वह भी आख़िर उमर ही की बहन थीं, कहने लगीं, कि उमर ! हमको इस वजह से मारा जाता है कि हम मुसलमान हो गए। बेशक हम मुसलमान हो गए हैं, जो तुझसे हो सके तू कर ले। इसके बाद हज़रत उमर की निगाह उस सहीफ़े पर पड़ी जो जल्दी में बहार रह गया था और ग़ुस्से का जोश भी इस मार-पीट से कम हो गया था और बहन के इस तरह से ख़ून में भर जाने से शर्म सी भी आ रही थी। कहने लगे कि अच्छा मुझे दिखलाओ, यह क्या है। बहन ने कहा कि तू नापाक है और इसको नापाक हाथ नहीं लगा सकते। हरचन्द इस्रार किया[1] मगर वह बे-वुज़ू और ग़ुस्ल के देने को तैयार न हुयीं। हज़रत उमर रज़ि० ने ग़ुस्ल किया और उसको लेकर पढ़ा, उसमें सूरः ताहा लिखी हुई थी। उसको पढ़ना शुरू किया और-

إِنَّنِي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِي وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي

इन्नी अनल्लाहुला इला ह इल्ला अना फ़अबुदनी व आकिमिस्सला त लिज़िक्री०

तक पढ़ा था कि हालात ही बदल गई। कहने लगे कि अच्छा मुझे भी मुहम्मद सल्ल० की ख़िदमत में ले चलो। यह अल्फ़ाज़ सुनकर हज़रत ख़ब्बाब अन्दर से निकले और कहा कि ए उमर ! तुम्हें ख़ुशख़बरी देता हूं कि कल शब पंच शंबा में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ मांगी थी कि या अल्लाह ! उमर और अबू जह्ल में जो तुझे ज़्यादा पसन्द हो, उससे इस्लाम को क़ुवतअता फ़र्मा। (ये दोनों क़ुवत में मशहूर थे) मालूम होता है कि हुज़ूर सल्ल० की दुआ तुम्हारे हक़ में क़ुबूल हो गई। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और जुमा की सुबह को मुसलमान हुए।[2] उनका मुसलमान होना था कि कुफ़्फ़ार के हौसले पस्त होना शुरू हो गए। मगर फिर भी यह निहायत मुख़्तसर जमाअत थी और वह सारा मक्का, बल्कि सारा अरब इसलिए और भी जोश पैदा हुआ और जलसे करके, मश्वरे करके, इन हज़रात को नापैद[3] करने की कोशिश होती थी और तरह-तरह की तद्बीरें की जातीं थीं, ताहम[4] इतना ज़रूर हुआ कि मुसलमान मक्का की मस्जिद में नमाज़ पढ़ने लगे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० फ़र्माते हैं कि उमर का इस्लाम लाना मुसलमानों की फ़तह थी और उनकी हिजरत मुसलमानों की मदद थी और उनकी ख़िलाफ़त रहमत थी।[5]

---

1. बहुत कहा, 2. ख़मीस, 3. ख़त्म करना, 4. फिर भी, 5. असदुलग़ाबा,

10. मुसलमानों की हब्शा की हिजरत और शुअब बिन अबी तालिब में क़ैद होना

मुसलमानों को और उनके सरदार फ़ख़्रे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब कुफ़्फ़ार से तकालीफ़ पहुंचती ही रहीं और आये दिन उनके बजाए कमी के इज़ाफ़ा ही होता रहा तो हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ि० को इसकी इजाज़त फ़र्मा दी कि वह यहां से किसी दूसरी जगह चले जाऐं, तो बहुत से हज़रात ने हब्शा की हिजरत[1] फ़र्माई। हब्शा के बादशाह अगरचे नसरानी[2] थे और उस वक़्त तक मुसलमान न हुए थे मगर उनके रहम दिल और मुंसिफ़ मिज़ाज[3] होने की शोहरत थी। चुनांचे नुबूवत के पाँचवे वर्ष रजब के महीने में पहली जमाअत के ग्यारह या बारह मर्द और चार या पांच औरतों ने हब्शा की तरफ़ हिजरत की। मक्का वालों ने उनका पीछा भी किया कि यह न जा सकें, मगर यह लोग हाथ न आये, वहां पहुंच कर उनको यह ख़बर मिली कि मक्का वाले सब मुसलमान हो गये और इस्लाम का ग़ल्बा हो गया। इस ख़बर से यह हज़रात बहुत ख़ुश हुए और अपने वतन वापस आ गए लेकिन मक्का मुकर्रमा के क़रीब पहुंच कर मालूम हुआ कि यह ख़बर ग़लत थी और मक्का वाले उसी तरह, बल्कि उससे भी ज़्यादा दुश्मनी और तक्लीफ़ें पहुंचाने में मसरूफ़ हैं, तो बड़ी दिक़्क़त हुई। इनमें से बाज़ हज़रात वहीं से वापस हो गए और बाज़ किसी की पनाह लेकर मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हुए। यह हब्शा की पहली हिजरत कहलाता है। इसके बाद एक बड़ी जमाअत ने जो 83 मर्द और 18 औरतें बतलाई जाती हैं, मुतफ़र्रिक़[4] तौर पर हिजरत की और यह हब्शा की दूसरी हिजरत कहलाती है। बाज़ सहाबा रज़ि० ने दोनों हिजरतें कीं और बाज़ ने एक। कुफ़्फ़ार ने जब यह देखा कि यह लोग हब्शा में चैन की ज़िन्दगी बसर करने लगे तो उनको और भी ग़ुस्सा आया और बहुत से तुहफ़े-तहायफ़ ले कर नजाशी शाह हब्शा के पास एक वफ़्द भेजा जो बादशाह के लिये बहुत से तोहफ़े ले कर गया और उसके ख़वास और पादरियों के लिए भी बहुत से हदिए लेकर गया जाकर अव्वल पादरियों से और हुक्काम से मिला और हदिए देकर उनसे बादशाह के यहां अपनी सिफ़ारिश का वायदा लिया और फिर बादशाह की ख़िदमत में यह वफ़्द हाज़िर हुआ। अव्वल बादशाह को सज्दा किया, फिर तोहफ़े पेश करके अपनी दर्ख़ास्त पेश की और रिश्वतख़ोर हुक्काम ने ताईद की। उन्होंने कहा कि ऐ बादशाह ! हमारी क़ौम के

---

1. ख़ुदा के लिए अपना वतन माल दौलत छोड़ कर किसी दूसरी जगह चले जाना, 2. ईसाई, 3. इंसाफ़ पसंद करने वाला 4. अलग-अलग होकर,

चंद बेवक़ूफ़ लड़के अपने क़दीमी दीन को छोड़कर एक नये दीन में दाख़िल हो गए, जिसको न हम जानते हैं, न आप जानते हैं और आपके मुल्क में आकर रहने लगे। हमको शुरफ़ा-ए-मक्का ने और उन लोगों के बाप-चाचा और रिश्तेदारों ने भेजा है कि उनको वापस लाएं। आप उनको हमारे सुपुर्द कर दें। बादशाह ने कहा कि जिन लोगों ने मेरी पनाह पकड़ी है, बग़ैर तहक़ीक़ उनको हवाले नहीं कर सकता। अव्वल उनसे बुलाकर तहक़ीक़ कर लूं, अगर यह सही हुआ तो हवाले कर दूंगा, चुनांचे मुसलमानों को बुलाया गया। मुसलमान अव्वल बहुत परेशान हुए क्या करें, मगर अल्लाह के फ़ज़्ल ने मदद की और हिम्मत से यह तय किया कि चलना चाहिए और साफ़ बात कहना चाहिए। बादशाह के यहां पहुंच कर सलाम किया। किसी ने एतराज़ किया कि तुमने बादशाह को आदाबे शाही के मुवाफ़िक़ सज्दा नहीं किया। उन लोगों ने कहा कि हमको हमारे नबी ने अल्लाह के सिवा किसी को सज्दा करने की इजाज़त नहीं दी। इसके बाद बादशाह ने उनसे हालात दर्याफ़्त किए। हज़रत जाफ़र रज़ि० आगे बढ़े और फ़र्माया कि हम लोग जहालत में पड़े हुए थे, न अल्लाह को जानते थे, न उसके रसूलों से वाक़िफ़[1] थे, पत्थरों को पूजते थे, मुर्दार खाते थे, बुरे काम करते थे, रिश्ते-नातों को तोड़ते थे, हम में का कवी[2] ज़ईफ़[3] को हलाक कर देता था। हम इसी हाल में थे कि अल्लाह ने अपना एक रसूल भेजा, जिसके नसब को, उसकी सच्चाई को, उसकी अमानतदारी को, परहेज़गारी को हम ख़ूब जानते हैं। उसने हम को एक अल्लाह वह्दहु ला शरी क लहू की इबादत की तरफ़ बुलाया और पत्थरों और बुतों के पूजने से मना फ़र्माया, उसने हमको अच्छे काम करने का हुक्म दिया, बुरे कामों से मना किया, उसने हमको सच बोलने का हुक्म दिया, अमानतदारी का हुक्म किया, सिला रहमी[4] का हुक्म किया, पड़ोसी के साथ अच्छा बर्ताव करने का हुक्म दिया, नमाज़, रोज़ा, सद्क़ा-ख़ैरात का हुक्म दिया और अच्छे अख़्लाक़ तालीम किये, ज़िना, बद-कारी, झूठ बोलना, यतीम का माल खाना, किसी पर तोहमत लगाना और इस क़िस्म के बुरे आमाल से मना फ़रमाया। हमको क़ुरआने पाक की तालीम दी, हम उस पर ईमान लाये और उसके फ़र्मान की तामील की, जिस पर हमारी क़ौम हमारी दुश्मन हो गई और हमको हर तरह सताया। हम लोग मजबूर होकर तुम्हारी पनाह में अपने नबी के इर्शाद से आये हैं। बादशाह ने कहा अच्छा जो क़ुरआन तुम्हारे नबी लेकर आये हैं, वह कुछ मुझे सुनाओ। हज़रत जाफ़र रज़ि० ने सूर: मरयम की अव्वल की आयतें पढ़ीं, जिसको सुनकर बादशाह भी रो दिया और उसके पादरी भी,

---

1. जानकार, 2. मज़बूत, 3. कमज़ोर, 4. रिश्ते जोड़ना,

जो कसरत से मौजूद थे, सब के सब इस कदर रोये कि दाढ़ियां तर हो गईं। इसके बाद बादशाह ने कहा कि ख़ुदा की क़सम ! यह कलाम और जो क़लाम हज़रत मूसा अलै० लेकर आये थे, एक ही नूर से निकले हैं और उन लोगों से साफ़ इन्कार कर दिया कि मैं इनको तुम्हारे हवाले नहीं कर सकता। वह लोग बड़े परेशान हुए कि बड़ी ज़िल्लत उठानी पड़ी। आपस में सलाह करके एक शख़्स ने कहा कि कल मैं ऐसी तदबीर करूंगा कि बादशाह उनकी जड़ ही काट दे। साथियों ने कहा भी कि ऐसा नहीं चाहिए। यह लोग अगरचे मुसलमान हो गये, मगर फिर भी रिश्तेदार हैं, मगर उसने न माना। दूसरे दिन फिर बादशाह के पास गए और जाकर कहा कि यह लोग हज़रत अलै० ईसा की शान में गुस्ताख़ी करते हैं, उनको अल्लाह का बेटा नहीं मानते। बादशाह ने फिर मुसलमानों को बुलाया। सहाबा रज़ि० फ़र्माते हैं कि दूसरे दिन के बुलाने से हमें और भी ज़्यादा परेशानी हुई। बहरहाल गए, बादशाह ने पूछा कि तुम हज़रत ईसा के बारे में क्या कहते हो ?' उन्होंने कहा, वही कहते हैं जो हमारे नबी पर उनकी शान में नाज़िल हुआ कि वह अल्लाह के बन्दे हैं, उसके रसूल हैं, उसकी रूह हैं और उसके कलमा हैं, जिसको ख़ुदा ने कुंवारी और पाक मरयम की तरफ़ डाला। नजाशी ने कहा कि हज़रत ईसा भी इसके सिवा कुछ नहीं फ़र्माते। पादरी लोग आपस में कुछ चख़-चख़ करने लगे। नजाशी ने कहा तुम जो चाहो कहो। इसके बाद नजाशी ने उनके तोहफ़े वापस कर दिए और मुसलमानों से कहा, तुम अम्न से रहो, जो शख़्स इनको सतायेगा, उस को तावान देना[1] पड़ेगा और इसका एलान भी कर दिया कि जो शख़्स इनको सतायेगा, उनको तावान देना होगा[2] इसकी वजह से वहां के मुसलमानों का इक़राम और भी ज़्यादा होने लगा और इस वफ़्द को ज़िल्लत से वापस आना पड़ा। तो फिर कुफ़्फ़ारे मक्का का जितना भी ग़ुस्सा जोश करता ज़ाहिर है। इसके साथ ही हज़रत उमर रज़ि० के इस्लाम लाने ने उनको और भी जला रखा था और हर वक़्त इस फ़िक्र में रहते थे कि इन लोगों का उनसे मिलना जुलना बन्द हो जाये और इस्लाम का चिराग़ किसी तरह बुझे। इसलिए सरदाराने मक्का की एक बड़ी जमाअत ने आपस में मश्वरा किया कि अब खुल्लम खुल्ला मुहम्मद सल्ल० को क़त्ल कर दिया जाये लेकिन क़त्ल कर देना भी आसान काम न था, इसलिए कि बनूहाशिम भी बड़े जत्थे और ऊंचे तब्क़े के लोग शुमार होते थे। वह अगरचे अक्सर मुसलमान नहीं हुए थे। लेकिन जो मुसलमान नहीं थे। वह भी हुज़ूर सल्ल० के क़त्ल हो जाने पर आमादा नहीं थे इसलिए इन सब कुफ़्फ़ार

---

1. जुर्माना, 2. ख़मीस

ने मिलकर एक मुआहदा[1] किया कि सारे बनू हाशिम और बनू अल-मुत्तलिब का बाईकाट किया जाये, न उनको कोई शख़्स अपने पास बैठने दे, न उनसे कोई ख़रीद व फ़रोख़्त करे, न बात-चीत करे, न उनके घर जाये, न उनको अपने घर में आने दे और उस वक़्त तक सुलह न की जाये जब तक कि वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल के लिये हवाले न कर दें। यह मुआहदा ज़बानी ही गुफ़्तगू पर ख़त्म नहीं हुआ, बल्कि यकुम मुहर्रम सन् 07 न० को एक मुआहदा तहरीरी लिखकर बैतुल्लाह में लटकाया गया ताकि हर शख़्स उसका एहतराम करे और उसको पूरा करने की कोशिश करे और इस मुआहदा की वजह से तीन वर्ष तक यह सब हज़रात दो पहाड़ों के दर्मियान एक घाटी में नज़रबन्द रहे कि न कोई उनसे मिल सकता था, न यह किसी से मिल सकते थे, न मक्का के किसी आदमी से कोई कोई चीज़ ख़रीद सकते थे; न बाहर के आने वाले किसी ताजिर से मिल सकते थे। अगर कोई शख़्स बाहर निकलता तो पीटा जाता और किसी से ज़रूरत का इज़्हार करता तो साफ़ जवाब पाता। मामूली सा सामान, ग़ल्ला वग़ैरह जो उन लोगों के पास था, वह कहां तक काम देता। आख़िर फ़ाक़ों पर फ़ाक़े[2] गुज़रने लगे और औरतें और बच्चे भूख़ से बेताब होकर रोते और चिल्लाते और उनके अइज़्ज़ा[3] को अपनी भूख और तकालीफ़ से ज़्यादा इन बच्चों की तकालीफ़ सतातीं। आख़िर तीन वर्ष के बाद अल्लाह के फ़ज़्ल से वह सहीफ़ा[4] दीमक की नज़्र हुआ और इन हज़रात की यह मुसीबत दूर हुई। तीन वर्ष का ज़माना ऐसे सख़्त बाईकाट और नज़रबन्दी में गुज़रा और ऐसी हालत में इन हज़रात पर क्या-क्या मशक़्क़तें गुज़री होंगी वह ज़ाहिर हैं, लेकिन इसके बावजूद सहाबा किराम रज़ि० तआला अलैहिम अज्मईन निहायत ही साबित क़दमी[5] के साथ अपने दीन पर जमे रहे, बल्कि उसकी इशाअत[6] फ़र्माते रहे।

फ़— यह तकालीफ़ और मशक़्क़तें उन लोगों ने उठाई हैं, जिनके आज हम नाम लेवा कहलाते हैं और अपने को उनका मत्तबअ[7] बतलाते और समझते हैं, हम लोग तरक़्क़ी के बाब में सहाबा किराम जैसी तरक़्क़ियों के ख़्वाब देखते हैं, लेकिन किसी वक़्त ज़रा ग़ौर कर के यह भी सोचना चाहिए कि इन हज़रात ने क़ुर्बानियाँ कितनी फ़र्मायीं और हमने दीन की ख़ातिर, इस्लाम की ख़ातिर, मज़हब की ख़ातिर क्या किया। कामयाबी हमेशा कोशिश और सई के मुनासिब होती है। हम लोग चाहते हैं कि ऐश व आराम, बद-दीनी और दुनियां-तलबी में कफ़िरों के दोश बदोश[8] चलें

---

1. समझौता, 2. उपवास, 3. रिश्तेदार, 4. किताब, लिखा हुआ समझाता, 5. पैरों के के जमाव 6. फलाना 7. पैरवी करने वाले, 8. कंधे से कंधा मिलाकर।

और इस्लामी तरक़्क़ी हमारे साथ हो यह कैसे हो सकता है-

तरसम न रसी बकअ़बा ऐ आराबी
कीं रह कि तू मीरवी ब तुर्किस्तानस्त

तर्जुमा— मुझे ख़ौफ़ है ओ बदवी ! कि तू काबा को नहीं पहुंच सकता, इसलिए कि यह रास्ता काबा की दूसरी जानिब तुर्किस्तान की तरफ़ जाता है।

दूसरा बाब

अल्लाह जल्लेजलालुहु व अम्म नवालुहु का ख़ौफ़ और डर

दीन के साथ उस जांफ़शानी के बावजूद, जिसके क़िस्से अभी गुज़रे और दीन के लिए अपनी जान व माल, आबरू सब कुछ फ़ना कर देने के बाद जिसका नमूना अभी आप देख चुके हैं, अल्लाह जल्ल शनुहू का ख़ौफ़ और डर, जिस क़दर इन हज़रात में पाया जाता था, अल्लाह करे कि उसका कुछ शम्मा[1] हम सियहकारों को भी नसीब हो जाये। मिसाल के तौर पर इसके भी चन्द क़िस्से लिखे जाते हैं-

1. आंधी के वक़्त हुज़ूर सल्ल० का तरीक़ा

हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि जब अब्र, आंधी वग़ैरह होती थी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहरा-ए-अन्वर पर उस का असर ज़ाहिर होता था और चेहरे का रंग फ़क़[2] हो जाता था और ख़ौफ़ की वजह से कभी अन्दर तशरीफ़ ले जाते थे और कभी बाहर तशरीफ़ लाते थे और यह दुआ पढ़ते रहते-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا فِيْهَا
وَخَيْرَ مَا اُرْسِلَتْ بِهٖ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا وَشَرِّ مَا اُرْسِلَتْ بِهٖ

---

1. हिस्सा, 2. फीका, 3. खुशी,

अल्लाहुम्मः इन्नी अस्अलुक खैरहा व खैर मा फीहा व खैर माउर्सिलत बिहि व अऊज़ुबि क मिन शरिमा फ़ीहा व शरिमा उरसिलत बिही०

तर्जुमा– 'या अल्लाह इस हवा की भलाई चाहता हूं और जो इस हवा में हो, बारिश वग़ैरः उसकी भलाई चाहता हूँ और जिस ग़रज़ से यह भेजी गई उसकी भलाई चाहता हूं या अल्लाह ! मैं इस हवा की बुराई से पनाह मांगता हूं और जो चीज़ इसमे है और जिस ग़रज़ से यह भेजी गई, उसकी बुराई से पनाह मांगता हूं।'

और जब बारिश शुरू हो जाती तो चेहरे पर इम्बिसात शुरू[1] होता। मैंने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! सब लोग जब अब्र देखते हैं तो ख़ुश होते हैं कि बारिश के आसार मालूम हुए, मगर आप सल्ल० पर एक गरानी महसूस होती है। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, आइशा मुझे इसका क्या इत्मीनान है कि इसमें अज़ाब न हो। क़ौमे-आद को हवा के साथ ही अज़ाब दिया गया और वह अब्र को देख कर ख़ुश हुए थे कि इस अब्र में हमारे लिए पानी बरसाया जायेगा, हालाँकि इसमें अज़ाब[2] था। अल्लाह जल्ल शानुहु का इर्शाद है-

فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ

'फलम्मा रऔहु आरिज़म् मुस्त क़िबल: औदियतिहिम'

तर्जुमा– उन लोगों ने (यानी क़ौमे-आद ने) जब उस बादल को अपनी वादियों के मुक़ाबिले आते देखा तो कहने लगे, यह बादल तो हम पर बारिश बरसाने वाला है (इर्शाद ख़ुदावन्दी हुआ कि), नहीं, बरसाने वाला नहीं है। बल्कि यह वही (अज़ाब है) जिसकी तुम जल्दी मचाते थे (और नबी सल्ल० से कहते थे कि अगर तू सच्चा है तो हम पर अज़ाब ला), एक आंधी है, जिसमें दर्दनाक अज़ाब, है जो हर चीज़ को अपने रब के हुक्म से हलाक कर देगी। चुनांचे वह लोग आंधी की वजह से ऐसी तबाह हो गए कि बजुज़ उनके मकानात के कुछ न दिखलाई देता था और हम मुजरिमों को इसी तरह सज़ा दिया करते हैं।[3]

फ़– यह अल्लाह के ख़ौफ़ का हाल उसी पाक ज़ात का है जिसका सय्यिदुल अव्वलीन वल आख़िरीन[4] होना ख़ुद उसी के इर्शाद से सबको मालूम है कि ख़ुदा कलामे पाक में यह इर्शाद है कि अल्लाह तआला ऐसा न करेंगे कि उनमें आपके होते हुए उनको अज़ाब दें। इस वायदा-ए-ख़ुदावन्दी के बावजूद फिर हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु

---

1. ख़ुशी, 2. बयानुल क़ुरआन, 3. अगलों-पिछलों के सरदार,

अलैहि व सल्लम के ख़ौफ़े इलाही का यह हाल था कि अब्र और आंधी को देखकर पहली क़ौमों के अज़ाब याद आ जाते थे, उसी के साथ एक निगाह अपने हाल पर भी करना है कि हम लोग हर वक़्त गुनाहों में मुब्तला रहते हैं और ज़लज़लों और दूसरी क़िस्म के अज़ाबों को देखकर बजाए इस से मुतास्सिर[1] होने के, तौबा, इस्तिग़फ़ार नमाज़ वग़ैरह में मशग़ूल होने के, दूसरी क़िस्म-क़िस्म की लग्व तहक़ीक़ात[2] में पड़ जाते हैं।

2. अंधेरे में हज़रत अनस रज़ि० का फ़ेल

नज़्र बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत अनस रज़ि० की ज़िन्दगी में एक मर्तबा दिन में अंधेरा छा गया। मैं हज़रत अनस रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल० के सामने में भी इस क़िस्म की चीज़ें पेश आती थी। उन्होंने फ़र्माया ख़ुदा की पनाह, हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में तो ज़रा सी हवा तेज़ हो जाती थी तो हम लोग क़यामत के आ जाने के ख़ौफ़ से मस्जिदों में दौड़ जाते थे। एक दूसरे सहाबी अबुद्दर्दा रज़ि० फ़र्माते हैं कि हुज़ूर सल्ल० का मामूल था कि जब आंधी चलती तो हुज़ूर सल्ल० घबराये हुए मस्जिद में तशरीफ़ ले जाते।[3]

फ़ा०— आज किसी बड़े से बड़े हादसा-मुसीबत-बला में भी मस्जिदकिसी को याद आती है, अवाम को छोड़ कर ख़वास में भी इसका एहतमाम, कुछ पाया जाता है? आप ख़ुद ही इसका जवाब अपने दिल में सोचें।

3. सूरज ग्रहण में हुज़ूर सल्ल० का अमल

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में सूरज ग्रहण हो गया। सहाबा रज़ि० को फ़िक्र हुई कि इस मौक़े पर हुज़ूर सल्ल० क्या अमल फ़र्मायेंगे, क्या करेंगे, इसकी तहक़ीक़ की जाए। जो हज़रात अपने-अपने काम में मशग़ूल थे छोड़ कर दौड़े हुए आये, नव उम्र लड़के जो तीर अन्दाज़ी की मश्क़ कर रहे थे उनको छोड़कर लपके हुए आये ताकि यह देखें कि हुज़ूर सल्ल० इस वक़्त क्या करेंगे। नबी-ए-अक़रम

---

1. असर लेने को, 2. ग़लत खोजों में, 3. जमउल फ़वाइद,

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दो रकअत कुसूफ[1] की नमाज पढ़ी, जो इतनी लम्बी थी कि लोग गश खाकर गिरने लगे। नमाज़ में नबी-ए-अकरम सल्ल० रोते थे और फ़मोते थे, ऐ रब ! क्या आपने मुझ से इसका वायदा नहीं फ़र्मा रखा कि आप इन लोगों को मेरे मौजूद होते हुए अज़ाब न फ़र्मायेंगे, और ऐसी हालत में भी अज़ाब न फ़र्मायेंगे कि वह लोग इस्तिग़फ़ार करते रहें। सूरः अन्फ़ाल में अल्लाह जल्ले शानुहू ने इसका वायदा फ़र्मा रखा है-

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ)

वा मा कानल्लाहु, लियु, अज़्ज़िबहुम व अन्त फ़ीहिम वमा कानल्लाहु मुअज़्ज़िबहुम व हुम यस्तग़फ़िरून०

फिर हुज़ूर सल्ल० ने लोगों को नसीहत फ़र्मायी कि जब कभी ऐसा मौक़ा हो और आफ़्ताब या चांद ग्रहण हो जाये तो घबराकर नमाज़ की तरफ़ मुतबज्जह हो जाया करो। मैं जो आख़िरत के हालात देखता हू अगर तुम को मालूम हो जायें तो हंसना कम कर दो और रोने की कसरत कर दो। जब कभी ऐसी हालत पेश आये, नमाज़ पढ़ो, दुआ मांगो सदक़ा करो।

4. हुज़ूर सल्ल० का तमाम रात रोते रहना

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा तमाम रात रोते रहे और सुबह तक नमाज़ में यह आयत तिलावत फ़र्माते रहे-

اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ

इन तुअज़्ज़िबहुम फ़इन्नहुम इबादु क व इन तग़फ़िर लहुम फ़इन्नक अन्तल् अज़ीज़ुल् हकीम०

'ए अल्लाह ! अगर आप उनको सज़ा दें, जब भी आप मुख़्तार हैं कि यह आपके बन्दे हैं और आप इनके मालिक, और मालिक को हक़ है कि बन्दों को जरायम पर सज़ा दे और अगर आप उनको माफ़ फ़र्मा दें तो भी आप मुख़्तार हैं कि आप

---

1. सूरज ग्रहण,

ज़बर्दस्त क़ुदरत वाले हैं तो माफ़ी पर भी क़ुदरत है और हिकमत वाले हैं तो माफ़ी भी हिकमत के मुवाफ़िक़ होगी।'[1] इमामे आज़म रज़ि० के मुताल्लिक़ भी नक़ल किया गया है कि वह एक शब तमाम रात

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ

वम्ताज़ुल यौ म अय्युहल मुज्रिमून०

पढ़ते रहे और रोते रहे। मतलब आयते शरीफ़ा का यह है कि क़यामत के दिन मुज्रिमों को हुक्म होगा कि दुनिया में तो सब मिले-जुले रहे मगर आज मुजरिम लोग सब अलग हो जाएं और ग़ैर मुजरिम अलाहिदा। इस हुक्म को सुनकर जितना भी रोया जाए थोड़ा है कि न मालूम अपना शुमार मुज्रिमों में होगा या फ़र्माबरदारों में।

5. हज़रत अबू बक्र रज़ि० पर अल्लाह का डर

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि जो बइज्मा अह्ले सुन्नत[2] अम्बिया के अलावा तमाम दुनिया के आदमियों से अफ़ज़ल हैं और उनका जन्नती होना यक़ीनी है कि ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको जन्नती होने की बशारत दी, बल्कि जन्नतियों की एक जमाअत का सरदार बताया और जन्नत के सब दरवाज़ों से उनकी पुकार और बुलावे की ख़ुशख़बरी दी और यह भी फ़र्माया कि मेरी उम्मत में सबसे पहले अबूबक्र रज़ि० जन्नत में दाख़िल होंगे, इस सब के बाववजूद फ़र्माया करते कि काश ! मैं कोई दरख़्त होता जो काट दिया जाता। कभी फ़र्माते काश ! मैं कोई घास होता कि जानवर उसको खा लेते। कभी फ़र्माते काश। मैं किसी मोमिन के बदन का बाल होता। एक मर्तबा एक बाग़ में तशरीफ़ ले गए और एक जानवर को बैठा हुआ देख कर ठंडी सांस भरी और फ़र्माया कि तू किस क़दर लुत्फ़ में है कि खाता है, पीता है, दरख़्तों के साए में फिरता है और आख़िरत में तुझ पर कोई हिसाब किताब नहीं, काश अबूबक्र भी तुझ जैसा होता।[3]

रबीआ अस्लमी रज़ि० कहते हैं कि एक मर्तबा किसी बात पर मुझमें और हज़रत अबूबक्र रज़ि० में कुछ बात बढ़ गई और उन्होंने मुझे कोई सख़्त लफ़्ज़ कह

---

1. बयानुल क़ुरआन, 2. तमाम सुन्नत वाले जिस पर एक राय हैं, 3. तारीख़ुलख़ुलफ़ा,

दिया जो मुझे नागवार गुज़रा। फ़ौरन उनको ख़्याल हुआ, मुझसे फ़र्माया कि तू भी मुझे कह दे ताकि बदला हो जाये। मैंने कहने से इन्कार कर दिया तो उन्होंने फ़र्माया कि या तो कह लो वरना मैं हुज़ूर सल्ल० से जाकर अर्ज़ करूंगा। मैंने इस पर भी जवाबी लफ़्ज़ कहने से इन्कार किया। वह तो उठ कर चले गये। बनू असलम के कुछ लोग आये कहने लगे कि यह भी अच्छी बात है कि ख़ुद ही ज़्यादती की और ख़ुद ही उलटी हुज़ूर सल्ल० से शिकायत करें। मैंने कहा तुम जानते भी हो यह कौन हैं। यह अबूबक्र सिद्दीक़ हैं, अगर यह ख़फ़ा हो गए तो अल्लाह का लाडला रसूल सल्ल० मुझसे ख़फ़ा हो जाएगा और उसकी ख़फ़गी[1] से अल्लाह नाराज़ हो जायेंगे तो रबिआ की हलाकत में क्या तरद्दुद है। इसके बाद मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और क़िस्सा अर्ज़ किया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि ठीक है, तुझे जवाब में और बदले में कहना नहीं चाहिए अलबत्ता इसके बदले में यों कह कि ऐ अबूबक्र ! अल्लाह तुमहें माफ़ फर्मा दें।

फ़– यह है अल्लाह का ख़ौफ़ कि एक मामूली से कलमे में, हज़रत अबू बक्र रज़ि० को बदले का इस क़दर फ़िक्र और एहतमाम हुआ कि अव्वल ख़ुद दर्ख़ास्त की और फिर हुज़ूर सल्ल० के वास्ते से उसका इरादा फ़र्माया कि रबीआ बदला ले लें। आज हम सैकड़ों बातें एक दूसरे को कह देते हैं, इस का ख़्याल भी नहीं होता कि उसका आख़िरत में बदला भी लिया जायेगा या हिसाब किताब भी होगा।

6. हज़रत उमर रज़ि० की हालत

हज़रत उमर रज़ि० बसा औक़ात[2] एक तिनका हाथ में लेते और फ़र्माते, काश, मैं यह तिनका होता, कभी फ़र्माते, काश, मुझे मेरी माँ ने जना ही न होता। एक मर्तबा किसी काम में मशग़ूल थे, एक शख़्स आया और कहने लगा कि फ़्लां शख़्स ने मुझ पर ज़ुल्म किया है। आप चलकर मुझे बदला दिलवा दीजिए। आपने उसके एक दुर्रा मार दिया कि जब मैं इस काम के लिए बैठता हूं उस वक़्त तो आते नहीं, जब मैं दूसरे कामों में मशग़ूल हो जाता हूं तो आकर कहते हैं कि बदला दिलवा। वह शख़्स चला गया। आपने आदमी भेज कर उसको बुलवाया और दुर्रा उसको देकर फ़र्माया कि बदला ले लो। उसने अर्ज़ किया कि मैंने अल्लाह के वास्ते माफ़ किया। घर तशरीफ़ लाये, दो रकअत नमाज़ पढ़ी, इसके बाद अपने आपको ख़िताब करके फ़रमाया, ए उमर ! तू कमीना था, अल्लाह ने मुझ को ऊंचा किया, तू गुमराह था,

1. नाराज़गी 2. कभी-कभी, है,

अल्लाह ने तुझको हिदायत की, तू ज़लील था, अल्लाह ने तुझे इज़्ज़त दी, फिर लोगों का बादशाह बनाया। अब एक शख़्स आकर कहता है कि मुझे ज़ुल्म का बदला दिलवादे तो तू उसको मारता है, कल को क़यामत के दिन अपने रब को क्या जवाब देगा। बड़ी देर तक इसी तरह आपने आपको मलामत करते रहे।[1]

आपके ग़ुलाम हज़रत असलम कहते हैं कि मैं एक मर्तबा हज़रत उमर रज़ि० के साथ हुर्रा[2] की तरफ़ जा रहा था। एक जगह आग जलती हुई जंगल में नज़र आई, हज़रत उमर रज़ि० ने फ़र्माया कि शायद यह कोई क़ाफ़िला है, जो रात हो जाने की वजह से शहर में नहीं गया, बाहर ही ठहर गया। चलो उसकी ख़ैर-ख़बर लें। रात को हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम करें। वहां पहुंचे तो देखा एक औरत है, जिसके साथ चंद बच्चे हैं, जो रो रहे हैं और चिल्ला रहे हैं और एक देगची चूल्हे पर रखी है, जिसमें पानी भरा हुआ है और उसके नीचे आग जल रही है। उन्होंने सलाम किया और क़रीब आने की इजाज़त लेकर उसके पास गए और पूछा कि यह बच्चे क्यों रो रहे हैं? औरत ने कहा कि भूख से लाचार हो कर रो रहे हैं। दर्याफ़्त फ़र्माया, इस देगची में क्या है ? औरत ने कहा कि पानी भर कर बहलाने के वास्ते आग पर रख दी है ज़रा उनको तसल्ली हो जाये और सो जायें। अमीरुल् मोमिनीन उमर रज़ि० का और मेरा अल्लाह ही के यहां फ़ैसला होगा कि मेरी इस तंगी की ख़बर नहीं लेते। हज़रत उमर रज़ि० रोने लगे और फ़र्माया कि अल्लाह तुझ पर रहम करे। भला उमर रज़ि० को तेरे हाल की क्या ख़बर है? कहने लगी कि वह हमारे अमीर बने हैं और हमारे हाल की ख़बर भी नहीं रखते। असलम कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० मुझे साथ लेकर वापस हुए और एक बोरी में बैतुल माल में से कुछ आटा और खजूरें और चर्बी और कुछ कपड़े और कुछ दिरहम लिए, ग़रज़ उस बोरी को ख़ूब भर लिया और फ़र्माया कि यह मेरी कमर पर रख दे, मैंने अर्ज़ किया कि मैं ले चलूं। आपने फ़र्माया कि नहीं, मेरी कमर पर रख दे। दो तीन मर्तबा जब मैंने इस्रार किया तो फ़र्माया, क्या क़यामत में भी मेरे बोझ को तू ही उठायेगा उसको मैं ही उठाऊंगा, इसलिए कि क़यामत में मुझ ही से इसका सवाल होगा। मैंने मजबूर होकर बोरी को आपकी कमर पर रख दिया। आप निहायत तेज़ी के साथ उसके पास तशरीफ़ ले गए, मैं भी साथ था, वहां पहुंचकर उस देगची में आटा और कुछ चर्बी और खजूरें डालीं और उसको चलाना शुरू किया। और चूल्हे में ख़ुद ही फूंक मारना शुरू किया। असलम रज़ि० कहते हैं कि आपकी गुंजान दाढ़ी से धुआं निकलता हुआ मैं देखता रहा, हत्ताकि हरीरा सा तैयार हो गया। इसके बाद आपने अपने दस्ते मुबारक से

---

1. असदुलग़ाबा, 2. मदीना के क़रीब एक जगह का नाम।

निकाल कर उनको खिलाया। वह सेर होकर हंसी-खेल में मशगूल हो गए और जो बचा था, वह दूसरे वक़्त के वास्ते उनके हवाले कर दिया। वह औरत बहुत खुश हुई और कहने लगी, अल्लाह तआला तुम्हें जज़ा-ए-ख़ैर दे। तुम थे इसके मुस्तहिक़ कि बजाए हज़रत उमर रज़ि० के तुम ही ख़लीफ़ा बनाये जाते। हज़रत उमर ने उसको तसल्ली दी और फ़र्माया कि जब तुम ख़लीफ़ा के पास जाओगी तो मुझको भी वहीं पाओगी। हज़रत उमर रज़ि० उसके क़रीब ही ज़रा हट कर ज़मीन पर बैठ गये और थोड़ी देर बैठने के बाद चले आये और फ़रमाया कि मैं इसलिए बैठा था कि मैंने उनको रोते हुए देखा था। मेरा दिल चाहा कि थोड़ी देर मैं उनको हंसते हुए भी देखूं[1]। सुबह की नमाज़ में अक्सर सूरः कह्फ़ ताहा वग़ैरह बड़ी सूरतें पढ़ते और रोते कि कई-कई सफ़ों तक आवाज़ जाती। एक मर्तबा सुबह की नमाज़ में सूरः यूसुफ़ पढ़ रहे थे-

इन्नमा अश्कू बस्सी व हुज़्नी इलल्लाहि

पर पहुंचे तो रोते-रोते आवाज़ न निकली। तहज्जुद की नमाज़ में बाज़ मर्तबा रोते-रोते गिर जाते और बीमार हो जाते।

फ़— यह है अल्लाह का ख़ौफ़ उस शख़्स का जिसके नाम से बड़े-बड़े नामवर बादशाह डरते थे, कांपते थे। आज भी चौदह सौ वर्ष के ज़माने तक उसका दबदबा माना हुआ है। आज कोई बादशाह नहीं, हाकिम नहीं, कोई मामूली-सा अमीर भी अपनी रिआया के साथ ऐसा बर्ताव करता है ?

7. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० की नसीहत

वह्ब बिन मुनब्बह कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० की ज़ाहिरी बीनाई जाने के बाद मैं उनको लिए जा रहा था। वह मस्जिदे हराम में तशरीफ़ ले गए। वहां पहुंचकर एक मज्मे से कुछ झगड़े की आवाज़ आ रही थी। फ़र्माया, मुझे, उस मज्मे की तरफ़ ले चलो, मैं उस तरफ़ ले गया। वहाँ पहुंचकर आपने सलाम किया। उन लोगों ने बैठने की दर्ख़ास्त की तो आपने इन्कार फ़र्मा दिया और फ़र्माया कि तुम्हें मालूम नहीं कि अल्लाह के ख़ास बन्दों की जमाअत में वह लोग हैं, जिनको उसके ख़ौफ़ ने चुप कर रखा है, हालांकि वह न अजिज़ हैं न गूंगे, बल्कि फ़सीह[2] लोग हैं, बोलने वाले हैं, समझदार हैं मगर अल्लाह तआला की बड़ाई के ज़िक्र ने उनकी अक़्लों को उड़ा रखा है, उसके दिल इसकी वजह से टूटे रहते हैं और ज़बानें चुप

1. अज़हर मशाहीर मुंतख़ब कंज़ुल उम्माल, 2. अच्छी ज़बान में बातें करने वाले,

रहती हैं और जब इस हालत पर उनको पुख़्तगी मयस्सर हो जाती है तो इसकी वजह से वह नेक कामों में जल्दी करते हैं, तुम लोग उनसे कहाँ हट गए। वहब रज़ि० कहते हैं कि उसके बाद मैंने दो आदमियों को भी एक जगह जमा नहीं देखा।

फ़– हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० अल्लाह के ख़ौफ़ से इस क़दर रोते थे कि चेहरे पर आसुओं के हर वक़्त बहने से दो नालियां सी बन गई थीं। ऊपर के क़िस्से में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने नेक कामों पर एहतमाम का यह एक सहल नुस्ख़ा बतलाया कि अल्लाह की अज़्मत और उसकी बड़ाई का सोच किया जाये कि इसके बाद हर क़िस्म का नेक अमल सहल है और फिर वह यक़ीनन इख़्लास से भरा हुआ होगा। रात दिन के 24 घंटों में अगर थोड़ा सा वक़्त भी हम लोग इसके सोचने की ख़ातिर निकाल लें तो क्या मुश्किल है ?

8. तबूक के सफ़र में क़ौमे समूद की बस्ती पर गुज़र

ग़ज़वा-ए-तबूक[1] मशहूर ग़ज़्वा है और नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आख़िरी ग़ज़्वा है। हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० को इत्तिला मिली कि रूम का बादशाह मदीना-मुनव्वरा पर हमला करने का इरादा कर रहा है और बहुत बड़ा लश्कर लेकर शाम के रास्ते से मदीना को आ रहा है। इस ख़बर पर 5 रजब सन् 9 हि० पंजशंबा को नबी अक्रम सल्ल० उसके मुक़ाबले के लिए मदीना तैयिबा से रवाना हो गए। चूंकि ज़माना सख़्त गर्मी का था और मुक़ाबला भी सख़्त था, इसलिए हुज़ूर अक़्दस सल्ल० ने साफ़ ऐलान फ़र्मा दिया था कि रूम के बादशाह से मुक़ाबले के लिए चलना है, तैयारी कर ली जाये और हुज़ूर सल्ल० ने ख़ुद इसके लिए चन्दा फ़र्माना शुरू किया। यही लड़ाई है जिसमें हज़रत अबूबक्र रज़ि० घर का सारा सामान ले आये और जब उनसे से पूछा कि घर वालों के लिए क्या छोड़ा तो फ़र्माया कि उनके लिए अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० को छोड़ आया और हज़रत उमर रज़ि० घर के पूरे सामान में से आधा ले आये, जिसका क़िस्सा न० 4 बाब 6 में आता है और हज़रत उस्मान ग़नी ने एक तिहाई लश्कर का पूरा सामान मुहय्या फ़र्माया और इसी तरह हर शख़्स अपनी हैसियत से ज़्यादा ही लाया। इसके बावजूद चूंकि आम तौर

---

1. ग़ज़्वा उस लड़ाई को कहते हैं, जिसमें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुद शरीक हुए हों,

से तंगी थी, इसलिए दस-दस आदमी एक ऊंट पर थे कि नौबत-ब-नौबत[1] उस पर सवार होते थे। इसी लिए इस लड़ाई का नाम जैशुल उसरत (तंगी का लश्कर) भी था। यह लड़ाई निहायत ही सख़्त थी कि सफ़र भी दूर का था और मौसम भी इस कदर सख़्त कि गर्मी की इन्तहा नहीं थी और इसके साथ ही मदीना तैयबा में खजूर के पकने का ज़माना ज़ोर पर था कि सारे बाग़ बिल्कुल पके हुए खड़े थे और खजूर ही पर मदीना-तैयबा वालों की ज़िन्दगी का ज़्यादा दारोमदार था कि साल भर की रोज़ी के जमा करने का गोया यही ज़माना था। इन हालात में यह वक़्त मुसलमानों के लिए निहायत सख़्त इम्तिहान का था कि उधर अल्लाह का ख़ौफ़, हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद, जिसकी वजह से बग़ैर जाये न बनती थी और दूसरी जानिब यह सारी दिक्क़तें कि हर वक़्त मुस्तक़िल रोक थी, बिलख़ुसूस साल भर की मेहनत और पके-पकाये दरख़्तों का यों बे-यार व मददगार छोड़ जाना जितना मुश्किल था, वह ज़ाहिर है मगर इस सब के जावजूद अल्लाह का ख़ौफ़ इन हज़रात पर ग़ालिब था, इस लिए बजुज़ मुनाफ़िक़ीन और माज़ूरीन जिसमें औरतें और बच्चे भी दाख़िल थे और वह लोग भी जो बे-ज़रूरत मदीना तैयबा में छोड़े गए या किसी किस्म की सवारी न मिल सकने के वजह से रोते हुए रह गए थे, जिनके बारे में 'तवल्ल व अअयुनु हुम तफ़ीज़ु मिनद्दमअि' नाज़िल हुई और सब ही हज़रात हमरिकाब[2] थे, अल-बत्ता तीन हज़रात बिला उज़्र के शरीक नहीं थे, जिनका क़िस्सा आइंदा आ रहा है। रास्ते में क़ौम समूद की बस्ती पर गुज़र हुआ जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दामन से अपने चेहरा-ए-अन्वर को ढांक लिया और ऊंटनी को तेज़ कर दिया और सहाबा रज़ि० को भी हुक्म फ़र्माया कि यहां से तेज़ चलो और ज़ालिमों की बस्तियों में से रोते हुए गुज़रो और उससे डरते हुए गुज़रो कि तुम पर भी ख़ुदा न ख़्वास्ता वह अज़ाब कहीं नाज़िल न हो जाये जो उन पर नाज़िल हुआ था[3]।

फ़— अल्लाह का प्यारा नबी और लाडला रसूल सल्ल० अज़ाब वाली जगह से डरता हुआ, ख़ौफ़ करता हुआ गुज़रता है और अपने जांनिसार दोस्तों को, जो इस सख़्त मजबूरी के वक़्त में भी जां-निसारी का सबूत देते हैं, रोते हुए जाने का हुक्म फ़र्माता है कि ख़ुदा-न-ख़्वास्ता वह अज़ाब उन पर न नाज़िल हो जाये। हम लोग किसी बस्ती में जलज़ला आ जाये तो उसको सैरगाह बनाते हैं, खंडहरों की तफ़रीह को जाते हैं और रोना तो दर-किनार, रोने का ख़्याल भी दिल में नहीं लाते।

---

1. बारी-बारी, 2. साथ रवाना हुए, 3. इस्लाम ख़मीस,

9. तबूक में हज़रत कअब रज़ि० की ग़ैर हाज़िरी और तौबा

इसी तबूक की लड़ाई में माज़ूरीन[1] के अलावा अस्सी से ज़्यादा तो मुनाफ़िक़ अन्सार में से थे और इतने की तक़रीबन बद्वी लोगों में से। इन के अलावा एक बड़ी जमाअत बाहर के लोगों में से ऐसी थी जो शरीक नहीं हुए और इतना ही नहीं बल्कि यह लोग दूसरों को भी 'ला तंफ़िरू फ़िलहर्रि (गर्मी में न निकलो) कह कर रोकते थे। हक़ तआला शानुहू फ़र्माते हैं कि जहन्नम की आग की गर्मी बहुत सख़्त है। इसके अलावा तीन सच्चे पक्के मुसलमान भी ऐसे थे जो बिला किसी क़वी उज़्र के लड़ाई में शरीक नहीं हो सके। एक कअब बिन मालिक रज़ि०, दूसरे हिलाल बिन उमैया, तीसरे मुरारः बिन रबीअ रज़ि०, यह तीनों हज़रात किसी निफ़ाक़ या उज़्र से नहीं ठहरे, बल्कि खुशहाली ही सबब रह जाने का बन गई। काब रज़ि० अपनी सर गुज़श्त[2] जो इस मौक़े पर पेश आई, मुफ़स्सल सुनाते हैं जो आइन्दा आ रही है-

मुरारः बिन रबीअ का बाग़ ख़ूब फल रहा था। उनको ख़्याल हुआ कि अगर मैं चला गया तो यह सब ज़ाया हो जायेगा। हमेशा मैं लड़ाइयों में शरीक होता ही रहा हूं। अगर इस मर्तबा रह गया, तो क्या मुज़ायक़ा है, इसलिए ठहर गए, मगर जब तनब्बुह हुआ तो चूंकि बाग़ ही इसका सबब हुआ था, इसलिए सब को अल्लाह के रास्ते में सद्क़ा कर दिया।

हिलाल रज़ि० के अह्ल व इज़्ज़ा,[3] जो कहीं गए हुए थे, इत्तिफ़ाक़ से उस मौक़े पर सब जमा हो गए, उनको भी यही ख़्याल हुआ कि हमेशा शिर्कत करता रहता हूं, अगर इस मौक़े पर न जाऊं तो क्या हर्ज है इसलिए ठहर गये, मगर तनब्बुह होने पर सब से ताल्लुक़ात मुक़तअ कर लेने का इरादा किया कि यह ताल्लुक़ात ही इस लड़ाई में शिर्कत न करने का सबब हुए।

हज़रत कअब रज़ि० का क़िस्सा अहादीस में कसरत से आता है। वह अपनी सरगुज़िश्त बड़ी तफ़्सील से सुनाया करते थे। वह फ़र्माते हैं कि मैं तबूक से पहले किसी लड़ाई में भी इतना क़वी व मालदार नहीं था, जितना कि तबूक के वक़्त था, उस वक़्त मेरे पास ख़ुद अपनी ज़ाती दो ऊंटनियां थीं। इससे पहले कभी भी दो ऊंटनियां

---

1. जिन्हे शरई उज़्र या मजबूरी रही हो, 2. कहानी, रिपोर्ट, 3. बाल-बच्चे, रिश्तेदार,

मेरे पास होने की नौबत नहीं आई। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हमेशा आदते शरीफ़ा यह थी कि जिस तरफ लड़ाई का इरादा होता था उसका इज़्हार नहीं होता था, बल्कि दूसरी जानिबों के अह्वाल दर्याफ़्त फ़र्माते थे, मगर इस लड़ाई में चूंकि गर्मी भी शदीद थी और सफ़र भी दूर का था, इन के अलावा दुश्मनों की भी बहुत बड़ी जमाअत थी, इसलिए साफ़ ऐलान फ़र्मा दिया था ताकि लोग तैयारी कर लें। चुनांचे मुसलमानों की इतनी बड़ी जमाअत हुज़ूर सल्ल० के साथ हो गई कि रजिस्टर में उनका नाम भी लिखना दुश्वार था और मज्मा की कसरत की वजह से कोई शख़्स अगर छुपना चाहता कि मैं न जाऊं, न पता चले तो दुशवार न था। इसके साथ ही फल बिल्कुल पक रहे थे। मैं भी सामाने सफ़र की तैयारी का सुबह ही से इरादा करता मगर शाम हो जाती और किसी क़िस्म की तैयारी की नौबत न आती, लेकिन मैं अपने दिल में ख़्याल करता कि मुझे वुसअत[1] हासिल है, जब इरादा पुख़्ता करूंगा, फ़ौरन हो जायेगा, हालांकि हुज़ूर अक़्दस सल्ल० रवाना भी हो गए और मुसलमान आपके साथ-साथ, मगर मेरा सामाने सफ़र तैयार न हुआ फिर भी यही ख़्याल रहा कि एक-दो रोज़ में तैयारी करके जा मिलूंगा। इसी तरह आज कल पर टलता रहा, हत्ताकि हुज़ूर सल्ल० के वहां पहुंचने का ज़माना क़रीबन आ गया। उस वक़्त मैंने कोशिश भी की मगर सामान न हो सका। अब मैं जब मदीना तैयबा में इधर-उधर देखता हूं तो सिर्फ़ वही लोग मिलते हैं जिनके ऊपर निफ़ाक़ का बदनुमा दाग़ लगा हुआ था या वह माज़ूर थे और हुज़ूर सल्ल० ने भी तबूक पहुंच कर दर्याफ़्त फ़र्माया कि काब रज़ि० नज़र नहीं पड़ते, क्या बात हुई एक साहब ने कहा, या रसूलल्लाह! उसको अपने माल व जमाल की अकड़ ने रोका। हज़रत मुआज़ ने फ़र्माया कि ग़लत कहा, हम जहां तक समझते हैं वह भला आदमी है मगर हुज़ूर अक़्दस सल्ल० ने बिल्कुल सुकूत फ़र्माया और कुछ नहीं बोले। हत्ताकि चन्द रोज़ में मैंने वापसी की ख़बर सुनी तो मुझे रंज व ग़म सवार हुआ और बड़ा फ़िक्र हुआ। दिल में झूठे-झूठे उज़्र आते थे कि इस वक़्त किसी फ़र्ज़ी उज़्र से हुज़ूर सल्ल० के ग़ुस्से से जान बचा लूं, फिर किसी वक़्त माफ़ी की दर्ख़्वास्त कर लूंगा और इस बारे में अपने घराने के हर समझदार से मश्वरा करता रहा। मगर जब मुझे मालूम हो गया कि हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ ले ही आये तो मेरे दिल ने फ़ैसला किया कि बग़ैर सच के कोई चीज़ निजात न देगी और मैंने सच-सच अर्ज़ करने की ठान ही ली। हुज़ूर सल्ल० की आदते शरीफ़ा यह थी कि जब सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो अव्वल मस्जिद

1. माल ज़्यादती।

में तशरीफ़ ले जाते और दो रकअत तहीयतुल मस्जिद पढ़ते और वहां थोड़ी देर तक तशरीफ़ रखते कि लोगों से मुलाक़ात फ़र्मायें। चुनांचे हस्ब मामूल हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ फर्मा रहे और मुनाफ़िक़ लोग आकर झूठे-झूठे उज़्र करते और क़स्में खाते रहे। हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके ज़ाहिर हाल को क़ुबूल फ़र्माते रहे और बातिन को अल्लाह के सुपुर्द फ़र्माते रहे कि इतने में मैं भी हाज़िर हुआ और सलाम किया। हुज़ूर सल्ल० ने नाराज़गी के अन्दाज में तबस्सुम[1] फ़र्माया और एराज़[2] फ़र्माया। मैंने अर्ज़ किया, या अल्लाह के नबी! आपने एराज़ फ़र्मा लिया। मैं खुदा की क़सम! न तो मुनाफ़िक़ हूं, न मुझे ईमान में कुछ तरद्दुद[3] है। इर्शाद फ़र्माया कि यहाँ आ। मैं क़रीब होकर बैठ गया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि तुझे किस चीज़ ने रोका? क्या तूने ऊंटनियां नहीं ख़रीद रखी थीं? मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! अगर मैं किसी दुनियांदार के पास इस वक़्त होता तो मुझे यक़ीन है कि मैं उसके गुस्से से माक़ूल उज़्र के साथ ख़लासी पा लेता कि मुझे बात करने का सलीक़ा अल्लाह तआला ने अता फ़र्माया है, लेकिन आपके मुताल्लिक़ मुझे मालूम है कि अगर आज झूठ से आप को राज़ी कर लूं तो क़रीब है कि अल्लाह जल्ल जलालुहु मुझसे नाराज़ होंगे और अगर आपसे साफ़-साफ़ अर्ज़ कर दूं तो आप को गुस्सा आयेगा लेकिन क़रीब है कि अल्लाह की पाक ज़ात आपके इताब[4] को ज़ायल फ़र्मा देगी। इसलिए सच ही अर्ज़ करता हूं कि वल्लाह! मुझे कोई उज़्र नहीं था और जैसा फ़ारिग़ और वुसअत वाला मैं उस ज़माने में था, किसी ज़माने में भी इससे पहले नहीं हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, कि उसने सच कहा फिर फ़र्माया अच्छा! उठ जाओ, तुम्हारा फ़ैसला हक़ तआला शानुहु फ़र्मायेंगे।

मैं वहाँ से उठा तो मेरी क़ौम के बहुत से लोगों ने मुझे मलामत की कि तूने इससे पहले कोई गुनाह नहीं किया था। अगर तू कोई उज़्र करके हुज़ूर सल्ल से इस्तिग़फ़ार की दरख़ास्त करता तो हुज़ूर सल्ल० का इस्तिग़फ़ार[5] तेरे लिए काफ़ी था। मैंने उनसे पूछा कि कोई और भी ऐसा शख़्स है जिसके साथ ऐसा मामला हुआ हो। लोगों ने बताया कि दो शख़्सों के साथ और भी यही मामला हुआ कि उन्होंने भी यही गुफ़्तगू की जो तूने की और यही जवाब उनको मिला जो तुझको मिला-एक हिलाल बिन उमैया, दूसरे मुरारः बिन रबीअ। मैंने देखा कि दो सालेह[6] शख़्स जो दोनों बद्री[7] हैं, वह भी मेरे शरीके हाल हैं। हुज़ूर अक़्सद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

---

1. मुस्कराये, 2. मुंह फेर लिया, 3. संकोच, 4. गुस्सा, 5. ख़त्म करना, 6. नेक, 7. बद्री वे लोग कहलाते हैं जो बद्र की लड़ाई में शरीक हुए। उन की बुज़ुर्गी और बड़ाई मुसल्लम है। अहादीस ने भी उन की बड़ाई आयी है। कितनी ही हदीसों में उन की मग़्फ़िरत और अल्लाह तआला की उनसे ख़ुश होने की बशारतें आयी हैं।

ने हम तीनों से बोलने की मुमानअत भी फ़र्मा दी[1] कि कोई शख़्स हम से कलाम न करे। यह क़ायदे की बात है कि ग़ुस्सा उसी पर आता है जिससे ताल्लुक़ होता है, और तम्बीह उसी को की जाती है जिसमें उसकी अहिलयत भी हो, जिसमें इस्लाह व सलाह की क़ाबिलियत ही न हो, उसको तम्बीह ही कौन करता है।

हज़रत कअब रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० की मुमानअत पर लोगों ने हम से बोलना छोड़ दिया और हम से इज्तिनाब[2] करने लगे और गोया दुनियां ही बदल गई, हालांकि ज़मीन बावजूद अपनी वुसअत के मुझे तंग मालूम होने लगी। सारे लोग अजनबी मालूम होने लगे, दर व दीवार ओपरे बन गये। मुझे सबसे ज़्यादा इसका फ़िक्र था कि मैं इस हाल में मर गया तो हुज़ूर सल्ल० जनाज़े की नमाज़ भी न पढ़ेंगे और ख़ुदा-न-ख़्वास्ता हुज़ूर सल्ल० का विसाल हो गया तो मैं हमेशा-हमेशा के लिए ऐसा ही रहूंगा, न कोई मुझ से कलाम करेगा, न मेरी नमाज़ पढ़ेगा कि हुज़ूर सल्ल० के इर्शाद के ख़िलाफ़ कौन कर सकता है, ग़रज़ हम लोगों ने पचास दिन इसी हाल में गुज़ारे। मेरे दोनों साथी तो शुरू ही से घरों में छुप कर बैठ गये थे, मैं सबमें क़वी था, चलता-फिरता बाज़ार में जाता, नमाज़ में शरीक होता, मगर मुझ से बात कोई न करता। हुज़ूर सल्ल० की मज्लिस में हाज़िर होकर सलाम करता और बहुत ग़ौर से ख़्याल करता कि हुज़ूर सल्ल० के लबे मुबारक जवाब के लिए हिलें या नहीं नमाज़ के बाद हुज़ूर सल्ल० के क़रीब ही खड़े होकर नमाज़ पूरी करता और आँख चुरा कर देखता कि हुज़ूर सल्ल० मुझे देखते भी हैं या नहीं जब मैं नमाज़ में मशग़ूल होता तो हुज़ूर सल्ल० मुझे देखते और जब मैं इधर मुतवज्जह होता तो हुज़ूर सल्ल० मुंह फेर लेते और मेरी जानिब से एराज़ फ़र्मा लेते।

ग़रज़ यही हालात गुज़रते रहे और मुसलमानों का बात-चीत बन्द करना मुझ पर बहुत ही भारी हो गया तो मैं अबू क़तादा रज़ि० की दीवार पर चढ़ा। वह मेरे रिश्ते के चचाज़ाद भाई भी थे और मुझसे ताल्लुक़ात भी बहुत ही ज़्यादा थे। मैंने ऊपर चढ़ कर सलाम किया। उन्होंने सलाम का जवाब न दिया। मैंने उनको क़सम देकर पूछा कि क्या तुम्हें मालूम नहीं, मुझे अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० से मुहब्बत है। उन्होंने इसका भी जवाब न दिया। मैंने दोबारा क़सम दी और दर्याफ़्त किया, वह फिर भी चुप ही रहे। मैंने तीसरी मर्तबा फिर क़सम देकर पूछा, उन्होंने कहा अल्लाह जाने और उस का रसूल! यह कलमा सुनकर मेरी आंखों में आंसू

---

1. मना कर दिया, 2. कतराना।

निकल पड़े और वहां से लौट आया। इसी दौरान मैं एक मर्तबा मदीना के बाजार में जा रहा था कि एक क़िब्ती को जो नसरानी था और शाम से मदीना मुनव्वरा अपना ग़ल्ला फ़रोख़्त करने आया था, यह कहते हुए सुना कि कोई कअब बिन मालिक का पता बता दो। लोगों ने उसको मेरी तरफ़ इशारा करके बताया, वह मेरे पास आया और ग़स्सान के काफ़िर बादशाह का ख़त लाकर मुझे दिया, उसमें लिखा हुआ था, हमें मालूम हुआ कि तुम्हारे आक़ा ने तुम पर ज़ुल्म कर रखा है, तुम्हें अल्लाह ज़िल्लत की जगह न रखे और न ज़ाया[1] करे। तुम हमारे पास आओ, हम तुम्हारी मदद करेंगे (दुनियां का क़ायदा होता है कि किसी बड़े की तरफ़ से अगर छोटों को तम्बीह होती है तो उनको बहकाने वाले और ज़्यादा खोने की कोशिश किया करते हैं और ख़ैर ख़्वाह[2] बनकर इस क़िस्म के अल्फ़ाज़ से इश्तिआल[3] दिलाया ही करते हैं)।

कअब रज़ि० कहते हैं कि मैंने यह ख़त पढ़ कर इन्ना लिल्लाहि पढ़ी कि मेरी हालत यहां तक पहुंच गई कि काफ़िर भी मुझ में तमा करने लगे और मुझे इस्लाम तक से हटाने की तदबीरें होने लगीं। यह एक और मुसीबत आई और इस ख़त को ले जाकर मैंने एक तनूर में फ़ेंक दिया और हुज़ूर सल्ल० से जाकर अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! आपके एराज की वजह से मेरी यह हालत हो गई कि काफ़िर मुझ में तमा करने लगे। इसी हालत में चालीस रोज़ हम पर गुज़रे थे कि हुज़ूर सल्ल० का क़ासिद[4] मेरे पास हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद वाला लेकर आया कि अपनी बीवी को भी छोड़ दो। मैंने दर्याफ़्त किया कि क्या मंशा है, उसको तलाक़ दे दूं? कहा नहीं, बल्कि अलहदगी इख़्तियार कर लो और मेरे दोनों साथियों के पास भी इन्हीं क़ासिद की मारफ़त यही हुक्म पहुंचा। मैंने अपनी बीवी से कह दिया कि तू अपने मैके में चली जा। जब तक अल्लाह तआला शानुहू इस अम्र का फ़ैसला फ़र्मायें, वहीं रहना। हिलाल बिन उमैया रज़ि० की बीवी, हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुयीं और अर्ज़ किया कि हिलाल बिल्कुल बूढ़े शख़्स हैं, कोई ख़बरगीरी करने वाला न होगा तो हलाक हो जायेंगे। अगर आप इजाज़त दें और आपको गरानी न हो तो मैं कुछ कामकाज उन का कर दिया करूं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, मुज़ायका नहीं, लेकिन सोहबत न करें। उन्होंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! इस चीज़ की तरफ़ तो उनको मैलान भी नहीं। जिस रोज़ से यह वाक़िआ पेश आया, आज तक उनका वक़्त रोते

---

1. बर्बाद, 2. भलाई चाहने वाला, 3. भड़काना, 4. दूत।

ही गुजर रहा है। कअब[1] कहते हैं, कि मुझसे भी कहा गया कि हिलाल की तरह तू भी अगर बीवी की ख़िद्मत की इजाज़त ले ले तो शायद मिल जाए। मैंने कहा वह बूढ़े हैं, मैं जवान हूं, न मालूम मुझे क्या जवाब मिले, इस लिए मैं जुरअत नहीं करता। ग़रज़ इस हाल में दस रोज़ और गुज़रे कि हमसे बात-चीत, मेलजोल छुटे हुए पूरे पचास दिन हो गए। पचासवें दिन की सुबह की नमाज़ अपने घर की छत पर पढ़कर मैं निहायत ग़मगीन बैठा हुआ था, ज़मीन मुझ पर बिल्कुल तंग थी और ज़िन्दगी दूभर हो रही थी कि सलअ पहाड़ की चोटी पर से एक ज़ोर से चिल्लाने वाले ने आवाज़ दी कि कअब रज़ि० ! ख़ुशख़बरी हो तुमको। मैं इतना ही सुनकर सज्दे में गिर गया और ख़ुशी के मारे रोने लगा और समझा कि तंगी दूर हो गई। हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुबह की नमाज़ के बाद हमारी माफ़ी का एलान फ़र्माया, जिस पर एक शख़्स ने तो पहाड़ पर चढ़ कर ज़ोर से आवाज़ दी कि वह सबसे पहले पहुंच गई इसके बाद एक साहब घोड़े पर सवार होकर भागे हुए आए, मैं जो कपड़े पहन रहा था, वह निकाल कर बशारत देने वाले की नज़र कर दिए। ख़ुदा की क़सम ! इन दो कपड़ों के सिवा और कोई कपड़ा[2] उस वक़्त मेरी मिल्क में न था। इसके बाद मैंने दो कपड़े मांगे हुए पहने और हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। इसी तरह मेरे दोनों साथियों के पास भी ख़ुशख़बरी लेकर लोग गए। मैं जब मस्जिदे नबवी में हाज़िर हुआ तो वह लोग जो ख़िद्मते अक़्दस में हाज़िर थे, मुझे मुबारकबाद देने के लिए दौड़े और सबसे पहले अबूतलहा रज़ि० ने बढ़कर मुबारकबाद दी और मुसाफ़ा किया जो हमेशा ही यादगार रहेगा, मैंने हुज़ूर सल्ल० की बारगाह में जा कर सलाम किया तो चेहरा-ए-अन्वर खिल रहा था और अन्वार ख़ुशी के चहरे से ज़ाहिर हो रहे थे। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चेहरा-ए-मुबारक ख़ुशी के वक़्त में चांद की तरह से चमकने लगता था। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! मेरी तौबा की तकमील यह है कि मेरी जायदाद जो है वह सब अल्लाह के रास्ते में सद्क़ा है (कि यह सरवत ही इस मुसीबत का सबब बनी थी।) हुज़ूर सल्ल० न फ़र्माया कि इसमें तंगी होगी, कुछ हिस्सा अपने पास भी रहने दो। मैंने अर्ज़ किया कि बेहतर है, ख़ैबर का हिस्सा रहने दिया जाए, मुझे सच ही ने निजात दी, इसलिए मैंने अहद कर लिया कि हमेशा ही सच बोलूंगा[3]।

---

1. मुम्किन है बीवी ने कहा हो कि बीवियों से अलाहदगी का हुक्म अब तक नहीं हुआ था या किसी बच्चे या मुनाफ़िक़ ने कहा हो कि सहाबा रज़ि० तो बोलते ही न थे। 2. अगरचे कपड़े के सिवा और माल मौजूद था मगर उस वक़्त की आम ज़िन्दगी यही थी कि फ़िज़ूल चीज़ें ज़्यादा न होती थीं, इसलिए कपड़े दो ही थे। 3. दुर्रेमंसूर-फ़त्हुल बारी।

फ़— यह है सहाबा-ए-किराम की इताअत और दीनदारी का और अल्लाह के ख़ौफ का नमूना, कि हमेशा जंग में यह हज़रात शरीक रहे। एक मर्तबा की ग़ैर हाज़िरी पर क्या-क्या इताब हुआ और उसको किस फ़र्माबरदारी से बर्दाश्त किया कि पचास दिन रो कर गुज़ार दिए और माल जिसकी वजह से यह वाक़िआ पेश आया था, वह भी सद्क़ा कर दिया और काफ़िरों ने तमअ दिलाई तो बजाए मुश्तअिल होने के और ज़्यादा पशेमान हुए और उसको भी अल्लाह का इताब और हुज़ूर सल्ल० के एराज़ की वजह से समझा कि मेरे दीन का ज़ोअफ़ इस दर्जे तक पहुंच गया कि काफ़िरों को इसकी तमअ होने लगी कि वह मुझे बे-दीन बना दें। हम लोग भी मुसलमान हैं। अल्लाह और उसके पाक रसूल सल्ल० के इर्शादात भी सामने हैं। बड़े से बड़ा हुक्म नमाज़ ही का ले लो कि ईमान के बाद इसके बराबर कोई चीज़ भी नहीं। कितने हैं जो इस हुक्म की तामील करते हैं और जो करते हैं वह भी कैसे करते हैं। इसके बाद ज़कात और हज का तो पूछना ही किया कि इसमें तो माल भी ख़र्च होता है।

10. सहाबा रज़ि० के हंसने पर हुज़ूर सल्ल० की तंबीह और क़ब्र की याद

नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा नमाज़ के लिए तशरीफ़ लाये तो एक जमाअत को देखा कि वह खिलखिला कर हंस रही थी और हंसी की वजह से दांत खुल रहे थे। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि अगर मौत को कसरत से याद किया करो तो जो हालत मैं देख रहा हूं, वह पैदा न हो, लिहाज़ा मौत को कसरत से याद किया करो। क़ब्र पर कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता, जिसमें वह यह आवाज न देती हो कि मैं बेगानगी का घर हूं, तन्हाई का घर हूं, मिट्टी का घर हूं, कीड़ों का घर हूं। जब कोई मोमिन क़ब्र में रखा जाता है तो वह कहती है कि तेरा आना मुबारक है। बहुत अच्छा किया, तू आ गया। जितने आदमी ज़मीन पर चलते थे तू उन सब में मुझे ज़्यादा पसन्द था। आज जब तू मेरे पास आया है तो मेरे बेहतरीन सुलूक को देखेगा। इसके बाद वह क़ब्र जहां तक मुर्दे की नज़र पहुंच सके, वहां तक वसीअ हो जाती है और एक दरवाज़ा उसमें जन्नत का खुल जाता है जिससे वहां की हवा और ख़ुश्बुएं उसको आती रहती हैं। और जब कोई बद्किरदार क़ब्र में रखा जाता है तो वह कहती है, तेरा आना ना-मुबारक है, बुरा किया जो तू आया! ज़मीन पर जितने आदमी चलते थे, उन सब में तुझ ही से मुझे ज़्यादा नफ़रत थी। आज जब तू मेरे हवाले हुआ है तो मेरे बर्ताव को भी देख लेगा। इसके बाद वह इस तरह

से उसको दबाती है कि पसलियां आपस में एक दूसरे में घुस जाती हैं और सत्तर अज़दहे उस पर ऐसे मुसल्लत हो जाते हैं कि अगर एक भी ज़मीन पर फुंकार मारे तो उसके असर से ज़मीन पर घास तक बाक़ी न रहे, वह उसको क़यामत तक डसते रहते हैं। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि क़ब्र या जन्नत का एक बाग़ है या जहन्नम का एक गढ़ा।[1]

फ़— अल्लाह का ख़ौफ़ बड़ी ज़रूरी और अहम चीज़ है। यही वजह है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अक्सर किसी गहरी सोच में रहते थे और मौत को याद करना उसके लिए मुफ़ीद है। इसीलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह नुस्ख़ा इर्शाद फ़र्माया, कभी-कभी मौत को याद करते रहना बहुत ही ज़रूरी और मुफ़ीद है।

11. हज़रत हंज़ला रज़ि० को निफ़ाक़ का डर

हज़रत हंज़ला रज़ि० कहते हैं कि एक मर्तबा हम लोग हुज़ूर सल्ल० की मज्लिस में थे। हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वाज़ फ़र्माया, जिससे क़ुलूब[2] नर्म हो गये और आंखों से आंसू बहने लगे और अपनी हक़ीक़त हमें ज़ाहिर हो गई। हुज़ूर सल्ल० की मज्लिस से उठकर मैं घर आया, और बीवी-बच्चे पास आ गये और कुछ दुनियां का ज़िक्र-तज़्किरा शुरू हो गया और बच्चों के साथ हंसना-बोलना, बीवी के साथ मज़ाक शुरू हो गया और वह हालत जाती रही, जो हुज़ूर सल्ल० की मज्लिस में थी। दफ़अतन[3] ख़्याल आया कि मैं पहले से किस हाल में था, अब क्या हो गया। मैंने अपने दिल में कहा कि तू तो मुनाफ़िक़ हो गया कि ज़ाहिर में हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने तो वह हाल था और अब घर में आकर यह हालत हो गई। मैं इस पर अफ़सोस और रंज करता हुआ और यह कहता हुआ घर से निकला कि हंज़ला तो मुनाफ़िक़ हो गया। सामने से हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० तशरीफ़ ला रहे थे। मैंने उनसे अर्ज़ किया कि हंज़ला तो मुनाफ़िक़ हो गया। वह यह सुन कर फ़र्माने लगे कि सुब्हानल्लाह। क्या कह रहे हो, हरगिज़ नहीं। मैंने सूरत बयान की कि हम लोग जब हुज़ूर सल्ल० कि ख़िदमत में होते हैं और हुज़ूर सल्ल० दोज़ख़ और जन्नत का ज़िक्र फ़र्माते हैं तो हम लोग ऐसे हो जाते हैं गोया वह दोनों हमारे सामने हैं और जब हुज़ूर सल्ल० के पास से आ जाते हैं, तो बीवी-बच्चों, जायदाद

1. मिश्कात। 2. दिल, 3. यकायक,

वग़ैरह के धंधों में फंस कर उसको भूल जाते हैं। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने फ़र्माया कि यह बात तो हम को भी पेश आती है, इस लिए दोनों हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और जा कर हंज़ला ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! मैं तो मुनाफ़िक़ हो गया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, क्या बात हुई ! हंज़ला रज़ि० ने अर्ज़ किया कि जब हम लोग आपकी ख़िदमत में हाज़िर होते हैं और आप जन्नत दोज़ख़ का ज़िक्र फ़र्माते हैं, तब तो हम ऐसे हो जाते हैं कि गोया वह हमारे सामने हैं, लेकिन जब ख़िदमते अक़्दस से चले जाते है तो जाकर बीवी-बच्चों और घर-बाहर के धंधों में लग कर भूल जाते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि उस ज़ात की क़सम ! जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर तुम्हारा हर वक़्त वही हाल रहे जैसा मेरे सामने होता है, तो फ़रिश्ते तुम्हारे से बिस्तरों पर और रास्तों में मुसाफ़ा करने लगें, लेकिन हंज़ला ! बात यह है कि गाहे[1]-गाहे-गाहे[2]।

फ़— यानी आदमी के साथ इन्सानी ज़रूरतें भी लगी हुई हैं जिन को पूरा करना भी ज़रूरी है। खाना-पीना, बीवी-बच्चे और उनकी ख़ैरख़बर लेना यह भी ज़रूरी हैं। इसलिए इस किस्म के हालात कभी-कभी हासिल होते हैं। न हर वक़्त यह हासिल होते हैं, न इसकी उम्मीद रखनी चाहिए। यह फ़रिश्तों की शान है कि उनको कोई दूसरा धंधा ही नहीं। न बीवी-बच्चे, न फ़िक्रे मआश, न दुन्यवी क़िस्से और इन्सान के साथ चूंकि बशरी ज़रूरियात लगी हुई हैं इसलिए वह हर वक़्त एक सी हालत पर नहीं रह सकता लेकिन ग़ौर की बात यह है कि सहाबा किराम रज़ि० को अपने दीन की कितनी फ़िक्र थी कि ज़रा सी बात से हुज़ूर सल्ल० के सामने हमारी जो हालत होती है, वह बाद में नहीं रहती, उससे अपने मुनाफ़िक़ होने का उन को बहुत फ़िक्र हो गया। इश्क़ अस्त व हज़ार बदगुमानी। इश्क़ जिससे होता है, उसके मुताल्लिक़ हज़ार तरह की बदगुमानी और फ़िक्र हो जाती हैं। बेटे से मुहब्बत हो और वह कहीं सफ़र में चला जाए फिर देखिए हर वक़्त ख़ैरियत की ख़बर का फ़िक्र रहता है और जो यह भी मालूम हो जाए कि वहां ताऊन है, या फ़साद हो गया, फिर ख़ुदा जाने कितने, ख़ुतूत और तार पहुंचेंगे।

---

1. कभी-कभी होती है, 2. ए हुआ, मुस्लिम। 3. रोज़ी कमाने की चिंता, 4. इंसानी ज़रूरतें, 5. ख़त, पत्र, 6. एहुआ, मुस्लिम।

तफ़्सील-अल्लाह के ख़ौफ़ के मुतफ़र्रिक़ अहवाल

क़ुरआन शरीफ़ की आयात और हुज़ूर सल्ल० की अहादीस और बुज़ुर्गों के वाक़िआत में अल्लाह जल्ल शानुह से डरने से मुताल्लिक़ जितना कुछ ज़िक्र किया गया है, उसका अहाता तो दुश्वार है लेकिन मुख़्तसर तौर पर इतना समझ लेना चाहिए कि दीन के हर कमाल का ज़ीना अल्लाह का ख़ौफ़ है। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि हिक्मत की जड़ अल्लाह का ख़ौफ़ है। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० बहुत रोया करते थे हत्ताकि रोते-रोते आंखें भी बेकार हो गई थीं। किसी शख़्स ने एक मर्तबा देख लिया तो फ़र्माने लगे कि मेरे रोने पर ताज्जुब करते हो, अल्लाह के ख़ौफ़ से सूरज रोता है। एक मर्तबा ऐसा ही क़िस्सा आया तो फ़र्माया कि अल्लाह के ख़ौफ़ से चांद रोता है।

एक नौ-जवान सहाबी रज़ि० पर हुज़ूर सल्ल० का गुज़र हुआ, वह पढ़ रहे थे। जब-

فَإِذَا انْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ

फ़इज़न्श क़क़ति स्समाउ फ़ कानत वर्दतन कद्दिहानि०

पर पहुंचे तो बदन के बाल खड़े हो गए, रोते-रोते दम घुटने लगा और कह रहे थे, हां जिस दिन आसमान फट जावेंगे (यानी क़यामत के दिन) मेरा क्या हाल होगा, हाय मेरी बर्बादी ! हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, कि तुम्हारे इस रोने की वजह से फ़रिश्ते भी रोने लगे।

एक अन्सारी ने तहज्जुद पढ़ा और फिर बैठ कर बहुत रोये। कहते थे अल्लाह ही से फ़रियाद करता हूं जहन्नम की आग से बचने की। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि तुमने आज फ़रिश्तों को रूला दिया।

अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० एक सहाबी हैं रो रहे थे। बीवी भी उनकी इस हालत को देखकर रोने लगी। पूछा कि तुम क्यों रोती हो, कहने लगीं कि जिस वजह से तुम रोते हो। अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० ने कहा कि मैं इस वजह से रो रहा हूं कि जहन्नम पर तो गुज़रना है ही, न जाने निजात हो सकेगी या वहीं, रह

---

1. रोज़ी कमाने की चिंता, 2. यकायक, 3. दिल, 4. कभी-कभी होती है।

जाऊंगा।

ज़ुरारह बिन औफ़ा एक मस्जिद में नमाज़ पढ़ा रहे थे। 'फ़इज़ा नुक़ि र फ़िन्नाक़ूरि अल आयत, पर जब पहुंचे, तो फ़ौरन गिर गए और इन्तिक़ाल हो गया। लोग उठा कर घर तक लाये।[1]

हज़रत खुलैद रज़ि० एक मर्तबा नमाज़ पढ़ रहे थे। 'कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइक़तुल मौति' पर पहुंचे तो उसको बार-बार पढ़ने लगे। थोड़ी देर में घर के एक कोने से आवाज़ आई कि कितनी मर्तबा इसको पढ़ोगे तुम्हारे इस बार-बार के पढ़ने से चार जिन मर चुके हैं। एक और साहब का क़िस्सा लिखा है कि पढ़ते-पढ़ते जब 'वरुद्दू इलल्लाहि मौलाहुमुल हक़्क़ि' पर पहुंचे तो एक चीख़ मारी और तड़प-तड़प कर मर गए। और भी इसी क़िस्म के वाक़िआत कसरत से गुज़रे हैं।

हज़रत फ़ुज़ैल रह० मशहूर बुज़ुर्ग फ़र्माते हैं कि अल्लाह का ख़ौफ़ हर ख़ैर की तरफ़ रहबरी करता है। हज़रत शिब्ली रह० के नाम से सभी वाक़िफ़ हैं। वह कहते हैं कि जब से मैं भी अल्लाह से डरा हूं, उसकी वजह से मुझ पर हिक्मत और इबरत[2] का ऐसा दरवाज़ा खुला है जो इससे पहले नहीं खुला।

हदीस में आया है, अल्लाह जल्ल शानुहू फ़र्माते हैं कि मैं अपने बंदे पर दो ख़ौफ़ जमा नहीं करता और दो बे फ़िक्रियां नहीं देता। अगर दुनिया में मुझ से बेफ़िक्र रहे तो क़यामत में डराता हूं, और दुनिया में डरता रहे तो आख़िरत में बेफ़िक्री अता करता हूँ। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जो अल्लाह से डरता है, उससे हर चीज़ डरती है और जो ग़ैर-अल्लाह से डरता है, उसको हर चीज़ डराती है।

यह्या बिन मुआज़ कहते हैं कि आदमी बेचारा अगर जहन्नम से इतना डरने लगे जितना तंगदस्ती से डरता है, तो सीधा जन्नत में जाये। अबू सुलैमान दारानी कहते हैं कि जिस दिल से अल्लाह का ख़ौफ़ जाता रहता है, वह बर्बाद हो जाता है। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जिस आंख से अल्लाह के ख़ौफ़ की वजह से ज़रा-सा आंसू ख़्वाह मक्खी के सर के बराबर ही क्यों न हो, निकल कर चेहरे पर गिरता है, अल्लाह तआला उस चेहरे को आग पर हराम फ़र्मा देता है। हुज़ूर सल्ल० का एक और इर्शाद है कि जब मुसलमान का दिल अल्लाह के ख़ौफ़ से कांपता है तो उसके गुनाह ऐसे झड़ते हैं जैसे दरख़्तों से पत्ते झड़ते हैं। मेरे नबी सल्ल० का एक और इर्शाद

---

1. क़ियामुल्लैल, 2. सबक़।

है कि जो शख़्स अल्लाह के ख़ौफ़ से रोये उसका आग में जाना ऐसा ही मुश्किल है जैसा दूध का थनों में वापस जाना।

हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ि० एक सहाबी हैं। उन्होंने हुज़ूर सल्ल० से पूछा कि निजात का रास्ता क्या है। आपने फ़र्माया कि अपनी ज़बान को रोके रखो, घर में बैठे रहो, और अपनी ख़ताओं पर रोते रहो। हज़रत आइशा रज़ि० ने एक मर्तबा दर्याफ़्त किया कि आपकी उम्मत में कोई ऐसा भी है जो बे हिसाब-किताब जन्नत में दाख़िल हो। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया हां, जो अपने गुनाहों को याद करके रोता रहे।

मेरे आक़ा सल्ल० का एक और इर्शाद है कि अल्लाह के नज़दीक दो क़तरों से ज़्यादा कोई क़तरा पसन्द नहीं-एक आंसू का क़तरा जो अल्लाह के ख़ौफ़ से निकला हो, दूसरा ख़ून का क़तरा जो अल्लाह के रास्ते में गिरा हो। एक जगह इर्शाद है कि क़यामत के दिन सात आदमी ऐसे होंगे जिन को अल्लाह जल्ल शानुहू अपना साया अता फ़र्मायेंगे-एक वह शख़्स जो तन्हाई में अल्लाह को याद करे और उसकी वजह से उसकी आंखों से आंसू बहने लगें।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० का इर्शाद है, कि जो रो सकता हो, वह रोये और जिसको रोना न आये, वह रोने की सूरत ही बना ले। मुहम्मद बिन मुन्कदिर रज़ि० जब रोते थे तो आंसुओं को अपने मुंह और दाढ़ी से पोंछते थे और कहते थे कि मुझे यह रिवायत पहुंची है कि जहन्नम की आग उस जगह को नहीं छूती जहां आंसू पहुंचे हों।

साबित बनानी रह० की आंखें दुखने लगीं। तबीब ने कहा कि एक बात का वायदा कर लो, आंख अच्छी हो जावेगी कि रोया न करो। कहने लगे, आंख में कोई ख़ूबी ही नहीं अगर वह रोये नहीं। यज़ीद बिन मैसरा रह० कहते हैं कि रोना सात वजह से होता है, 1. ख़ुशी से, 2. जुनून से, 3. दर्द से, 4. घबराहट से, 5. दिखलावे से, 6. नशा से और 7. अल्लाह के ख़ौफ़ से। यही है वह रोना कि उसका एक आंसू भी आग के समुद्रों को बुझा देता।

कअब अह्बार रज़ि० कहते हैं कि उस ज़ात की क़सम! जिसके कब्ज़े में मेरी जान है कि अगर मैं अल्लाह के ख़ौफ़ से रोऊं और आंसू मेरे रुख़सार पर बहने लगें, यह मुझे इससे ज़्यादा पसन्द है कि पहाड़ के बराबर सोना सदक़ा करूं। इनके अलावा

और भी हज़ारों इर्शादात हैं, जिनसे मालूम होता है की अल्लाह कि याद में और अपने गुनाहों के फ़िक्र में रोना कीमिया है और बहुत ही ज़रूरी और मुफ़ीद और अपने गुनाहो पर नज़र करके यही हालत होनी चाहिए। लेकिन इसके साथ ही यह भी ज़रूरी है कि अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रहमत की उम्मीद में भी कमी न हो, यकीनन अल्लाह की रहमत हर शै को वसीअ है। हज़रत उमर रज़ि० का इर्शाद है कि अगर क़यामत में यह एलान हो कि एक शख़्स के सिवा सब को जहन्नम में दाख़िल करो तो मुझे अल्लाह की रहमत से यह उम्मीद है कि वह शख़्स मैं ही हूं। और अगर यह एलान हो कि एक शख़्स के सिवा सब को जन्नत में दाख़िल करो, तो मुझे अपने आमाल से यह ख़ौफ़ है कि वह शख़्स मैं ही न हूं। इसलिए दोनों चीजो को अलाहिदा-अलाहिदा समझना और रखना चाहिए। बिलख़ुसूस मौत के वक़्त में उम्मीद का मामला ज़्यादा होना चाहिए।

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि तुम में से कोई शख़्स न मरे, मगर अल्लाह तआला के साथ हुस्न ज़न रखता हो। इमाम अहमद बिन हंबल रह० का जब इन्तिक़ाल होने लगा तो उन्होंने अपने बेटे को बुलाया और फ़र्माया कि ऐसी अहादीस मुझे सुनाओ जिन से अल्लाह तआला के साथ उम्मीद बढ़ती हो।

तीसरा बाब

सहाबा किराम रज़ि० अन्हुम अज्मईन के ज़ुह्द और फ़क़्र के बयान में

इस बारे में ख़ुद नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपना मामूल और वाक़िआत जो इस अम्र पर दलालत करते हैं कि यह चीज़ हुज़ूर सल्ल० की ख़ुद इख़्तियार फ़र्मायी हुई और पसन्द की हुई थी, इतनी कसरत से हदीस की किताबों में पाये जाते हैं कि इनका मिसाल के तौर पर भी जमा करना मुश्किल है। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि फ़क़्र[1] मोमिन का तोहफ़ा है।

1. हुज़ूर सल्ल० का पहाड़ों को सोना बना देने से इंकार

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि मेरे रब ने मुझ पर यह पेश किया कि मेरे लिए मक्का के पहाड़ों को सोना बना दिया जावे। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह! मुझे तो यह पसन्द है कि एक दिन पेट भर कर खाऊं तो दूसरे दिन भूखा रहूं ताकि जब भूखा रहूं तो तेरी तरफ़ज़ारी करूं और तुझे याद करूं और जब पेट भरूं तो तेरा शुक्र करूं, तेरी तारीफ़ करूं।[2]

फ़– यह उस ज़ाते मुक़द्दस का हाल है, जिसके हम नाम लेवा हैं और उसकी उम्मत में होने पर फ़ख़्र है, जिसकी हर बात हमारे लिए क़ाबिले इत्तिबाअ है।

---

1. त्याग, दुनिया की किसी चीज़ से लगाव न होना। 2. तिर्मिज़ी।

2. हज़रत उमर रज़ि० के वुस्अत तलब करने पर तंबीह और हुज़ूर सल्ल० के गुज़र की हालत

बीवियों की बाज़ ज़्यादतियों पर एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने क़सम खा ली थी कि एक महीने तक उनके पास न जाऊंगा, ताकि उनको तंबीह हो और अलाहिदा ऊपर एक हुजरे में क़याम फ़र्माया था। लोगों में यह शोहरत हो गई कि हुज़ूर सल्ल० ने सबको तलाक़ दे दी। हज़रत उमर रज़ि० उस वक़्त अपने घर थे, जब यह ख़बर सुनी तो दौड़े हुए आए, मस्जिद में देखा कि लोग मुतफ़र्रिक[1] तौर पर बैठे हुए हुज़ूर सल्ल० के रंज और गुस्से की वजह से रो रहे हैं, बीवियां भी सब अपने-अपने घरों में रो रही हैं। अपनी बेटी हज़रत हफ़्सा रज़ि० के पास तशरीफ़ ले गए, वह भी मकान में रो रही थीं। फ़र्माया कि अब क्यों रो रही है? क्या मैं हमेशा इससे नहीं डराया करता था कि हुज़ूर सल्ल० की नाराज़गी की कोई बात न किया कर। इसके बाद मस्जिद में तशरीफ़ लाए। वहां एक जमाअत मिम्बर के पास बैठी रो रही थी। थोड़ी देर वहां बैठे रहे, मगर शिद्दते रंज से बैठा न गया, तो हुज़ूर सल्ल० जिस जगह तशरीफ़ फ़र्मा थे उसके क़रीब तशरीफ़ ले गए और हज़रत रिबाह रज़ि० एक ग़ुलाम के ज़रिये से जो दोबारी के ज़ीने पर पांव लटकाये बैठे थे, अन्दर हाज़िरी की इजाज़त चाही। उन्होंने हाज़िरे ख़िदमत होकर हज़रत उमर रज़ि० के लिए इजाज़त मांगी मगर हुज़ूर सल्ल० ने सुकूत[2] फ़र्माया, कोई जवाब न दिया। हज़रत रिबाह रज़ि० ने आकर यही जवाब उमर रज़ि० को दे दिया कि मैंने अर्ज़ कर दिया था, मगर कोई जवाब नहीं मिला। हज़रत उमर रज़ि० मायूस होकर मिम्बर के पास आ बैठे मगर बैठा न गया तो फिर थोड़ी देर में हाज़िर होकर हज़रत रिबाह रज़ि० के ज़रिए से इजाज़त चाही। इसी तरह तीन बार पेश आया कि यह बेताबी से ग़ुलाम के ज़रिए इजाज़त हाज़िरी की मांगते। उधर से जवाब में सुकूत और ख़ामोशी ही होती। तीसरी बार जब लौटने लगे तो हज़रत रिबाह रज़ि० ने आवाज़ दी और कहा कि तुम्हें हाज़िरी की इजाज़त हो गई। हज़रत उमर रज़ि० हाज़िरे ख़िदमत हुए तो देखा कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बोरिए पर लेटे हुए हैं, जिस पर कोई चीज़ बिछी हुई नहीं है, इस वजह से जिस्मे अतहर पर बोरिए के निशानात भी उभर आये हैं। ख़ूबसूरत बदन पर निशानात साफ़ नज़र आया ही करते हैं और सरहाने एक चमड़े

---

1. अलग-अलग, 2. ख़ामोशी।

का तकिया है जिसमें खजूर की छाल भरी हुई है। मैंने सलाम किया और सबसे अव्वल तो यह पूछा, क्या आपने बीवियों को तलाक़ दे दी है? आपने फ़र्माया, नहीं। इसके बाद मैंने दिलबस्तगी के तौर पर हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! हम क़ुरैशी लोग औरतों पर ग़ालिब रहते थे, मगर जब मदीना आये तो देखा कि अन्सार की औरतें मर्दों पर ग़ालिब हैं। उनको देखकर क़ुरैशी की औरतें भी उससे मुतास्सिर हो गयीं। इसके बाद मैंने एक आध बात और की, जिससे नबी अकरम सल्ल० के चेहरा-ए-अनवर पर तबस्सुम के आसार ज़ाहिर हुए। मैंने देखा कि घर का कुल सामान यह था, तीन चमड़े बग़ैर दबाग़त दिये हुए और एक मुट्ठी जौ, एक कोने में पड़े हुए थे। मैंने इधर-उधर नज़र दौड़ाकर देखा तो इसके सिवा कुछ न मिला। मैं देखकर रो दिया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि क्यों रो रहे हो? मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाहु! क्यों न रोऊं कि यह बोरिए के निशानात आपके बदने मुबारक पर पड़ रहे हैं और घर की कुल कायनात यह है जो मेरे सामने है। फिर मैंने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! दुआ कीजिए कि आपकी उम्मत पर भी वुसअत हो यह रूम व फ़ारस बेदीन होने के बावजूद कि अल्लाह की इबादत नहीं करते, इन पर तो यह वुसअत, यह क़ैसर व कसरा तो बाग़ों और नहरों के दर्मियान हों और आप अल्लाह के रसूल और ख़ास बन्दे होकर यह हालत। नबी सल्ल० तकिया लगाये हुए लेटे थे। हज़रत उमर रज़ि० की यह बात सुनकर बैठ गए और फ़र्माया कि उमर! क्या अब तक इस बात के अन्दर शक में पड़े हुए हो। सुनो, आख़िरत की वुसअत दुनिया की वुसअत से बहुत बेहतर है। इन कुफ़्फ़ार की तय्यिबात[1] और अच्छी चीजें दुनिया में मिल गयीं और हमारे लिए आख़िरत में हैं। हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मेरे लिए इस्तिग़फ़ार फ़र्मायें कि वाक़ई मैंने ग़लती की।[2]

फ़- यह दीन व दुनिया के बादशाह और अल्लाह के लाडले रसूल सल्ल० का तर्ज़े अमल है कि बोरिए पर कोई चीज़ बिछी हुई भी नहीं, निशानात बदन पर पड़े हुए हैं, घर के साज़ व सामान का हाल भी मालूम हो गया, उस पर एक शख़्स ने दुआ की दरख़्वास्त की तो तंबीह फ़र्माई। हज़रत आइशा रज़ि० से किसी ने पूछा था कि आपके घर में हुज़ूर सल्ल० का बिस्तरा कैसा था। फ़र्माया कि एक चमड़े का था, जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी। हज़रत हफ़्सा रज़ि० से भी किसी ने पूछा कि आपके घर में हुज़ूर सल्ल० का कैसा बिस्तर था, फ़र्माया कि एक टाट था, जिसको दोहरा करके हुज़ूरे सल्ल० के नीचे बिछा देती थी। एक रोज़ मुझे ख़्याल हुआ कि

1. साफ़ सुथरी पाक चीजें, 2. फ़त्ह।

अगर इसको चोहरा करके बिछा दूं तो ज़्यादा नर्म हो जाए। चुनांचे हमने बिछा दिया। हुज़ूर सल्ल० ने सुबह को फ़र्माया कि रात क्या बिछा दिया था। हमने अर्ज़ कर दिया कि वही टाट था, उसको चोहरा कर दिया था, फ़र्माया, उसको वैसा ही कर दो जैसा पहले था। उसकी नर्मी रात को उठने में मानेअ[1] बनती है। अब हम लोग अपने नर्म-नर्म और रोएंदार गद्दों पर भी निगाह डालें कि अल्लाह ने किस क़दर वुसअत फ़र्मा रखी है और फिर भी बजाय शुक्र के हर वक़्त तंगी की शिकायत ही ज़बान पर रहती हैं।

3. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० की भूख में हालत

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० एक मर्तबा कतान के कपड़े में नाक साफ़ करके फ़र्माने लगे, क्या कहने अबूहुरैरह के, आज कतान के कपड़े में नाक साफ़ करता है, हालांकि मुझे वह ज़माना भी याद है जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मिम्बर और हुज्रे के दर्मियान बेहोश पड़ा हुआ होता था, और लोग मजनून समझकर पांव से गर्दन दबाते थे, हालांकि जुनून नहीं था, बल्कि भूख थी।

फ़— यानी भूख की वजह से कई-कई रोज़ का फ़ाक़ा हो जाता था। बेहोशी हो जाती थी और लोग समझते थे कि जुनून हो गया। कहते हैं कि उस ज़माने में मजनून का इलाज गर्दन को पांव से दबाने से किया जाता था। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० बड़े साबिर और क़ानेअ[2] लोगों में थे। कई-कई वक़्त फ़ाक़े में गुज़र जाते थे। हुज़ूर सल्ल० के बाद अल्लाह ने फ़तूहात फ़र्माई तो उन पर तवंगरी आई। इसके साथ ही बड़े आबिद थे। उनके पास एक थैली थी जिसमें ख़जूर की गुठलियां भरी रहतीं, उस पर तस्बीह पढ़ा करते। जब वह सारी थैली खाली हो जाती, तो बांदी फिर भरकर उसका पास रख देती। उनका यह भी मामूल था कि ख़ुद और बीवी और ख़ादिम तीन आदमी रात के तीन हिस्से कर लेते और नम्बरवार एक शख़्स तीनों में से इबादत में मशग़ूल रहता।[3] मैंने अपने वालिद साहब रह० से सुना कि मेरे दादा साहब रह० का भी तक़रीबन यही मामूल था कि रात को एक बजे तक वालिद साहब रह० मुताला में मशग़ूल रहते। एक बजे दादा साहब तहज्जुद के लिए उठते, तो तक़ाज़ा फ़र्माकर वालिद साहब को सुला देते और ख़ुद तहज्जुद में मशग़ूल हो जाते और सुबह से तक़रीबन पौन घण्टा क़ब्ल मेरे ताया साहब रह० को तहज्जुद के लिए जगा देते

---

1. रुकावट, रोक, 2. थोड़े पर बस करने वाले, 3. तज़्किरतल हुफ़्फ़ाज़,

और ख़ुद इत्तिबाए सुन्नत[1] में आराम फ़र्माते।

अल्लाहुम्मर्ज़ुक़्नी इत्तिबाअहुम०

4. हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० का बैतुलमाल से वज़ीफ़ा

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० के यहां कपड़े की तिजारत होती थी और इसी से गुज़र औक़ात था। जब ख़लीफ़ा बनाये गए तो हस्बे मामूल सुबह को चन्द चादरें हाथ पर डालकर बाज़ार में फ़रोख़्त के लिए तशरीफ़ ले चले। रास्ते में हज़रत उमर रज़ि० मिले पूछा, कहां चले फ़र्माया, बाज़ार जा रहा हूँ। हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज़ किया कि अगर तुम तिजारत में मशग़ूल रहोगे तो ख़िलाफ़त के काम का क्या होगा? फ़र्माया, फिर अह्ल व अयाल को कहां से खिलाऊं। अर्ज़ किया कि अबू उबैदा रज़ि० जिनको हुज़ूर सल्ल० ने अमीन होने का लक़ब दिया है, उनके पास चलें, वह आपके लिए बैतुल माल से कुछ मुक़र्रर कर देंगे। दोनों हज़रात उनके पास तशरीफ़ ले गए, तो उन्होंने एक मुहाजिरी को जो औसतन मिलता था, न कम, न ज़्यादा, वह मुक़र्रर फ़र्मा दिया। एक मर्तबा बीवी ने दरख़्वास्त की कि कोई मीठी चीज़ खाने को दिल चाहता है। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने फ़र्माया कि मेरे पास तो दाम नहीं, कि ख़रीदूं। अह्लिया ने अर्ज़ किया कि हम अपने रोज़ के खाने में से थोड़ा-थोड़ा बचा लिया करें, कुछ दिनों में इतनी मिक़्दार हो जाएगी। आपने इजाज़त फ़र्मा दी। अह्लिया ने कई रोज़ में कुछ थोड़े से पैसे जमा किये। आपने फ़र्माया कि तजुर्बे से यह मालूम हुआ कि इतनी मिक़्दार हमें बैतुलमाल से ज़्यादा मिलती है इसलिए जो अह्लिया ने जमा किया था, वह भी बैतुलमाल में जमा कर दिया और आइन्दा के लिए उतनी मिक़्दार जितना उन्होंने रोज़ाना जमा किया था, अपनी तनख़्वाह में से कम कर दिया।

फ़ — इतने बड़े ख़लीफ़ा और बादशाह पहले से अपनी तिजारत भी करते थे और वह ज़रूरियात को काफ़ी भी थी, जैसा कि उस एलान से मालूम होता है जो बुख़ारी में हज़रत आइशा रज़ि० से मरवी है कि जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० ख़लीफ़ा बनाये गए तो आपने फ़र्माया कि मेरी क़ौम को यह बात मालूम है कि मेरा

1. सुन्नत की पैरवी में।

पेशा-ए-तिजारत मेरे अह्ल व अयाल के ख़र्च को ना-काफ़ी नहीं था, लेकिन अब ख़िलाफ़त की वजह से मुसलमानों के कारोबार में मशग़ूली है, इसलिए बैतुलमाल से मेरे अह्ल व आयल का खाना मुक़र्रर होगा। इसके बावजूद हज़रत अबूबक्र रज़ि० का विसाल होने लगा तो हज़रत आइशा रज़ि० को वसीअत फ़र्माई कि मेरी ज़रूरतों में जो चीज़ें बैतुलमाल की हैं वह मेरे बाद आने वाले ख़लीफ़ा के हवाले कर दी जायें। हज़रत अनस रज़ि० फ़र्माते हैं कि आपके पास कोई दीनार और दिरहम नहीं था, एक ऊंटनी दूध की, एक प्याला, एक ख़ादिम था। बाज़ रिवायात में एक ओढ़ना, एक बिछौना भी आया है। यह अश्या[1] हज़रत उमर रज़ि० के पास जब नियाबत में पहुंची, तो आपने फ़र्माया कि अल्लाह तआला अबूबक्र रज़ि० पर रहम फ़र्माएं कि अपने से बाद वाले को मशक़्क़त में डाल गए।[2]

5. हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० का बैतुलमाल से वज़ीफ़ा

हज़रत उमर रज़ि० भी तिजारत किया करते थे। जब ख़लीफ़ा बनाये गये तो बैतुल माल से वज़ीफ़ा मुक़र्रर हुआ। मदीना-ए-तय्यबा में लोगों को जमा फ़र्मा कर इर्शाद फ़र्माया कि मैं तिजारत किया करता था। अब तुम लोगों ने इसमें मशग़ूल कर दिया। इसलिए अब गुज़ारे की क्या सूरत हो। लोगों ने मुख़्तलिफ़ मिक़्दारें तज्वीज़ कीं। हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हु चुप बैठे थे। हज़रत उमर रज़ि० ने दर्याफ़्त किया तुम्हारी क्या राय है? आपने फ़र्माया तवस्सुत[3] के साथ जो तुम्हें और तुम्हारे घर वालों को काफ़ी हो जाए? हज़रत उमर रज़ि० ने इस राय को पसन्द फ़र्माया और क़ुबूल कर लिया और मुतवस्सित मिक़्दार तज्वीज़ हो गई। इसके बाद एक मर्तबा एक मज्लिस में, जिसमें ख़ुद हज़रत अली रज़ि० भी थे और हज़रत उस्मान रज़ि० हज़रत ज़ुबैर रज़ि०, हज़रत तलहा शरीक थे, यह ज़िक्र आया कि हज़रत उमर रज़ि० के वज़ीफ़े में इज़ाफ़ा करना चाहिए कि गुज़र में तंगी होती है, मगर उन से अर्ज़ करने की हिम्मत न हुई, इसलिए इनकी साहबज़ादी हज़रत हफ़्सा रज़ि० जो हुज़ूर सल्ल० की बीवी होने की वजह से उम्मुल मोमिनीन भी थीं, उनकी ख़िदमत में यह हज़रात तशरीफ़ ले गए और इनके ज़रिए से हज़रत उमर रज़ि० की इजाज़त और राय मालूम करने की कोशिश

1. चीज़ें, 2. फ़त्ह 3. द र्मियाना ख़र्च,

की और साथ ही यह भी कह दिया कि हम लोगों के नाम न मालूम हों। हज़रत हफ़्सा रज़ि० ने जब हज़रत उमर रज़ि० से इसका तज़्किरा किया तो चेहरे पर ग़ुस्से के आसार ज़ाहिर हुए। हज़रत उमर रज़ि० ने नाम दर्याफ़्त किये[1]। हज़रत हफ़्सा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि पहले आपकी राय मालूम हो जाये। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़र्माया कि मुझे उनके नाम मालूम हो जाते, तो उनके चेहरे बदल देता, यानी ऐसी सख़्त सज़ाएं देता कि मुंह पर निशान पड़ जाते। तू ही बता कि हुज़ूर सल्ल० का उम्दा से उम्दा लिबास तेरे घर में क्या था। उन्होंने अर्ज़ किया कि दो कपड़े गेरुवी रंग के जिनको हुज़ूर सल्ल० जुमा के दिन या किसी वफ़्द की वजह से पहनते थे, फिर फ़र्माया कि कौन सा खाना तेरे यहां अच्छे से अच्छा खाया जाता। अर्ज़ किया कि हमारा खाना जौं की रोटी थी। हमने गर्म-गर्म रोटी पर घी के डिब्बे की तलछट-उलट कर उसको एक मर्तबा चुपड़ दिया तो हुज़ूर सल्ल० ख़ुद भी इसको मज़े लेकर नोश फ़र्मा रहे थे और दूसरों को भी खिलाते थे। फ़र्माया, कौन-सा बिस्तर उम्दा होता था, जो तेरे यहां बिछाते थे। अर्ज़ किया, एक मोटा सा कपड़ा था, गर्मी में इसको चौहरा करके बिछा लेते थे और सर्दी में आधे को बिछा लेते, और आधे को ओढ़ लेते, फ़र्माया कि हफ़्सा (रज़ि०) उन लोगों तक यह बात पहुंचा दे कि हुज़ूर सल्ल० ने अपने तर्ज़े अमल से एक अन्दाज़ा मुक़र्रर फ़र्मा दिया और उम्मीद (आख़िरत) पर किफ़ायत फ़र्माई। मैं भी हुज़ूर सल्ल० का इत्तिबाअ[2] करूंगा। मेरी मिसाल और मेरे दो साथी हुज़ूर अक़्सद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० की मिसाल उन तीनों शख़्सों की सी है जो एक रास्ते पर चले। पहला शख़्स एक तोशा ले कर चला और मक़्सद को पहुंच गया। दूसरे ने भी पहले का इत्तिबाअ किया और उसी के तरीक़े पर चला, वह भी पहले के पास पहुंच गया। फिर तीसरे शख़्स ने चलना शुरू किया। अगर वह इन दोनों के तरीक़े पर चलेगा तो उनके साथ मिल जाएगा और अगर उनके तरीक़े के ख़िलाफ़ चलेगा तो कभी भी उनके साथ नहीं मिल सकेगा।[2]

फ़ – यह उस शख़्स का हाल है जिससे दुनिया के बादशाह डरते थे, कांपते थे कि किस ज़ाहिदाना ज़िन्दगी के साथ उम्र गुज़ार दी। एक मर्तबा आप ख़ुत्बा पढ़ रहे थे और आपकी लुंगी में 12 पैवंद थे, जिन में से एक चमड़े का भी था। एक मर्तबा जुमा की नमाज़ के लिए तशरीफ़ लाने में देर हो गई तो तशरीफ़ लाकर माज़रत फ़र्माई कि मुझे अपने कपड़े धोने में देर हो गई और इन कपड़ों के अलावा और थे

1. पैरवी, 2. अशहर,

नहीं।[1] एक बार हज़रत उमर खाना नोश फ़र्मा रहे थे, ग़ुलाम ने आकर अर्ज़ किया कि उत्बा बिन अबी फरक़द रज़ि० हाज़िर हुए हैं। आपने अन्दर आने की इजाज़त फ़र्माई और खाने की तवाज़ो फ़र्माई, वह शरीक हो गए तो ऐसा मोटा खाना था कि निगला न गया। उन्होंने अर्ज़ किया कि छने हुए आटे का खाना भी तो हो सकता था। आपने फ़र्माया, क्या सब मुसलमान मैदा खा सकते हैं ? अर्ज़ किया कि सब तो नहीं खा सकते। फ़र्माया कि अफ़सोस तुम यह चाहते हो कि मैं अपनी सारी लज़्ज़तें दुनिया ही में ख़त्म कर दूं।[2] इस क़िस्म के सैकड़ों-हज़ारों नहीं बल्कि लाखों वाक़िआत इन हज़राते किराम के हैं। उनका इत्तिबाअ न अब हो सकता है, न हर एक शख़्स को करना चाहिए कि क़ुवा ज़ईफ़ हैं, जिसकी वजह से तहम्मुल भी उनका इस ज़माने में दुश्वार है। इसी वजह से इस ज़माने में मशायख़ तसव्वुफ़ ऐसे मुजाहदों की इजाज़त नहीं देते, जिससे ज़ोफ़ पैदा हो कि क़ुव्वतें पहले ही से ज़ईफ़ हैं, इन हज़रात को अल्लाह जल्ल शानुहू ने क़ुव्वतें भी अता फ़र्माई थीं। अलबत्ता, यह ज़रूरी है कि इत्तिबाअ की ख़्वाहिश और तमन्ना ज़रूर रखना चाहिए कि उस की वजह से आराम तलबी में कुछ कमी वाक़े हो और निगाह कुछ तो नीची रहे और इस ज़माने के मुनासिब ऐतदाल पैदा हो जायें कि हम लोग हर वक़्त लज़्ज़ाते दुनिया में बढ़ते जाते हैं और हर शख़्स अपने से ज़्यादा माल व दौलत वाले की तरफ़ निगाह रखता है और इस हसरत में मरा जाता है कि फ़्लां शख़्स मुझ से ज़्यादा वुसअत में हैं।[3]

6. हज़रत बिलाल रज़ि० का हुज़ूर सल्ल० के लिए एक मुश्रिक से क़र्ज़

हज़रत बिलाल रज़ि० से एक साहब ने पूछा कि हुज़ूरे अक़्सद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इख़राजात[4] की क्या सूरत होती थी ? हज़रत बिलाल रज़ि० ने फ़र्माया कि हुज़ूर सल्ल० के पास कुछ जमा तो रहता ही नहीं था, यह ख़िदमत मेरे सुपुर्द थी, जिसकी सूरत यह थी कि कोई मुसलमान भूखा आता, तो हुज़ूर अक़्सद सल्ल० मुझे इर्शाद फ़र्मा देते। मैं कहीं से क़र्ज़ लेकर उसको खाना खिला देता। कोई नंगा आता, तो मुझे इर्शाद फ़र्मा देते, मैं किसी से क़र्ज़ लेकर उसको कपड़ा बनवा देता। यह सूरत होती रहती थी। एक मुश्रिक एक मर्तबा मुझे मिला। उसने मुझ

1. अशहर, 2. असदुलग़ाबा, 3. जिस्म की ताक़त कमज़ोर है, 4. ख़र्चे,

से कहा कि मुझे वुसअत और सरवत हासिल है, तू किसी से कर्ज न लिया कर जब ज़रूरत हुआ करे तो मुझ से ही कर्ज लिया कर, मैंने कहा, इससे बेहतर क्या होगा। उस से क़र्ज लेना शुरू कर दिया। जब इर्शाद आली होता उस से क़र्ज ले आता और इर्शाद वाला की तामील कर देता। एक बार वुज़ू कर के अज़ान कहने के लिए खड़ा ही था कि वही मुश्रिक एक जमाअत के साथ आया और कहने लगा, ओ हब्शी ! मैं उधर मुतवज्जह हुआ तो एकदम बेतहाशा गालियां देने लगा और बुरा-भला जो मुंह में आया, कहा और कहने लगा कि महीना ख़त्म होने में कितने दिन बाकी हैं। मैंने कहा, क़रीब ख़त्म के हैं। कहने लगा कि चार दिन बाकी है। अगर महीने के ख़त्म तक मेरा सब क़र्ज़ा अदा न किया तो तुझे अपने क़र्ज़े में गुलाम बनाऊंगा और उसी तरह बकरियां चराता फिरेगा, जैसा पहले था। यह कह कर चला गया। मुझ पर दिन भर जो गुज़रना चाहिए था, वही गुज़रा। तमाम दिन रन्ज व सदमा सवार रहा और इशा की नमाज़ के बाद हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में तंहाई में हाज़िर हुआ और सारा क़िस्सा सुनाया और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! न आपके पास इस वक़्त अदा करने को फ़ौरी इन्तिज़ाम है और न खड़े-खड़े मैं कोई इन्तिज़ाम कर सकता हूं। वह ज़लील करेगा, इसलिए अगर इजाज़त हो तो इतने कर्ज उतरने का इन्तिज़ाम हो, मैं कहीं रूपोश हो जाऊं, जब आप के पास कहीं से कुछ आ जायेगा, मैं हाज़िर हो जाऊंगा। यह अर्ज़ करके मैं घर आया, तलवार ली, ढाल उठाई, जूता उठाया, यही सामाने सफ़र था और सुबह होने का इन्तिज़ार करता रहा कि सुबह के क़रीब कहीं चला जाऊंगा। सुबह क़रीब ही थी कि एक साहब दौड़े हुए आये कि हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में जल्दी चलो। मैं हाज़िरे ख़िदमत हुआ तो देखा कि चार ऊंटनियां, जिन पर सामान लदा हुआ था, बैठी हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, ख़ुशी की बात सुनाऊं कि अल्लाह तआला ने तेरे क़र्ज़े[1] की बे बाक़ी का इन्तिज़ाम फ़र्मा दिया। ये ऊंटनियां भी तेरे हवाले हैं और इनका सब समान भी, फ़िदक के रईस ने यह नज़रना मुझे भेजा है। मैंने अल्लाह का शुक्र अदा किया और ख़ुशी-ख़ुशी उनको लेकर गया और सारा क़र्ज़ा अदा करके वापस आया। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इतने मस्जिद में इन्तिज़ार फ़र्माते रहे। मैंने वापस आकर अर्ज़ किया कि हुज़ूर ! अल्लाह का शुक्र है कि हक़ तआला ने सारे क़र्ज़े से आपको सुबुक दोश कर दिया और (अब कोई चीज़ भी कर्ज़ की बाक़ी नहीं रही। हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त फ़र्माया कि सामान में से भी कुछ बाक़ी है ? मैंने अर्ज़ किया, कि जी हां, कुछ बाक़ी है ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि उसे भी तक़्सीम ही कर दे ताकि मुझे राहत हो

1. उधार लिया हुवा।

जाये। मैं घर में भी उस वक़्त तक नहीं जाने का जब तक यह तक़्सीम न हो जाये। तमाम दिन गुज़र जाने के बाद इशा की नमाज़ से फ़राग़त पर हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त फ़र्माया कि वह बचा हुआ माल तक़्सीम हो गया या नहीं ? मैंने अर्ज़ किया कि कुछ मौजूद है। ज़रूरत मन्द आये नहीं । तो हुज़ूर सल्ल० ने मस्जिद ही में आराम फ़र्माया। दूसरे दिन इशा के बाद फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, कहो जी ! कुछ है? मैंने अर्ज़ किया कि अल्लाह जल्ल शानुहु ने आपको राहत अता फ़र्माई कि वह सब निमट गया। हुज़ूर सल्ल० ने अल्लाह जल्ल जलालुहू की हम्द व सना फ़र्माई। हुज़ूर सल्ल० को यह डर हुआ कि ख़ुदा न ख़्वास्ता मौत आ जाये और कुछ हिस्सा माल का आपकी मिलक में रहे। इसके बाद घरों में तशरीफ़ ले गए और बीवियों से मिले।[1]

फ़ — अल्लाह वालों की यह भी ख़्वाहिश रहती है कि उनकी मिल्क में कुछ भी माल व मताअ न रहे, फिर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तो क्या पूछना, जो सारे नबियों के सरदार, सारे औलिया के सरताज, हुज़ूर सल्ल० को इसकी ख़्वाहिश क्यों न होती कि मैं दुनिया से बिल्कुल फ़ारिग़ हो जाऊं।

मैंने मुअत्बर ज़राए से सुना है कि हज़रत अक़्दस मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब रायपुरी नूव्वरल्लाहु मर्क़दहू का मामूल यह था कि जब नज़रानों की रक़म कुछ जमा हो जाती तो एहतमाम से मंगवा कर सब तक़्सीम फ़र्मा देते और विसाल से क़ब्ल तो अपने पहनने के कपड़े वग़ैरह भी अपने ख़ादिमे ख़ास हज़रत मौलाना शाह अब्दुल क़ादिर साहब रह० को दे दिए थे और फ़र्माया था कि बस अब तुम से मुस्तआर[2] लेकर पहन लिया करूंगा और अपने वालिद साहब रहमतुल्लाह अलैहि को मैंने बारहा देखा कि मग़रिब के बाद जो कोई रूपया पास होता, वह किसी क़र्ज़, ख़्वाह को दे देते कि कई हज़ार के मक़रूज़ थे। और यह फ़र्माया करते कि यह झगड़े की चीज़ मैं रात को अपने पास नहीं रखता। इस नौअ के बहुत से हालात अकाबिर के हैं, मगर यह ज़रूरी नहीं कि हर शैख़ का एक ही रंग हो। मशायख़ के अन्वान[3] मुख़्तलिफ़ होते हैं और चमन के फूलों में हर फूल की सूरत-सीरत मुम्ताज़ होती है।

7. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० का भूख में मस्अला दर्याफ़्त करना

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० फ़र्माते हैं कि तुम लोग उस वक़्त हमारी हालतें देखते

1. बज़्ल, 2. उधार, 3. बुज़ुर्गों के रंग,

कि हम में से बाज़ों को कई-कई वक़्त तक इतना खाना नहीं मिलता था, जिससे कमर सीधी हो सके। मैं भूख की वजह से जिगर को ज़मीन से चिपटा देता और कभी पेट के बल पड़ा रहता था और कभी पेट पर पत्थर बांध लेता था। एक मर्तबा मैं रास्ते में बैठ गया, जहां को इन हज़रात का रास्ता था। अव्वल हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० गुज़रे, मैंने उनसे कोई बात पूछना शुरू कर दी, ख़्याल था कि यह बात करते हुए घर तक लेते जायेंगे और फिर आदते शरीफ़ा के मुवाफ़िक़ जो मौजूद होगा उसमें तवाज़ो[1] ही फ़र्मायेंगे, मगर उन्होंने ऐसा न किया। ग़ालिबन ज़ेहन मुंतक़िल नहीं हुआ या अपने घर का हाल मालूम होगा कि वहां भी कुछ नहीं। इसके बाद हज़रत उमर तशरीफ़ लाये, उनके साथ भी यही सूरत पेश आई, फिर नबी अकरम सल्ल० तशरीफ़ लाये और मुझे देख कर मुस्कराये और मेरी हालत और ग़रज समझ गए, इर्शाद फ़र्माया अबू हुरैरह रज़ि० ! मेरे साथ आओ। मैं साथ हो लिया। हुज़ूर सल्ल० घर तशरीफ़ ले गए, मैं साथ अन्दर हाज़िरी की इजाज़त लेकर हाज़िर हुआ। घर में एक प्याला दूध का रखा हुआ था जो ख़िदमते अक़्दस में पेश किया गया। दर्याफ़्त फ़र्माया कि कहां से आया है, अर्ज़ किया कि फ़लां जगह से हुज़ूर सल्ल० के लिए हदिए में आया है। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, अबू हुरैरह ! जाओ अह्ले सुफ़्फ़ा को बुला लाओ। 'अह्ले सुफ़्फ़ा' इस्लाम के मेहमान शुमार होते थे। यह वह लोग थे जिनके न घर था न दर, न ठिकाना, न खाने का कोई मुस्तक़िल इन्तिज़ाम। इन हज़रात की मिक़्दार कम व बेश होती रहती थी, मगर इस क़िस्से के वक़्त 70 थी। हुज़ूर सल्ल० का यह भी मामूल था कि इनमें से दो-दो, चार-चार को खाते-पीते सहाबी का कभी-कभी मेहमान भी बना देते और ख़ुद अपना मामूल यह था कि कहीं से सदक़ा आता तो उन लोगों के पास भेज देते और ख़ुद इस में शिरकत न फ़र्माते और कहीं से हदिया आता तो उनके साथ हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ख़ुद भी उसमें शिरकत फ़र्माते। हुज़ूर सल्ल० ने बुलाने का हुक्म दिया, मुझे गरां[2] तो हुआ कि इस दूध की मिक़्दार ही क्या है, जिस पर सब को बुला लाऊं ? सब का क्या भला होगा ? एक आदमी को भी मुश्किल से काफ़ी होगा और फिर बुलाने के बाद मुझ ही को पिलाने को हुक्म होगा, इसलिये नम्बर भी आख़िर में आयेगा, जिसमें बचेगा भी नहीं। लेकिन हुज़ूर सल्ल० की इताअत बग़ैर चारा ही क्या था ? मैं गया और सबको बुला लाया। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि ले, इनको पिला। मैं एक-एक शख़्स के प्याला हवाले करता और वह ख़ूब सेर होकर पीता और प्याला मुझे वापिस देता। इसी तरह,

1. आव भगत, 2. बोझ हुआ।

सबको पिलाया और सब सैर हो गए तो हुज़ूर सल्ल० ने प्याला दस्ते मुबारक में लेकर मुझे देखा और तबस्सुम फ़र्माया, फिर फ़र्माया कि बस, अब तो मैं और तू ही बाक़ी हैं। मैंने अर्ज़ किया कि बेशक, फ़र्माया कि ले पी। मैंने पिया। इर्शाद फ़र्माया और पी। मैंने और पिया। बिल आख़िर मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! अब मैं नहीं पी सकता। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने सबका बचा हुआ ख़ुद नोश फ़र्माया।

8. हुज़ूर सल्ल० का सहाबा रज़ि० से दो शख़्सों के बारे में सवाल

नबी अक्रम सल्ल० की ख़िद्मत में कुछ लोग हाज़िर थे कि एक शख़्स सामने से गुज़रा। हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त फ़र्माया कि तुम लोगों की उस शख़्स के बारे में क्या राय है ? अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! शरीफ़ लोगों में है, वल्लाह ! इस क़ाबिल है कि अगर कहीं निकाह का पयाम दे दे तो क़ुबूल किया जाये, किसी की सिफ़ारिश कर दे तो मानी जाये। हुज़ूर सल्ल० सुनकर ख़ामोश हो गए, इसके बाद एक और साहब सामने से गुज़रे। हुज़ूर सल्ल० ने उनके मुतल्लिक़ भी सवाल किया। लोगों ने कहा, या रसूलल्लाह ! एक मुसलमान फ़क़ीर है, कहीं मंगनी करे तो ब्याहा न जाये, कहीं सिफ़ारिश करे तो क़बूल न हो, बात करे तो कोई मुतवज्जह न हो। आपने इर्शाद फ़र्माया कि इस पहले जैसों से अगर सारी दुनिया भर जाए तो इन सबसे यह शख़्स बेहतर हैं।

फ़ – मतलब यह है कि महज़ दुनियावी शराफ़त अल्लाह के यहां कुछ भी वक़अत नहीं रखती। एक मुसलमान फ़क़ीर जिसकी दुनिया में कोई भी वक़अत न हो, उसकी बात कहीं भी नहीं सुनी जाती हो, अल्लाह के नज़दीक सैकड़ों उन शुरफ़ा से बेहतर है, जिनकी बात दुनिया में बड़ी वक़अत से देखी जाती हो और हर शख़्स उनकी बात सुन्ने और मान्ने को त्यार हो। लेकिन अल्लाह के यहां उसकी कोई वक़अत न हो। दुनिया का क़याम ही अल्लाह वालों की बरकत से है। कि यह तो हदीस में ख़ुद मौजूद है कि जिस दिन दुनिया में अल्लाह का नाम लेने वाला न रहेगा, क़यामत आ जायेगी और दुनिया का वजूद भी ख़त्म हो जायेगा। अल्लाह के पाक नाम ही की यह बरकत है कि यह दुनिया का सारा निज़ाम क़ायम हैं।

9. हुज़ूर सल्ल० से मुहब्बत करने वाले पर फ़क्र की दौड़

एक सहाबी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! मुझे आपसे मुहब्बत है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, देख क्या कहता है। उन्होंने फिर यही अर्ज़ किया कि मुझे आपसे मुहब्बत है। हुज़ूर सल्ल० ने फिर यही इर्शाद फ़र्माया। जब तीन बार यह सवाल व जवाब हुआ तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि अच्छा, अगर तुम अपनी बात में सच्चे हो तो फ़क्र के ओढ़ने-बिछाने के लिए तैयार हो जाओ, इसलिये कि मुझ से मुहब्बत रखने वालों की तरफ़ फ़क्र ऐसे ज़ोर से दौड़ता है जैसा कि पानी की रौ निचान की तरफ़ दौड़ती है।

फ़ – यही वजह है कि हज़रात सहाबा किराम रज़ि० तो अक्सर फ़क्र व फ़ाक़े में रहे ही। अकाबिर मुहद्दिसीन, अकाबिर सूफ़िया, अकाबिर फ़ुक़हा भी तवंगरी में ज़्यादा नहीं रहे।

10. सरीयतुल अम्बर में फ़क्र की हालत

नबी अक्रम सल्ल० ने रजब सन् 08 हिजरी में समुन्दर के किनारे एक लश्कर तीन सौ आदमियों का जिन पर हज़रत अबूउबैदा रज़ि० अमीर बनाये गए थे, भेजा। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक थैली में खजूरों का तोशा भी उन्को दिया। पन्द्रह रोज़ इन हज़रात का वहां क़याम रहा और तोशा ख़त्म हो गया।

हज़रत क़ैस ने जो इस क़ाफ़िले में थे, मदीना मुनव्वरा में क़ीमत अदा करने के वायदे पर क़ाफ़िला वालों से ऊंट ख़रीद कर ज़िब्ह करना शुरू किए और तीन ऊंट रोज़ाना ज़िब्ह करते, मगर तीसरे दिन अमीरे क़ाफ़िला ने, इस ख़्याल से कि सवारियां ख़त्म हो गयीं, तो वापसी भी मुश्किल हो जायेगी, ज़िब्ह की मुमानअत की और सब लोगों के पास अपनी-अपनी जो कुछ खजूरें मौजूद थीं, जमा करके एक थैली में रख ली और एक-एक खजूर रोज़ाना तक्सीम फ़र्मा दिया करते, जिसको चूसकर यह हज़रात पानी पी लेते और रात तक के लिए यही खाना था। कहने को मुख़्तसर सी बात है, मगर लड़ाई के मौक़े पर जबकि क़ुव्वत और ताक़त की भी ज़रूरत हो, एक खजूर पर दिन भर गुज़ार देना, दिल व जिगर की बात है। चुनांचे हज़रत जाबिर रज़ि०

ने जब यह क़िस्सा लोगों को हुज़ूर सल्ल० के बाद सुनाया तो एक शख़्स ने अर्ज़ किया कि हज़रत ! एक खजूर क्या काम देती होगी ? आपने फ़र्माया, इसकी क़द्र जब मालूम हुई, जब यह भी न रही कि बजुज़ फ़ाक़े के कुछ भी न था। दरख़्त के ख़ुश्क पत्ते झाड़ते और पानी में भिगोकर खा लेते। मजबूरी सब कुछ करा देती है और हर तंगी के बाद अल्लाह तआला जल्ल शानुहू के यहां से सहूलियत होती है। हक़ तआला ने इन तकालीफ़ और मशक़्क़तों के बाद समुन्दर में से एक मछली उन लोगों को पहुंचाई, जिसको अम्बर कहते हैं, इतनी बड़ी थी कि अठ्ठारह रोज़ तक यह हज़रात उसमें से खाते रहे और मदीना मुनव्वरा पहुंचने तक उसका गोश्त तोशों में साथ था। हुज़ूर सल्ल० के सामने जब सफ़र का मुफ़स्सल क़िस्सा सुनाया गया, तो हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि यह अल्लाह का एक रिज़्क़ था, जो तुम्हारी तरफ़ भेजा गया।

फ़ – मशक़्क़त और तकालीफ़ इस दुनिया में ज़रूरी हैं और अल्लाह वालों को ख़ास तौर पर पेश आती हैं। इसी वजह से हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि अम्बिया अलैहिमुस्सलात, व स्सलाम को सबसे ज़्यादा मशक़्क़त में रखा जाता है फिर जो सबसे अफ़ज़ल हों। फिर उनके बाद जो बक़ीया में अफ़ज़ल हों। आदमी की आज़माइश उसकी दीनी हैसियत के मुवाफ़िक़ होती है और हर मशक़्क़त के बाद अल्लाह की तरफ़ से उसके लुत्फ़ व फ़ज़्ल से सहूलत भी अता होती है। यह भी ग़ौर किया करें कि हमारे बड़ों पर क्या-क्या गुज़र चुका और यह सब दीन ही की ख़ातिर था। इस दीन के फैलाने में, जिसको आज हम अपने हाथों से खो रहे हैं, इन हज़रात ने फ़ाक़े किए, पत्ते चाबे और अपने ख़ून बहाये और इसको फैलाया, जिस को आज हम बाक़ी भी नहीं रख सकते।

चौथा बाब

सहाबा किराम रज़ि० के तक़्वा के बयान में

हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ि० की हर आदत, हर ख़सलत इस क़ाबिल है कि उसको चुना जाए और उसका इत्तिबाअ किया जाए और क्यों न हो कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने लाडले और महबूब रसूल सल्ल० की मुराहबत के लिए इस जमाअत को चुना और छांटा। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि मैं बनी आदम के बेहतरीन

क़र्न और ज़माने में[1] भेजा गया। इसलिए हर एतबार से यह ज़माना ख़ैर का था और ज़माने के बेहतरीन आदमी हुज़ूर सल्ल० की सोहबत में रखे गए।

1. हुज़ूर सल्ल० की एक जनाज़े से वापसी और एक औरत की दावत

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम एक जनाज़े से वापस तशरीफ़ ला रहे थे कि एक औरत का पयाम खाने की दरख़्वास्त लेकर पहुंचा हुज़ूर सल्ल० ख़ुद्दाम समेत तशरीफ़ ले गए और खाना सामने रखा गया, तो लोगों ने देखा की हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० लुक़्मा चबा रहे हैं, निगला नहीं जाता। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, ऐसा मालूम होता है कि इस बकरी का गोश्त मालिक की बग़ैर इजाज़त ले लिया गया। उस औरत ने अर्ज किया, या रसूलल्लाह! मैंने रेवड़ में बकरी ख़रीदने आदमी को भेजा था, वहां मिली नहीं पड़ोसी ने बकरी ख़रीदी थी, मैंने उसके पास क़ीमत से लेने को भेजा, वह तो मिले नहीं, उनकी बीवी ने बकरी भेज दी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया क़ैदियों को खिला दो।[2]

फ़ – हुज़ूर सल्ल० की उलूवे शान[3] के मुक़ाबले में एक मुशतब्हा चीज़ का गले में अटक जाना कोई ऐसी अहम बात नहीं कि हुज़ूर के अदना ग़ुलामों को भी इस क़िस्म के वाक़िआत पेश आ जाते हैं।

2. हुज़ूर सल्ल० का सदक़ा की खजूर के ख़ौफ़ से तमाम रात जागना

एक मर्तबा नबी-ए-अक़रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तमाम रात जागते रहे और करवटें बदलते रहे। अज़वाज मुतह्हरात में से किसी ने अर्ज किया, या रसूलल्लाह आज नींद नहीं आती। इर्शाद फ़र्माया कि एक खजूर पड़ी हुई थी, मैंने उठाकर खाली थी कि ज़ाया न हो, अब मुझे यह फ़िक्र है कि कहीं वह सदक़ा की न हो।

फ़ – अक़रब यही है कि वह हुज़ूर सल्ल० की अपनी ही होगी, मगर चूंकि

---

1. शिफ़ा, 2. अबूदाऊद, 3. ऊंची शान,

सदक़ा का माल भी हुज़ूर सल्ल० के यहां आता था, इस शुब्हा की वजह से नबी अकरम सल्ल० को रात भर नींद न आई कि ख़ुदा-न-ख़्वास्ता वह सदक़ा की हो और इस सूरत में सदक़ा का माल खाया गया हो, यह तो आक़ा का हाल है कि महज़ शुब्हे पर रात भर करवटें बदलीं और नींद नहीं आई। अब ग़ुलामों का हाल देखो कि रिश्वत, सूद, चोरी, डाका हर किस्म का नाजायज़ माल किस सुर्ख़रूई से खाते हैं और नाज़ से अपने को ग़ुलामाने मुहम्मद सल्ल० शुमार करते हैं।

3. हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० का एक काहिन के खाने से क़ै करना

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० का एक ग़ुलाम था, जो ग़ल्ला[1] के तौर पर अपनी आमदनी में से हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० की ख़िदमत में पेश किया करता था। एक मर्तबा वह कुछ खाना लाया और हज़रत ने इसमें से एक लुक़्मा नोश फ़र्मा लिया। ग़ुलाम ने अर्ज़ किया कि आप रोज़ाना दर्याफ़्त फ़र्माया करते थे कि किस ज़रिए से कमाया, आज दर्याफ़्त नहीं फ़र्माया। आपने फ़र्माया कि भूख की शिद्दत की वजह से दर्याफ़्त करने की नौबत नहीं आई, अब बताओ। अर्ज़ किया कि मैं ज़माना-ए-जाहिलियत में एक क़ौम पर गुज़रा और उन पर मन्तर पढ़ा। उन्होंने मुझ से वायदा कर रखा था, आज मेरा गुज़र उधर को हुआ तो उनके यहां शादी हो रही थी। उन्होंने यह मुझे दिया था। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़र्माया कि तू मुझे हलाक ही कर देता। इसके बाद हलक़ में हाथ डालकर क़ै करने की कोशिश की मगर एक लुक़्मा वह भी भूख की शिद्दत की हालत में खाया गया, न निकाला। किसी ने अर्ज़ किया पानी से क़ै हो सकती है। एक बहुत बड़ा प्याला पानी मंगवाया और पानी पी-पीकर क़ै फ़र्माते रहे, यहां तक कि वह लुक़्मा निकाला। किसी ने अर्ज़ किया कि अल्लाह आप पर रहम फ़र्माएं। यह सारी मशक़्क़त उस एक लुक़्मे की वजह से बर्दाश्त फ़र्माई। आपने इर्शाद फ़र्माया कि अगर मेरी जान के साथ भी यह लुक़्मा निकलता, तो मैं निकालता। मैंने हुज़ूर सल्ल० से सुना है कि जो बदन माले हराम से परवरिश पाये, आग उसके लिए बेहतर है। मुझे यह डर हुआ कि मेरे बदन का कोई हिस्सा इस लुक़्मे से परवरिश न पा जाये।[2]

---

1. ग़ुलाम पर कोई तादाद तै कर दी जाये कि रोज़ाना या माहवार हमें दिया करो बाकी जो कमाओ वह तुम्हारा है यह ग़ल्ला कहलाता है यह जायज़ है और इस तरह सहाबा के ज़माने में ग़ुलामों से मुक़र्रर कर लिया जाता था। 2. मुतख़ब कंज़ुल उम्माल,

फ़ – हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० को इस क़िस्म के वाक़िआत मुत अद्दद[1] बार पेश आये कि एहतियात मिज़ाज में ज़्यादा थी। थोड़ा सा भी शुबहा हो जाता था तो क़ै फ़र्माते थे।

बुख़ारी शरीफ़ में एक और क़िस्सा इसी क़िस्म का है कि किसी ग़ुलाम ने ज़माना ए जाहिलियत में कोई कहानत यानी ग़ैब की बात नजूमियों के तौर पर किसी को बतलाई थी, वह इत्तिफ़ाक़ से सही हो गई। उन लोगों ने उस ग़ुलाम को कुछ दिया, जिसको उन्होंने अपनी मुक़र्ररा रक़म में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० को लाकर दे दिया। हज़रत ने नोश फ़र्माया और फिर जो कुछ पेट में था, सब क़ै किया। इन वाक़िआत में ग़ुलामों का माल ज़रूरी नहीं कि नाजायज़ ही हो, दोनों एहतमाल हैं, मगर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की कमाले एहतियात ने इस मुश्तबहा माल को भी गवारा न किया।

4. हज़रत उमर रज़ि० की सदक़ा के दूध से क़ै

हज़रत उमर रज़ि० ने एक मर्तबा दूध नोश फ़र्माया कि उसका मज़ा कुछ अजीब सा नया सा मालूम हुआ। जिन साहब ने पिलाया था, उन से दर्याफ़्त फ़र्माया कि यह दूध कैसा है, कहां से आया है ? उन्होंने अर्ज़ किया कि फ़्लां जंगल में सदक़ा के ऊंट चर रहे थे कि मैं वहां गया तो उन लोगों ने दूध निकाला, जिसमें से मुझे भी दिया। हज़रत उमर रज़ि० ने मुंह में हाथ डाला और सारे का सारा क़ै फ़र्मा दिया।[2]

फ़ – इन हज़रात को इसका हमेशा फ़िक्र रहता था कि मुश्तबहा माल भी बदन का जुज़ न बने चै जाए कि बिल्कुल हराम जैसा कि हमारे इस ज़माने में शाया हो गया।[3]

5. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० का एहतियातन बाग़ वक़्फ़ करना

इब्ने सीरीन रह० कहते हैं कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० की जब वफ़ात

---

1. कई, 2. मुअत्ता इमाम मालिक, 3. आम रिवाज हो गया है,

का वक़्त क़रीब आया तो आपने हज़रत आइशा रज़ि० से फ़र्माया कि मेरा दिल नहीं चाहता था कि बैतुल माल से कुछ लूँ, मगर उमर रज़ि० न माने कि दिक़्क़त होगी और तुम्हारी तिजारत की मशग़ूली से मुसलमानों का हरज होगा। इस मजबूरी से मुझे लेना पड़ा। इसलिए अब मेरा फ़्लां बाग़ इसके एवज़ में दे दिया जाए। जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० का विसाल हो गया तो हज़रत आइशा रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० के पास आदमी भेजा और वालिद की वसीयत के मुवाफ़िक़ वह बाग़ दे दिया। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़र्माया, अल्लाह तआला शानुहू तुम्हारे बाप पर रहम फ़र्मायें, उन्होंने यह चाहा कि किसी को लब कुशाई[1] का मौक़ा ही न दें।[2]

—किताबुल अम्वाल

फ़ — ग़ौर करने की बात है कि अव्वल तो वह मिक़्दार ही क्या थी जो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने ली। इसके बाद लेना भी अहलुर्राए के इस्रार से था और मुसलमानों के नफ़ा की वजह से उसमें भी जितनी मुम्किन से मुम्किन एहतियात हो सकती थी, इसका अन्दाज़ा क़िस्सा 4 बाब 3 से मालूम हो गया कि बीवी ने तंगी उठाकर, पेट काट कर कुछ दाम मीठे के लिए जमा किये तो उनको बैतुलमाल में जमा फ़र्मा दिया और इतनी मिक़्दार मुस्तक़िल कम कर दी। इस सबके बाद यह आख़िरी फ़ेल है कि जो कुछ लिया, उसका भी मुआवज़ा दाख़िल कर दिया।

6. हज़रत अली बिन माबद रह० का किराये के मकान से तहरीर को ख़ुश्क करना

अली बिन माबद रह० एक मुहद्दिस हैं, फ़र्माते हैं, मैं एक किराये के मकान में रहता था, एक मर्तबा मैंने कुछ लिखा और उसको ख़ुश्क करने के लिए मिट्टी की ज़रूरत हुई कच्ची दीवार थी। मुझे ख़्याल आया कि इस पर से ज़रा सी ख़ुरच के तहरीर पर डाल लूं, फिर ख़्याल आया कि मकान किराये का है (जो रहने के वास्ते किराये पर लिया गया, न मिट्टी लेने के वास्ते) मगर साथ ही यह ख़्याल आया कि इतनी ज़रा सी मिट्टी में क्या मज़ायक़ा है। मामूली चीज़ है। मैंने मिट्टी ले ली और रात को ख़्वाब में देखा कि एक साहब खड़े हैं, जो यह फ़र्मा रहे हैं कि कल क़यामत को मालूम होगा, यह कहना कि मामूली मिट्टी क्या चीज़ हैं।

---

1. ज़ुबान खोलना, 2. किताबुल अम्वाल, 3. बचना, , 4. एहसा

फ़ – 'कल मालूम होगा' का ब-ज़ाहिर मतलब यह है कि तक़्वा के दरजात बहुत ज़्यादा हैं, कमाल दर्जा यह यक़ीनन था कि इससे भी एहतराज़[1] किया जाता अगर्चे उर्फ़न मामूली चीज़ शुमार होने से जवाज़ की हद में था।[2]

7. हज़रत अली रज़ि० का एक क़ब्र पर गुज़र

कुमैल रज़ि० एक शख़्स हैं, कहते हैं कि मैं हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू के साथ एक मर्तबा जा रहा था। वह जंगल में पहुंचे, फिर एक मक़्बरे की तरफ़ मुतवज्जह हुए और फ़र्माया, ऐ मक़्बरे वालो ! ऐ बोसीदगी वालों ! ऐ वहशत और तन्हाई वालों ! क्या ख़बर है, क्या हाल है ? फिर इर्शाद फ़र्माया हमारी ख़बर तो यह है कि तुम्हारे बाद अम्वाल तक़्सीम हो गये। औलादें यतीम हो गयीं, बीवियों ने दूसरे ख़ाविन्द कर लिए। यह तो हमारी ख़बर है, कुछ अपनी तो कहो। इसके बाद मेरी तरफ़ मुतवज्जह हो कर फ़र्माया, कुमैल ! अगर इन लोगों को बोलने की इजाज़त होती और यह बोल सकते तो यह लोग जवाब में यह कहते हैं कि बेहतरीन तोशा तक़्वा है। यह फ़र्माया और फिर रोने लगे और फ़र्माया, ऐ कुमैल ! क़ब्र अमल का संदूक़ है और मौत के वक़्त बात मालूम हो जाती है।[3]

फ़– यानी आदमी जो कुछ अच्छा या बुरा काम करता है, वह उसकी क़ब्र में महफ़ूज़ रहता है, जैसा कि सन्दूक़ में, मुतअद्दद अहादीस में यह मज़मून वारिद हुआ है कि नेक आमाल अच्छे आदमी की सूरत में होते हैं जो मय्यत के जी बहलाने और उन्स पैदा करने के लिए रहता है और उस की दिलदारी करता है और बुरे आमाल बुरी सूरत में बदबूदार बन कर आते हैं, जो और भी अज़ीयत का सबब होता है।

एक हदीस में वारिद है कि आदमी के साथ तीन चीज़ें क़ब्र तक जाती हैं, उसका माल जैसा कि अरब में दस्तूर था, उसके रिश्तेदार और उसके आमाल। दो चीज़ें माल और रिश्तेदार दफ़न करके वापस आ जाते हैं, अमल उसके साथ रह जाता है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मर्तबा सहाबा रज़ि० से इर्शाद फ़र्माया कि तुम्हें मालूम है कि तुम्हारी मिसाल और तुम्हारे अह्ल व अयाल और माल व आमाल की मिसाल क्या है। सहाबा रज़ि० के दर्याफ़्त फ़र्माने पर हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि उसकी मिसाल ऐसी है, जैसे एक शख़्स के तीन भाई

---

1. बचना, 2. एहया, 3. अशहर,

हों और वह मरने लगे। उस वक़्त एक भाई को वह बुलाये और पूछे कि भाई तुझे मेरा हाल मालूम है कि मुझ पर क्या गुज़र रही है, इस वक़्त तू मेरी क्या मदद करेगा। वह जवाब देता है कि तेरी तीमारदारी करूंगा, इलाज करूंगा, हर क़िस्म की ख़िदमत करूंगा और जब तू मर जाएगा, तो नहलाऊंगा, कफ़न पहनाउंगा और कांधे पर उठाकर ले जाऊंगा। दफ़न के बाद तेरा ज़िक्रे ख़ैर करूंगा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, यह भाई तो अह्ल व अयाल है। फिर वह दूसरे भाई से यही सवाल करता है! वह कहता है कि मेरा तेरा वास्ता ज़िन्दगी का है। जब तू मर जाएगा तो मैं दूसरी जगह चला जाऊंगा। यह भाई माल है। फिर वह तीसरे भाई को बुलाकर पूछता है वह कहता कि मैं क़ब्र में तेरा साथी हूं, बहश्त की जगह तेरा दिल बहलाने वाला हूं। जब तेरा हिसाब-किताब होने लगे, तो नेकियों के पलड़े में बैठ कर उसको झुकाऊंगा, यह भाई अमल है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अब बताओ कौन सा भाई कारआमद हुआ। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! यही भाई कार आमद है, पहले दो तो बे-फ़ायदा ही रहे।

8. हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद, जिसका खाना हराम हो, लेना हराम

नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अल्लाह तआला शानुहू ख़ुद पाक हैं और पाक ही माल क़ुबूल फ़र्माते हैं। मुसलमानों को उसी चीज़ का हुक्म दिया जिसका अपने रसूलों को हुक्म फ़र्माया, चुनांचे कलाम पाक में इर्शाद है:-

يَا أَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوا مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَاعْمَلُوا صَالِحًا إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ

या ऐयुहर्रुसुलु कुलू मिनत्तय्यिबाति वअ्मलू सालिहन इन्नी बिमा तअ्मलून अलीम०

ऐ रसूलों! पाक चीज़ों को खाओ और नेक अमल करो। मैं तुम्हारे आमाल से बा-ख़बर हूं।

दूसरी जगह इर्शाद है।

---

1. कल

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ

या एयुहल्लज़ी न आमनू कुलू मिनत्तय्यिबाति मा रज़क़्नाकुम०

'ए ईमान वालो ! हमारे दिए हुए पाक रिज़्क़ में से खाओ। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने एक शख़्स का ज़िक्र फ़र्माया कि लंबे-लंबे सफ़र करता (और मुसाफ़िर की दुआ क़ुबूल होती है) और उसके साथ ही बिखरे हुए बालों वाला, ग़ुबार आलूद[1] कपड़ों वाला, (यानी परेशान हाल) दोनों हाथ आसमान की तरफ़ फैला कर कहता है, ऐ अल्लाह ! ऐ अल्लाह ! ऐ अल्लाह ! लेकिन खाना भी उसका हराम है, पीना भी हराम है, लिबास भी हराम है, हमेशा हराम ही खाया तो उसकी दुआ कहां क़ुबूल हो सकती है।[2]

फ़— लोगों को हमेशा सोच रहता है कि मुसलमानों की दुआएं क़ुबूल नहीं होतीं, लेकिन हालात का अन्दाज़ा इस हदीस शरीफ़ से किया जा सकता है। अगरचे अल्लाह जल्ल शानुहू अपने फ़ज़्ल से कभी काफ़िर की भी दुआ क़ुबूल फ़र्मा लेते हैं, चैजाए कि फ़ासिक़ की लेकिन मुत्तक़ी की दुआ असल चीज़ है। इसीलिए मुत्तक़ियों से दुआ की तमन्ना की जाती है। जो लोग चाहते हैं कि हमारी दुआएं क़ुबूल हों, उनको बहुत ज़रूरी है कि हराम माल से एहतराज़ करें और ऐसा कौन है जो यह चाहता है कि मेरी दुआ मक़बूल न हो।

9. हज़रत उमर रज़ि० का अपनी बीवी को मुश्क तौलने से इन्कार

हज़रत उमर रज़ि० की ख़िदमत में एक मर्तबा बहरैन से मुश्क आया, इर्शाद फ़र्माया कि कोई इसको तौल कर मुसलमानों में तक़्सीम कर देता। आपकी अहिलया हज़रत आतिका रज़ि० ने अर्ज़ किया, मैं तौल दूंगी। आपने सुनकर सुकूत फ़र्माया। थोड़ी देर में फिर यही इर्शाद फ़र्माया कि कोई इसको तौल देता ताकि मैं तक़्सीम कर देता। आप रज़ि० की अहिलया ने फिर यही अर्ज़ किया। आपने सुकूत फ़र्माया। तीसरी दफ़ा में इर्शाद फ़र्माया कि मुझे यह पसंद नहीं कि तू उसको अपने हाथ से तराज़ू के पलड़े में रखे और फिर इन हाथों को अपने बदन पर फेर ले और इतनी मिक़्दार की ज़्यादती मुझे हासिल हो।

---

1. परेशानहाल, 2. जमउल फ़वाइद।

फ़— यह कमाल एहतियात थी और अपने आपको महल्ल तोहमत[1] से बचाना वरना जो भी तौलेगा, उसके हाथ को तो लगेगा ही। इसलिए इसके जवाज़ में कोई तरद्दुद न था, लेकिन फिर हज़रत उमर रज़ि० ने अपनी बीवी के लिए उसको गवारा न फ़र्माया।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज रज़ि० जिनको उमर सानी भी कहा जाता है, इनके ज़माने में एक मर्तबा मुश्क तोला जा रहा था, तो उन्होंने अपनी नाक बन्द फ़र्मा ली, और इर्शाद फ़र्माया कि मुश्क का नफ़ा तो खुश्बू ही सूंघना है।[2]

फ़— यह है एहतियात इन सहाबा रज़ि० और ताबईन रह० की और हमारे बड़ों की पेशवाओं की।

10. हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ि० का हज्जाज के हाकिम को हाकिम न बनाना

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ि० ने एक शख़्स को किसी जगह का हाकिम बनाया, किसी शख़्स ने अर्ज़ किया कि यह साहब हज्जाज बिन यूसुफ़ के ज़माने में उसकी तरफ़ से हाकिम रह चुके हैं। उमर बिन अब्दुल अज़ीज रज़ि० ने उन हाकिम को माज़ूल[3] कर दिया। उन्होंने अर्ज़ किया कि मैंने तो हज्जाज बिन यूसुफ़ के यहां थोड़े ही ज़माना काम किया। उमर बिन अब्दुल अज़ीज रज़ि० ने फ़र्माया कि बुरा होने के लिए इतना ही काफ़ी है कि तू उसके साथ एक दिन या उससे भी कम रहा।[4]

फ़— मतलब यह है कि पास रहने का असर ज़रूर पड़ता है। जो शख़्स मुत्तक़ियों के पास रहता है, उसके ऊपर ग़ैर-मामूली और ग़ैर महसूस तरीक़े से तक़्वा का असर पड़ता है और जो फ़ासिक़ों के पास रहता है, उसके ऊपर फ़िस्क़ का असर होता है, इसी वजह से बुरी सोहबत से रोका जाता है। आदमी तो दर किनार जानवरों तक के असरात पास रहने से आते हैं।

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि फ़ख़्र और बड़ाई ऊंट और घोड़े वालों में होती है और मस्कनत[5] बकरी वालों में[6]। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि सालेह आदमी के पास बैठने वालों की मिसाल उस शख़्स की सी है, जो मुश्क वाले के पास बैठा है कि अगर मुश्क न भी मिले तब भी उसकी खुश्बू से दिमाग़ को फ़रहत होगी और

---

1. बदनामी, 2. अलग, 3. कज़, 4. एहपा, 5. कमज़ोरी, 6. बुखारी नरमी।

बुरे साथी की मिसाल आग की भट्टी वाले की सी है कि अगर चिंगारी न भी पड़े तो धुंआ तो कहीं गया ही नहीं।

पाँचवां बाब

नमाज़ का शरफ़ और शौक़ और उसमें खुशू व खुज़ूअ

नमाज़ सारी इबादतों में सबसे ज़्यादा अहम चीज़ है क़यामत में ईमान के बाद सबसे पहले नमाज़ ही का सवाल होता है। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि कुफ्र और इस्लाम के दर्मियान में नमाज़ ही आड़ है, इसके अलावा और बहुत से इर्शादात इस बारे में, वारिद हैं जो मेरे एक दूसरे रिसाले, में मज़्कूर हैं।[1]

1. अल्लाह तआला का इर्शाद नवाफ़िल वाले के हक़ में

हक़ तआला शानुहू इर्शाद फ़र्माते हैं, जो शख़्स मेरे किसी वली से दुश्मनी करता है, मेरी तरफ़ से उसको लड़ाई का एलान है और कोई शख़्स मेरा क़ुर्ब उस चीज़ की बनिस्बत ज़्यादा नहीं हासिल करता, जो मैंने उस पर फ़र्ज़ की है, यानी सब से ज़्यादा क़ुर्ब और नज़दीकी मुझसे फ़रायज़ के अदा करने से हासिल होती है और नवाफ़िल की वजह से बन्दा मुझसे क़रीब होता रहता है, यहां तक कि मैं उसको अपना महबूब बना लेता हूं, तो फिर मैं उसका कान बन जाता हूं, जिससे सुने और उस की आंख बन जाता हूं, जिससे वह देखे और उसका हाथ बन जाता हूं, जिससे वह किसी चीज़ को पकड़े और उसका पांव बन जाता हूं, जिससे वह चले। अगर वह मुझसे कुछ मांगता है तो मैं उसको अता करता हूं और किसी चीज़ से पनाह चाहता है, तो पनाह देता हूं।[2]

फ़— आंख-कान बन जाने का मतलब यह है कि उसका देखना, सुनना, चलना, फिरना, सब मेरी ख़ुशी के ताबेअ बन जाता है और कोई बात भी मेरी ख़िलाफ़े

---

1. यानी फ़ज़ाईल नमाज़ में, 2. जमउल फ़वाइद,

मर्जी नहीं होती। किस क़दर खुशनसीब हैं वह लोग जिनको फ़रायज़ के बाद नवाफ़िल पर क़रारत की तौफ़ीक़ हो और यह दौलत नसीब हो जाए। अल्लाह तआला शानुहू अपने फ़ज़्ल से मुझे और मेरे दोस्तों को भी नसीब फ़र्मायें।

2. हुज़ूर सल्ल० का तमाम रात नमाज़ पढ़ना

एक शख़्स ने हज़रते आइशा रज़ि० से दर्याफ़्त किया कि हुज़ूर सल्ल० की कोई अजीब बात, जो आपने देखी हो, वह सुना दें। हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़र्माया कि हुज़ूर सल्ल० की कौन सी बात अजीब न थी। हर बात अजीब ही थी। एक दिन रात को तशरीफ़ लाये और मेरे पास लेट गये, फिर फ़र्माने लगे, ले छोड़ मैं तो अपने रब की इबादत करूं। यह फ़र्मा कर नमाज़ के लिए खड़े हो गये और रोना शुरू किया, यहां तक कि आंसू सीनः मुबारक तक बहने लगे। फिर रुकूअ फ़र्माया, उसमें भी इसी तरह रोते रहे, फिर सजदा किया। उसमें भी इसी तरह रोते रहे। फिर सजदे से उठे। यहाँ तक कि हज़रत बिलाल रज़ि० ने आकर सुबह की नमाज़ के लिए आवाज़ दी। मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! आप इतना रोये, हालांकि आप मासूम हैं, अगले पिछले सब गुनाहों की (अगर बिलफ़र्ज़ हो भी तो) मग़्फ़िरत का वायदा अल्लाह तआला ने फ़र्मा रखा है। आपने इर्शाद फ़र्माया कि फिर मैं शुक्रगुज़ार न बनूं। इसके बाद इर्शाद फ़र्माया कि मैं ऐसा क्यों न करता, हालांकि आज मुझ पर यह आयतें नाज़िल हुईं- إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ

-'इन्नफ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल् अर्ज़ि,[1] आले इमरान का आख़िरी रुकूअ।[2]

यह मुतअद्दिद रिवायात में आया है कि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात को इस क़दर लंबी नमाज़ पढ़ा करते थे कि खड़े-खड़े पांव पर वरम आ गया था। लोगों ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! आप इतनी मशक़्क़त उठाते हैं, हालांकि आप बख़्शे बख़्शाये हैं। आपने फ़र्माया कि मैं शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूं।[3]

3. हुज़ूर सल्ल० का चार रकात में छः पारे पढ़ना

हज़रत औफ़ रज़ि० कहते हैं कि मैं एक मर्तबा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व

---

1. इक़ामतुल-हुज्जा, 2. जमउल फ़वाइद, 3. बुख़ारी।

सल्लम के हमरिकाब[1] था। हुज़ूर सल्ल० ने मिस्वाक फ़र्मायी वुज़ू फ़र्माया और नमाज़ की नीयत बांध ली। मैं भी हुज़ूर सल्ल० के साथ नमाज़ में शरीक हो गया। हुज़ूर ने सूरः बकरः एक रक्अत में पढ़ी और जो आयत रहमत की आती, हुज़ूर सल्ल० उस जगह देर तक रहमत की दुआ माँगते रहते और जो आयत अज़ाब की आती उस जगह देर तक अज़ाब से पनाह मांगते रहते। सूरः के ख़त्म पर रुकूअ किया और उतना ही लम्बा रुकूअ किया, जितनी देर में सूरः बकरः पढ़ी जाती और रुकूअ में

سُبْحَانَ ذِي الْجَبَرُوتِ وَالْمَلَكُوتِ وَالْعَظَمَةِ

'सुब्हान ज़िल् जब रूति वल मलकूति वल् अज़मति०

पढ़ते जाते थे फिर उतना ही लंबा सज्दा किया फिर दूसरी रक्अत में इसी तरह सूरः आले इम्रान पढ़ी और इसी तरह एक-एक रक्अत में एक-एक सूरः पढ़ते रहे। इस तरह चार रक्अतों में सवा छः सिपारे होते हैं। यह कितनी लम्बी नमाज़ हुई होगी। जिसमें हर आयते-रहमत और आयते अज़ाब पर देर तक दुआ का मांगना और फिर उतना ही लंबा रुकूअ और सज्दा था।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० अपना एक क़िस्सा हुज़ूर सल्ल० के साथ नमाज़ पढ़ने का इसी तरह से नक़्ल करते हैं और फ़र्माते हैं कि चार रक्अतों में चार सूरतें सूरः बकरः से लेकर माइदः के ख़त्म तक पढ़ीं।

फ़— इन चार सूरतों के सवा छः सिपारे होते हैं, जो हुज़ूर सल्ल० ने चार रक्अतों में पढ़े और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदतें शरीफ़ा तज्वीद व तर्तील[2] के साथ पढ़ने की थी, जैसा कि अक्सर अहादीस में है। इसके साथ ही हर आयते रहमत और आयते अज़ाब पर ठहरना और दुआ मांगना, फिर उतना ही लंबा रुकूअ-सज्दा, इससे अन्दाज़ा हो सकता है कि इस तरह चार रक्अत में किस क़दर वक़्त ख़र्च हुआ होगा। बाज़ मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक रक्अत में सूरः बक़रः, आले इम्रान, माइदः तीन सूरतें पढ़ीं, जो तक़रीबन पांच पारे होते हैं। यह जब ही हो सकता है, जब नमाज़ में चैन और आंखों की ठंडक नसीब हो जाए। नबी अक़रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि मेरी

---

1. साथ 2. पूरी अदायगी के साथ पढ़ना।

आंखों की ठंडक नमाज़ में है। अल्लाहुम्मर्ज़ुक़नी अत्तिबाअहु

4. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ व हज़रत इब्ने ज़ुबैर हज़रत अली रज़ि० वग़ैरह की नमाज़ों के हालात

मुजाहिद रज़ि० हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० और हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० का हाल नक़ल करते हैं कि जब वह नमाज़ में खड़े होते थे, तो ऐसा मालूम होता था कि एक लकड़ी गड़ी हुई है।[1] यानी बिल्कुल हरकत नहीं होती थी।

उलमा ने लिखा है कि हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० ने हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से नमाज़ सीखी और उन्होंने हुज़ूर सल्ल० से यानी जिस तरह हुज़ूर सल्ल० नमाज़ पढ़ते थे, उसी तरह हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० पढ़ते थे और उसी तरह अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि०।

साबित रज़ि० कहते हैं कि अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की नमाज़ ऐसी होती थी कि गोया लकड़ी एक जगह गाड़ दी। एक शख़्स कहते हैं कि इब्ने ज़ुबैर रज़ि० जब सज्दा करते तो इस क़दर लम्बा और बे-हरकत होता था कि चिड़ियां आकर कमर पर बैठ जातीं। बाज़ मर्तबा इतना लम्बा रुकूअ करते कि तमाम रात सुबह तक रुकूअ ही में रहते। बाज़ औक़ात सज्दा इतना ही लम्बा होता कि पूरी रात गुज़र जाती। जब हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० से लड़ाई हो रही थी तो एक गोला मस्जिद की दीवार पर लगा, जिससे दीवार का एक टुकड़ा उड़ा और हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० के हर. ़ और दाढ़ी के दर्मियान को गुज़रा, मगर न उन्को कोई इन्तिशार[2] हुआ, न रुकूअ सज्दा मुख़्तसर किया।

एक मर्तबा नमाज़ पढ़ रहे थे। बेटा जिसका नाम हाशिम था, पास सो रहा था, छत में से एक सांप गिरा और बच्चे पर लिपट गया। वह चिल्लाया। घर वाले सब दौड़े हुए आये। शोर मच गया। उस सांप को मारा। इब्ने ज़ुबैर रज़ि० उसी इत्मीनान से नमाज़ पढ़ते रहे, सलाम फेर कर फ़र्माने लगे, कुछ शोर की-सी आवाज़

---

1. तरीख़ुल ख़ुलफ़ा, 2. बिखराव,

आयी थी, क्या था ! बीवी ने कहा, अल्लाह तुम पर रहम करे, बच्चे की तो जान भी गई थी, तुम्हें पता ही न चला! फ़र्माने लगे तेरा नास हो, अगर नमाज़ में दूसरी तरफ़ तवज्जोह करता तो नमाज़ कहां बाक़ी रहती। (हिदाय: वग़ैरह)

हज़रत उमर रज़ि० के अख़िर ज़माने में, जब उनके ख़ंजर मारा गया, जिसकी वजह से उनका इंतिक़ाल हुआ तो हर वक़्त ख़ून बहता था और अक्सर ग़फ़लत भी हो जाती थी, लेकिन इस हालत में भी जब नमाज़ के लिए मुतनब्बह किये जाते, तो उसी हालत में नमाज़ अदा फ़र्माते और इर्शाद फ़र्माते कि इस्लाम में उसका कोई हिस्सा नहीं, जो नमाज़ छोड़ दे।

हज़रत उस्मान रज़ि० तमाम रात जागते और एक रक्अत में पूरा क़ुरआन शरीफ़ ख़त्म कर लेते[1]।

हज़रत अली रज़ि० की आदते शरीफ़ा यह थी कि जब नमाज़ का वक़्त आ जाता तो बदन में कंपकपी आ जाती और चेहरा ज़र्द हो जाता। किसी ने पूछा कि यह क्या बात है ? फ़र्माया कि उस अमानत का वक़्त है, जिसको अल्लह जल्ल शानुहू ने आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों पर उतारा तो वह उसके तहम्मुल से आज़िज़ हो गये और मैंने उसका तहम्मुल किया है।

ख़ल्क बिन अय्यूब रज़ि० से किसी ने पूछा कि तुम्हें नमाज़ में मक्खियां दिक़ नहीं करतीं। फ़र्माया कि फ़ासिक़ लोग हुकूमत के कोड़े खाते हैं और हरकत नहीं करते और इस पर फ़ख़ करते हैं और अपने सब्र व तहम्मुल पर अकड़ते हैं कि इतने कोड़े मारे मैं हिला तक नहीं ! मैं अपने रब के सामने खड़ा हूं और एक मक्खी की वजह से हरकत कर जाऊं।

मुस्लिम बिन यसार रह० जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो अपने घर वालों से कहते कि तुम बातें करते रहो, मुझे तुम्हारी बात का पता ही नहीं चलेगा। एक मर्तबा बसरा की जामा मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहे थे कि मस्जिद का एक हिस्सा गिरा। लोग उसकी वजह से दौड़े, वहाँ जमा हुए, शोर व शग़ब हुआ मगर उनको पता ही न चला।

---

1. मुंतख़ब कंज़,

हातिम असम्म रह० से किसी ने उनकी नमाज़ की कैफ़ियत पूंछी, तो कहने लगे कि जब नमाज़ का वक़्त आता है तो वुज़ू के बाद उस जगह पहुंच कर जहां नमाज़ पढ़ूं, थोड़ी देर बैठता हूं कि बदन के तमाम हिस्से में सुकून पैदा हो जाये। फिर नमाज़ के लिए खड़ा होता हूं? इस तरह कि बेतुल्लाह को अपनी निगाह के सामने समझता हूं और पुलसिरात को पाँव के नीचे, जन्नत को दायीं तरफ़ और जहन्नम को बायीं तरफ़ और मौत के फ़रिश्ते को अपने पीछे खड़ा हुआ ख़्याल करता हूं और समझता हूं कि यह आख़िरी नमाज़ है। इसके बाद पूरे ख़ूशू-ख़ुज़ूअ[1] से नमाज़ पढ़ता हूं और इसके बाद उम्मीद और डर के दर्मियान रहता हूं कि न मालूम क़ुबूल हुई या नहीं।[2]

5. एक मुहाजिर और एक अंसारी की चौकीदारी और मुहाजिर का नमाज़ में तीर खाना

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक ग़ज़्वे से वापस तशरीफ़ ला रहे थे, शब[3] को एक जगह क़याम फ़र्माया और इर्शाद फ़र्माया कि आज शब को हिफ़ाज़त-चौकीदारी कौन करेगा। एक मुहाजिरी और एक अंसारी हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० और हज़रत उबाद बिन बिश्र रज़ि० ने अर्ज़ किया कि हम दोनों करेंगे। हुज़ूर सल्ल० ने एक पहाड़ी, जहां से दुश्मन के आने का रास्ता हो सकता था, बता दी कि इस पर दोनों क़याम करो। दोनों हज़रात वहां पर तशरीफ़ ले गए। वहां जाकर अंसारी ने मुहाजिर से कहा कि रात को दो हिस्सों पर मुंक़सिम करके एक हिस्से में आप सो रहें, मैं जागता रहूं। दूसरे हिस्से में आप जागें मैं सोता रहूं कि दोनों के तमाम रात जागने में यह भी एहतमाल है कि किसी वक़्त नींद का ग़लबा हो जाये और दोनों की आंख लग जाये। अगर कोई ख़तरा जागने वाले का महसूस हो तो अपने साथी को जगा ले। रात का पहला आधा हिस्सा अंसारी के जागने का क़रार पाया और मुहाजिर सो गये। अंसारी ने नमाज़ की नीयत बांध ली। दुश्मन की जानिब से एक शख़्स आया और दूर से खड़े हुए शख़्स को देखकर तीर मारा और जब कोई हरकत न हुई तो, दूसरा, और फिर इसी तरह तीसरा तीर मारा और हर

1. ख़ुदा के डर के साथ, 2. एहया, 3. रात

तीर उनके बदन में घुसता रहा और यह हाथ से उसको बदन से निकाल कर फेंकते रहे। इसके बाद इत्मीनान से रुकूअ किया, सज्दा किया, नमाज पूरी करके अपने साथी को जगाया, वह तो एक की जगह दो को देखकर भाग गया कि न मालूम कितने हों, मगर साथी ने जब उठकर देखा तो अंसारी के बदन से तीन जगह से ख़ून ही ख़ून बह रहा था। मुहाजिर ने फ़र्माया, सुब्हानल्लाह ! तुमने मुझे शुरू ही में न जगा लिया। अंसारी ने फ़र्माया कि मैंने एक सूरः (सूरह कह्फ़) शुरू कर रखी थी ! मेरा दिल न चाहा कि उसको ख़त्म करने से पहले रुकूअ करूं। अब भी मुझे इसका अंदेशा हुआ कि ऐसा न हो, मैं बार-बार तीर लगने से मर जाऊं और हुज़ूर सल्ल० ने जो हिफ़ाज़त की ख़िदमत सुपुर्द कर रखी है, वह फ़ौत हो जाये। अगर मुझे यह अंदेशा न होता, तो मैं मर जाता, मगर सूरः ख़त्म करने से पहले रुकूअ न करता।[1]

फ़— यह थी उन हज़रात की नमाज़ और इसका शौक़ कि तीर पर तीर खाये जायें और ख़ून ही ख़ून हो जाये, मगर नमाज़ के लुत्फ़ में फ़र्क़ न पड़े। एक हमारी नमाज़ है कि अगर मच्छर भी काट ले तो नमाज का ख़्याल जाता रहे। भिड़ का तो पूछना ही क्या।

यहां एक फ़िक़्ही मस्अला भी इख़्तिलाफ़ी है कि ख़ून निकलने से हमारे इमाम यानी इमाम आज़म रह० के नज़दीक वुज़ू टूट जाता है, इमाम शाफ़िई के नज़दीक नहीं टूटता। मुम्किन है कि इन सहाबी का मज़हब भी यही हो या उस वक़्त इस मस्अले की तहक़ीक़ न हुई हो कि हुज़ूर अक़रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस मज्लिस में तशरीफ़ फ़र्मा न थे, या उस वक़्त तक यह हुक्म ही न हुआ हो।

6. हज़रत अबू तल्हा रज़ि० का नमाज़ में ख़्याल आ जाने से बाग़ वक़्फ़ करना

हज़रत अबूतल्हा रज़ि० एक मर्तबा अपने बाग़ में नमाज़ पढ़ रहे थे। एक परिंदा उड़ा और चूंकि बाग़ गंजान था, इसलिए उसको जल्दी से बाहर जाने का रास्ता न मिला। कभी इस तरफ़ कभी उस तरफ़ उड़ता रहा और निकलने का रास्ता ढूंढता रहा। उनकी निगाह उस पर पड़ी, और इस मंज़र की वजह से उधर ख़्याल लग गया और निगाह उस परिंदे के साथ फिरती रही। दफ़अतन[2] नमाज़ का ख़्याल आया

1. बैहक़ी, अबूदाऊद. 2. यकायक.

तो सह्व हो गया कि कौन-सी रक्अत है। निहायत क़लक़ हुआ कि इस बाग़ की वजह से यह मुसीबत पेश आई कि नमाज़ में भूल हुई फ़ौरन हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और पूरा क़िस्सा अर्ज़ करके दरख़्वास्त की कि इस बाग़ की वजह से यह मुसीबत पेश आई। इसलिए मैं उसको अल्लाह के रास्ते में देता हूं। आप जहां दिल चाहे, इसको सर्फ़ फ़र्मा दीजिए।

इसी तरह एक और क़िस्सा हज़रत उस्मान रज़ि० के ज़माना-ए-ख़िलाफ़त में पेश आया कि एक अंसारी अपने बाग़ में नमाज़ पढ़ रहे थे। खजूरें पकने का ज़माना शबाब पर था, और खोशे[1] खजूरों के बोझ और कसरत से झुके पड़े थे। निगाह खोशों पर पड़ी और खजूरों से भरे होने की वजह से बहुत ही अच्छे मालूम हुए। ख़्याल उधर लग गया, जिसकी वजह से यह भी याद न रहा कि कितनी रक्अतें हुई। इसके रंज और सदमे का ऐसा ग़लबा हुआ कि इसकी वजह से यह ठान ली कि इस बाग़ को अब नहीं रखना जिसकी वजह से यह मुसीबत पेश आई। चुनांचे हज़रत उस्मान रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आकर अर्ज़ किया कि यह अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करना चाहता हूं, इसको जो चाहे कीजिए। उन्होंने उस बाग़ को पचास हज़ार में फ़रोख़्त करके उसकी क़ीमत दीनी कामों में ख़र्च फ़र्मा दी।[2]

फ़— यह ईमान की ग़ैरत है कि नमाज़ जैसी अहम चीज़ में ख़्याल आ जाने से पचास हज़ार दिरहम का बाग़ एक दम सदक़ा कर दिया। हमारे हज़रत शाह वलीअुल्लाह साहब रह० ने 'क़ौले जमील' में सूफ़िया की निस्बत की क़िस्में तहरीर फ़र्माते हुए उसके मुताल्लिक़ तहरीर फ़र्माया है कि यह निस्बत है। अल्लाह की इताअत को मासिवा पर मुक़द्दम रखना और इस पर ग़ैरत करना कि इन हज़रात को इस पर ग़ैरत आई कि अल्लाह की इताअत में किसी दूसरी चीज़ की तरफ़ तवज्जोह क्यों हुई ?

7. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० का नमाज़ की वजह से आंख न बनवाना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० की आँख में जब पानी उतर आया तो आंख बनाने वाले हाज़िरे ख़िदमत हुए और अर्ज़ किया कि इजाज़त हो तो हम

1. गुच्छे, 2. मुअत्ता इमाम मालिक,

आंख बना दें, लेकिन पांच दिन तक आपको एहतियात करना पड़ेगी कि सज्दा बजाय ज़मीन के किसी ऊंची लकड़ी पर करना होगा। उन्होंने फ़र्माया, यह हरगिज नहीं हो सकता। वल्लाह एक रक्अत भी इस तरह पढ़ना मुझे मंज़ूर नहीं। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद मुझे मालूम है कि जो शख़्स एक नमाज़ भी जान कर छोड़ दे, वह हक़ तआला शानुहू से ऐसी तरह मिलेगा कि हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस उसपर नाराज़ होंगे।[1]

फ़— अगरचे शरअन नमाज़ इस तरह से मजबूरी की हालत में पढ़ना जायज है और यह सूरत नमाज़ छोड़ने की वईद[2] में दाख़िल नहीं होती, मगर हज़रात सहाबा रज़ि० को नमाज़ के साथ जो शग़्फ़ था और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शाद पर अमल की इस क़दर अहमियत थी, उसकी वजह से हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने आँख बनवाने को भी पसंद न किया कि इन हज़रात के नज़दीक एक नमाज़ पर सारी दुनिया क़ुर्बान थी। आज हम बे-हयाई से जो चाहें, इन मर मिटने वालों की शान में मुंह से निकाल दें। जब कल उनका सामना होगा कि यह फ़िदाई मैदाने हश्र की सैर के लुत्फ़ उड़ा रहे होंगे, जब हक़ीक़त मालूम होगी कि यह क्या था और हमने इनके साथ क्या बर्ताव किया।

8. सहाबा रज़ि० का नमाज़ के वक़्त फ़ौरन दुकानें बन्द करना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० एक मर्तबा बाज़ार में तशरीफ़ रखते थे कि जमाअत का वक़्त हो गया, देखा कि फ़ौरन सबके सब अपनी-अपनी दुकानें बन्द करके मस्जिद में दाख़िल हो गये। इब्ने उमर रज़ि० फ़र्माते हैं कि इन्हीं लोगों की शान में यह आयत नाज़िल हुई-

رِجَالٌ لَّا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَن ذِكْرِ اللَّهِ

रिजालुल्ला तुल्हीहिम तिजारतुंन ला बैअुन अन ज़िक्रिल्लाह

(सूरः नूर, पारा 18)

तर्जुमा पूरी आयत शरीफ़ा का यह है कि इन मस्जिदों में ऐसे लोग सुबह और शाम अल्लाह की पाकी बयान करते हैं, जिनको अल्लाह की याद से और बिलख़सूस

1. दुर्रेमंसूर, 2. धमकी, डराना,

नमाज पढ़ने और ज़कात देने से न ख़रीदना ग़फ़लत में डालता है, न बेचना। वह ऐसे दिन की पकड़ से डरते हैं, जिसमें बहुत से दिल और बहुत सी आंखें उलट जाएंगी।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि फ़र्माते हैं कि वह लोग तिजारत वग़ैरह अपने-अपने कारोबार में मशग़ूल होते थे, लेकिन जब अज़ान की आवाज़ सुनते तो सब कुछ छोड़कर फ़ौरन मस्जिद में चले जाते। एक जगह कहते हैं, ख़ुदा की क़सम ! यह लोग ताजिर थे, मगर इनकी तिजारत उनको अल्लाह के ज़िक्र से नहीं रोकती थी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० एक मर्तबा बाज़ार में तशरीफ़ रखते थे कि अज़ान हो गयी। उन्होंने देखा कि लोग अपने-अपने सामान को छोड़कर नमाज़ की तरफ़ चल दिये। इब्ने मस्ऊद रज़ि० ने फ़र्माया, यही लोग हैं, जिनको अल्लाह जल्ल शानुहू ने "लातुल्हीहिम तिजारतुंन ला बैअुन अन ज़िक्रिल्लाहि" से याद फ़र्माया।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि क़यामत के दिन जब हक़ तआला शानुहू तमाम दुनिया को एक जगह जमा फ़र्मायेंगे, तो इर्शाद होगा, 'कहां हैं वह लोग जो ख़ुशी और रंज दोनों हालतों में अल्लाह की हम्द करने वाले थे। तो एक मुख़्तसर जमाअत उठेगी और बग़ैर हिसाब-किताब के जन्नत में दाख़िल हो जाएगी। फिर इर्शाद होगा कहां हैं वह लोग, जो रातों में अपनी ख़्वाबगाह से दूर रहते और अपने रब को ख़ौफ़ और रग़बत के साथ याद करते थे। तो एक दूसरी मुख़्तसर जमाअत उठेगी और वह भी जन्नत में बग़ैर हिसाब के दाख़िल हो जायेगी। फिर इर्शाद होगा, कहां हैं, वह लोग, जिनको तिजारत या बेचना, अल्लाह के ज़िक्र से नहीं रोकता था तो एक तीसरी जमाअत मुख़्तसर-सी खड़ी होगी और जन्नत में बग़ैर हिसाब दाख़िल होगी। उसके बाद बक़िया लोगों का हिसाब शुरू हो जाएगा।[2]

9. हज़रत ख़ुबैब रज़ि० का क़त्ल के वक़्त नमाज़ पढ़ना और ज़ैद रज़ि० व आसिम रज़ि० का क़त्ल

उहद की लड़ाई में जो काफ़िर मारे गये थे, उनके अज़ीज़ों में इंतिक़ाम का जोश ज़ोर पर था। सुलाफ़ा ने जिसके दो बेटे इस लड़ाई में मारे गए थे, मन्नत मानी

1. 'इतानुलकुरआन' से, 2. दुर्रेमंसूर

थी कि अगर आसिम का (जिन्होंने उसके बेटे का क़त्ल किया था) सर हाथ आ जाए, तो उसकी खोपड़ी में शराब पियूंगी इसलिए उसने एलान किया था कि जो आसिम का सर लायेगा उसको सौ ऊंट इनाम दूंगी। सुफ़ियान बिन ख़ालिद को इस लालच ने आमादा किया कि वह उनका सर लाने की कोशिश करे। चुनांचे उसने उज़्ल व क़ारा के चंद आदमियों को मदीना मुनव्वरा भेजा। उन लोगों ने अपने को मुसलमान ज़ाहिर किया और हुज़ूरे अक़दस सल्ल० से तालीम व तब्लीग़ के लिए अपने साथ चंद हज़रात को भेजने की दर्ख़्वास्त की और हज़रत आसिम रज़ि० को भी साथ भेजने की दर्ख़्वास्त की कि उनका बाज़ पसन्दीदा बतलाया। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने दस आदमियों को और बाज़ रिवायात में छः आदमियों को उनके साथ कर दिया, जिनमें हज़रत आसिम रज़ि० भी थे। रास्ते में जाकर इन ले जाने वालों ने बद'अहदी की और दुश्मनों को मुक़ाबले के लिए बुलाया, जो दो सौ आदमी थे और उनमें से सौ बहुत मशहूर तीरदाज़ थे और बाज़ रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल० ने इन हज़रात को मक्का वालों की ख़बर लाने के लिए भेजा था। रास्ते में बनू लह्यान के दो सौ आदमियों से मुक़ाबला हुआ। यह मुख़्तसर जमाअत दस आदमियों की या छः आदमियों की, यह हालत देखकर एक पहाड़ी पर, जिसका नाम फ़दफ़द था, चढ़ गयी। कुफ़्फ़ार ने कहा कि हम तुम्हारे ख़ून से अपनी ज़मीन रंगना नहीं चाहते, सिर्फ़ अह्ले मक्का से तुम्हारे बदले में कुछ माल लेना चाहते हैं। तुम हमारे साथ आ जाओ हम तुम्हें क़त्ल न करेंगे। मगर उन्होंने कहा कि हम काफ़िर के अह्द में आना नहीं चाहते और तरकश से तीर निकाल कर मुक़ाबला किया। जब तीर ख़त्म हो गये तो नेज़ों से मुक़ाबला किया। हज़रत आसिम रज़ि० ने साथियों से जोश में कहा कि तुम से धोखा किया गया, मगर घबराने की बात नहीं। शहादत को ग़नीमत समझो, तुम्हारा महबूब तुम्हारे साथ है और जन्नत की हूरें तुम्हारी मुंतज़िर हैं। यह कहकर जोश से मुक़ाबला किया और जब नेज़ा भी टूट गया तो तलवार से मुक़ाबला किया। मुक़ाबिलों[1] का मज्मा कसीर था, और आख़िर शहीद हो गए और दुआ की कि या अल्लाह ! अपने रसूल सल्ल० को हमारे क़िस्से की ख़बर कर दे। चुनांचे यह दुआ क़ुबूल हुई और उसी वक़्त इस वाक़िए का इल्म हुज़ूर सल्ल० को हो गया, और चूंकि आसिम रज़ि० यह भी सुन चुके थे कि सुलाफ़ा ने मेरे सर की खोपड़ी में शराब पीने की मन्नत की है। इसलिए मरते वक़्त दुआ की कि या अल्लाह ! मेरा सर तेरे रास्ते में काटा जा रहा है तू ही इसका मुहाफ़िज़ है। और वह दुआ भी क़ुबूल हुई और शहादत के बाद जब काफ़िरों

1. सामने के दुश्मन

नें सर काटने का इरादा किया, तो अल्लाह तआला ने शहद की मक्खियों का और कुछ रिवायतों में भिड़ों का एक ग़ोल भेज दिया, जिन्होंने उनके बदन को चारों तरफ़ से घेर लिया। काफ़िरों का ख़्याल था कि रात के वक़्त जब यह उड़ जाएंगी तो सर काट लेंगे, मगर रात को एक बारिश की रौ आई और उनकी लाश को बहाकर ले गयी। इस तरह सात आदमी या तीन आदमी शहीद हो गये, ग़रज़ तीन बाक़ी रह गये-हज़रत ख़ुबैब रज़ि० और ज़ैद बिन दस्ना रज़ि० और अब्दुल्लाह बिन तारिक रज़ि०।

इन तीनों हज़रात से फिर उन्होंने अहद-पैमान किया कि तुम नीचे आ जाओ, हम तुम से बद-अह्दी न करेंगे। यह तीनों हज़रात नीचे उतर आये और नीचे उतरने पर कुफ़्फ़ार ने उनकी कमानों की तांत उतार कर उनकी मश्कें बांधी। हज़रत अब्दुल्लाह बिन तारिक़ रज़ि० ने फ़र्माया कि यह पहली बद-अह्दी है, मैं तुम्हारे साथ हरगिज़ न जाऊंगा। इन शहीद होने वालों का इक़्तिदा ही मुझे पसंद है। उन्होंने ज़बर्दस्ती उनको खींचना चाहा, मगर यह न टले, तो उन लोगों ने उनको भी शहीद कर दिया। सिर्फ़ दो हज़रात उनके साथ रहे, जिनको ले जाकर उन लोगो ने मक्का वालों के हाथ फ़रोख़्त कर दिया। एक हज़रत ज़ैद बिन दस्ना रज़ि० जिनको, सफ़वान बिन उमैया ने पचास ऊंट के बदले में ख़रीदा ताकि अपने बाप उमैया के बदले में क़त्ल करे। दूसरे हज़रत ख़ुबैब रज़ि० जिन को हुजैर बिन अबी अह्हाब ने सौ ऊंट के बदले में ख़रीदा, ताकि अपने बाप के बदले में उनको क़त्ल करे। बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है कि हारिस बिन आमिर की औलाद ने ख़रीदा कि उन्होंने बद्र में हारिस को क़त्ल किया था।

सफ़वान ने तो अपने क़ैदी हज़रत ज़ैद रज़ि० को फ़ौरन ही हरम से बाहर अपने ग़ुलाम के साथ भेज दिया कि क़त्ल कर दिये जायें। इसका तमाशा देखने के वास्ते और भी बहुत से लोग जमा हुए, जिनमें अबू सुफ़ियान भी था। उसने हज़रत ज़ैद से शहादत के वक़्त पूछा कि ऐ ज़ैद ! तुझको ख़ुदा की क़सम ! सच कहना क्या तुझको यह पसंद है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की गरदन तेरे बदले में मार दी जाये और तुझको छोड़ दिया जाए कि अपने अह्ल व अयाल में ख़ुश व ख़ुर्रम रहे। हज़रत ज़ैद रज़ि० ने फ़र्माया कि ख़ुदा की क़सम ! मुझे यह भी गवारा नहीं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जहां हैं, वहीं उनके एक कांटा भी चुभे और हम अपने घर आराम से रहें। यह जवाब सुनकर क़ुरैश हैरान रह गये। अबू सुफ़ियान ने कहा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों को जितनी

उनसे मुहब्बत देखी उसकी नजीर कहीं नहीं देखी। इसके बाद हजरत ज़ैद शहीद कर दिय गए।

हजरत ख़ुबैब रज़ि० एक अर्से तक क़ैद में रहे। हुजैर की बांदी, जो बाद में मुसलमान हो गई, कहती हैं कि जब ख़ुबैब रज़ि० हम लोगों की क़ैद में थे, तो हमने देखा कि ख़ुबैब रज़ि० एक दिन अंगूर का बहुत बड़ा ख़ोशा[1] आदमी के सर के बराबर हाथ में लिए हुए अंगूर खा रहे थे और मक्का में उस वक़्त अंगूर बिल्कुल नहीं था। वही कहती हैं जब उनके क़त्ल का वक़्त करीब आया तो उन्होंने सफ़ाई के लिए उस्तरा मांगा, वह दे दिया गया। इत्तिफ़ाक़ से एक कम-सिन बच्चा उस वक़्त ख़ुबैब रज़ि० के पास चला गया। उन लोगों ने देखा कि उस्तरा उनके हाथ में है और बच्चा उनके पास, यह देखकर घबराये। ख़ुबैब रज़ि० ने फ़र्माया, क्या तुम यह समझते हो मैं बच्चे को क़त्ल कर दूंगा, ऐसा नहीं कर सकता। इसके बाद उनको हरम से बाहर लाया गया और सूली पर लटकाने के वक़्त आख़िरी ख़्वाहिश के तौर पर पूछा गया कि कोई तमन्ना हो तो बताओ। उन्होंने फ़र्माया कि मुझे इतनी मोहलत दी जाये कि दो रक़अत नमाज पढ़ लूं कि दुनिया से जाने का वक़्त है और अल्लाह जल्ल शानुहू की मुलाक़ात क़रीब है। चुनांचे मोहलत दे दी गयी। उन्होंने दो रक़अतें निहायत इत्मीनान से पढ़ीं और फिर फ़र्माया कि अगर मुझे यह ख़्याल न होता कि तुम लोग यह समझोगे कि मौत के डर की वजह से देरकर रहा हूं तो दो रक़अत और पढ़ता। इसके बाद वह सूली पर लटका दिये गए तो उन्होंने यह दुआ की या अल्लाह ! कोई ऐसा शख़्स नहीं है जो तेरे रसूल पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक मेरा आख़िरी सलाम पहुंचा दे। चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बज़रिया वही उसी वक़्त सलाम पहुंचाया गया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, व अलैकुम अस्सलाम या ख़ुबैब! और साथियों को इत्तिला फ़र्मायी कि ख़ुबैब रज़ि० को क़ुरैश ने क़त्ल कर दिया। हजरत ख़ुबैब को जब सूली पर चढ़ाया गया तो चालीस काफ़िरों ने नेजे लेकर चारों तरफ़ से उन पर हमला किया और बदन को छलनी कर दिया। उस वक़्त किसी ने क़सम देकर यह भी पूछा कि तुम यह भी पसन्द करते हो कि तुम्हारी जगह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल कर दें और तुमको छोड़ दें। उन्होंने फ़र्माया वल्लाहिल अज़ीम![2] मुझे यह भी पसन्द नहीं कि मेरी जान के फ़िदए में एक कांटा भी हुज़ूर सल्ल० के चुभे।[3]

---

1. गुच्छा, 2. अल्लाह की क़सम, जो महान हैं, 3. फ़त्हे इस्लाम,

फ़—वैसे तो इन क़िस्सों का हर-हर लफ़्ज़ इबरत[1] है, लेकिन इस क़िस्से में दो चीज़ें ख़ास-तौर से क़ाबिले क़द्र, क़ाबिले इबरत हैं। उन हज़रात की नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मुहब्बत व इश्क़ कि अपनी जान जाए और उसके बदले में इतना लफ़्ज़ कहना भी गवारा नहीं कि हुज़ूर सल्ल० को किसी क़िस्म की तकलीफ़ मामूली सी भी पहुंच जाए, इसलिए कि हज़रत ख़ुबैब रज़ि० से सिर्फ़ ज़बान से ही कहलाना चाहते थे और सिर्फ़ ज़बान ही से कहना था, वरना बदले में हुज़ूर सल्ल० को तक्लीफ़ पहुंचाने पर तो उन कुफ़्फ़ार को भी, क़ुदरत न थी, बल्कि वह लोग ख़ुद ही हर वक़्त तकलीफ़ पहुंचाने की कोशिश में रहते थे, जिसमें बदला, बे-बदला सब बराबर था।

दूसरी चीज़ नमाज़ की अज़्मत और उसका शग़फ़[2] कि ऐसे आख़िरी वक़्त में आम तौर से बीवी बच्चों को आदमी याद करता है, सूरत देखना चाहता हैं, पयाम व सलाम कहता है, मगर इन हज़रात को पयाम व सलाम देना है तो हुज़ूर सल्ल० को और आख़िरी तमन्ना है तो दो रक्अत नमाज़ की।

10. हुज़ूर सल्ल की जन्नत में मअइयत के लिए नमाज़ की मदद

हज़रत रबीआ रज़ि० कहते है कि मैं नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में रात गुज़ारता था और तहज्जुद के वक़्त वुज़ू का पानी और दूसरी ज़रूरियात, मसलन मिस्वाक, मुसल्ला वग़ैरह रखता था। एक मर्तबा हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरी ख़िदमात से ख़ुश होकर फ़र्माया, मांग क्या मांगता है। उन्होंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह जन्नत में आपकी रिफ़ाक़त। आप सल्ल० ने फ़र्माया और कुछ कि बस यही चीज़ मतलूब है। आपने फ़र्माया, अच्छा मेरी मदद कीजियो सज्दों की कसरत से।

फ़— इसमें तंबीह है इस अम्र पर कि सिर्फ़ दुआ पर भरोसा करके न बैठना चाहिए, बल्कि कुछ तलब और अमल की भी ज़रूरत है और आमाल में सबसे अहम नमाज़ है कि जितनी उसकी कसरत होगी, उतने ही सज्दे ज़्यादा होंगे। जो लोग इस

---

1. सबक़, शिक्षा, 2. लगाव, चाव, 3. साथ,

सहारे पर बैठे रहते हैं कि फ़्लां पीर, फ़्लां बुज़ुर्ग से दुआएं करायेंगे, सख़्त ग़लती है। अल्लाह जल्ल शानुहू ने इस दुनिया को अस्बाब के साथ चलाया है। अगरचे बे अस्बाब हर चीज़ पर क़ुदरत और क़ुदरत के इज़्हार के वास्ते कभी ऐसा भी कर देते हैं, लेकिन आम आदत यही है कि दुनिया के कारोबार अस्बाब से लगा रखे हैं। हैरत है कि हम लोग दुनिया के कामों में तो तक़्दीर पर और सिर्फ़ दुआ पर भरोसा करके कभी नहीं बैठते। पचास तरह की कोशिश करते हैं मगर दीन के कामों में तक़्दीर और दुआ बीच में आ जाती है। इसमें शक नहीं कि अल्लाह वालों की दुआ निहायत अहम है, मगर हुज़ूर सल्ल० ने यह भी इर्शाद फ़र्माया कि सज्दों की कसरत से मेरी दुआ की मदद करना।

छठा बाब

ईसार व हमदर्दी और अल्लाह की राह में ख़र्च करना

ईसार कहते हैं अपनी ज़रूरत के वक़्त दूसरे को तर्जीह देना[1], अव्वल तो सहाबा किराम रज़ि० की हर अदा, हर आदत ऐसी ही है, जिसकी बराबरी तो दूर रही, उसका कुछ भी किसी ख़ुश क़िस्मत को नसीब हो जाए तो ऐनसआदत[2] है, लेकिन बाज़ आदतें उन में से ऐसी मुमताज़[3] हैं कि उन्हीं का हिस्सा थीं। इनके मिन-जुम्ला[4] ईसार है कि हक़ तआला शानुहू ने कला मुल्लाह शरीफ़ में इसकी तारीफ़ फ़र्माई और-

يُؤْثِرُونَ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ

'युऊ सिरू न अला अन्फुसिहिम व लौ का न बिहिम ख़ासासः, में इस सिफ़त को ज़िक्र फ़र्माया कि वह लोग अपने ऊपर दूसरों को तर्जीह देते हैं, गो उन पर फ़ाक़ा ही हो।

---

1. बढ़ावा देना, 2. बड़ी ख़ुशक़िस्मती है,
3. मशहूर, नुमाया, 4. उन्हीं में से एक,

1. सहाबी का मेहमान की ख़ातिर चिराग़ बुझा देना

एक सहाबी रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और भूख और परेशानी की हालत की इत्तिला दी। हुज़ूर सल्ल० ने अपने घरों में आदमी भेजा, कहीं कुछ न मिला तो हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा रज़ि० से फ़र्माया कि कोई शख़्स है जो इनकी एक रात की मेहमानी क़ुबूल करे। एक अंसारी सहाबी रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! मैं मेहमानी करूंगा। उनको घर ले गये और बीवी से फ़र्माया कि यह हुज़ूर सल्ल० के मेहमान हैं, जो इकराम[1] कर सके, इसमें कसर न करना और कोई चीज़ छुपा कर न रखना। बीवी ने कहा, ख़ुदा की क़सम, बच्चों के क़ाबिल कुछ थोड़ा सा रखा है और कुछ भी घर में नहीं। सहाबी रज़ि० ने फ़र्माया कि बच्चों को बहलाकर सुला दीजियो और जब वह सो जाएं तो खाना लेकर मेहमान के साथ बैठ जावेंगे और तू चिराग़ दुरुस्त करने के बहाने से उठ कर उसको बुझा देना। चुनांचे बीवी ने ऐसा ही किया। दोनों मियां-बीवी और बच्चों ने फ़ाक़े से रात गुज़ारी, जिस पर यह आयत, 'यू सि रू-न अला अन्फ़ूसिहिम' नाज़िल हुई।

तर्जुमा– और तर्जीह देते हैं अपनी जानों पर , अगरचे उन पर फ़ाक़ा ही हो।

फ़–इस क़िस्म के मुतअद्दद वाक़िआत हैं जो सहाबा रज़ि० के यहां पेश आये। चुनांचे एक दूसरा वाक़िआ इसी क़िस्म का लिखा है।

2. रोज़ादार के लिए चिराग़ बुझा देना

एक सहाबी रज़ि० रोज़े पर रोज़ा रखते थे। इफ़्तार के लिए कोई चीज खाने को मयस्सर न आती थी। एक अंसारी सहाबी हज़रत साबित रज़ि० ने ताड़ लिया। बीवी से कहा कि मैं रात को एक मेहमान को लाऊंगा। जब खाना शुरू करें तो तुम चिराग़ को ठीक करने के हीले से बुझा देना और इतने मेहमान का पेट न भर जाए.

---

1. इज़्ज़त,

ख़ुद न खाना। चुनांचे उन्होंने ऐसा ही किया साथ में सब शरीक रहे जैसे खा रहे हों। सुबह को हज़रत साबित रज़ि० जब हुज़ूर सल्ल० की मज्लिस में हाज़िर हुए तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि रात का तुम्हारा, अपने मेहमान के साथ बर्ताव हक तआला शानुहू को बहुत ही पसन्द आया।[1]

3. एक सहाबी रज़ि० का ज़कात में ऊंट देना

हज़रत उबई बिन कअब रज़ि० फ़र्माते हैं कि मुझे एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़कात का माल वसूल करने के लिये भेजा। मैं एक साहब के पास गया। और उनसे उनके माल की तफ़्सील मालूम की तो उन पर एक ऊंट का बच्चा एक साला वाजिब था। मैंने उनसे उसका मुतालबा किया। वह फ़र्माने लगे कि एक साल का बच्चा न दूध के काम का, न सवारी के काम का। उन्होंने एक नफ़ीस उम्दा जवान ऊंटनी सामने की, कि यह ले जाओ। मैंने कहा कि मैं तो इसको नहीं ले सकता कि मुझे उम्दा माल लेने का हुक्म नहीं। अलबत्ता अगर तुम यही देना चाहते हो तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़र में है और आज का पड़ाव फ़्लां जगह तुम्हारे क़रीब ही है। हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर पेश कर दो। अगर मंज़ूर फ़र्मा लिया तो मुझे इंकार नहीं वरना मैं माज़ूर[2] हूं। वह इस ऊंटनी को लेकर मेरे साथ हो लिए और हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मेरे पास आपको क़ासिद ज़कात का माल लेने आये थे और ख़ुदा की क़सम मुझे आज तक यह सआदत नसीब न हुई थी कि रसूलुल्लाह या उनके क़ासिद ने मेरे माल में कभी तसर्रुफ़[3] फ़र्माया हो, इसलिए मैंने अपना सारा माल सामने कर दिया। उन्होंने फ़र्माया इसमें एक साला ऊंट का बच्चा ज़कात का वाजिब है। हुज़ूर एक साल के बच्चे से न तो दूध ही का नफ़ा है, न सवारी का। इस लिए मैंने एक उम्दा जवान ऊंटनी पेश की थी, जिसको उन्होंने क़ुबूल नहीं फ़र्माया, इसलिए मैं ख़ुद लेकर हाज़िर हुआ हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि तुम पर वाजिब तो वही है जो उन्होंने बतलाई मगर तुम अपनी तरफ़ से उससे ज़्यादा और उम्दा माल दो तो क़ुबूल है। अल्लाह तुम्हें इसका अज्र मरहमत फ़र्मायें[4]। उन्होंने अर्ज़ किया कि यह हाज़िर है। हुज़ूर सल्ल०

---

1. दुर्रेमंसूर, 2. मजबूर हूं, 3. मनमानी इस्तेमाल, 4. बदला दे।

ने क़ुबूल फ़र्मा लिया और बरकत की दुआ फ़र्माई।

फ़— यह ज़कात के माल का मंज़र है। आज भी इस्लाम के बहुत से दावेदार हैं और हुज़ूर सल्ल० की मुहब्बत का दम भी भरते हैं, लेकिन ज़कात के अदा करने में ज़्यादती का तो क्या ज़िक्र है, पूरी मिक़्दार भी अदा करना मौत है। जो ऊंचे तब्क़े वाले ज़्यादा माल वाले कहलाते हैं, उनके यहां तो अक्सर बेशतर इसका ज़िक्र ही नहीं है, लेकिन जो मुतवस्सित[1] हैसियत के लोग हैं, और अपने को दीन्दार भी समझते हैं। वह भी इसकी कोशिश करते हैं कि जो ख़र्च अपने अज़ीज़ रिश्तेदारों में या किसी दूसरी जगह मजबूरी से पेश आ जाये, उसमें ज़कात ही की नीयत कर लें।

4. हज़रात शैख़ैन का सदक़े में मुक़ाबला

हज़रत उमर रज़ि० फ़र्मति हैं कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सदक़ा करने का हुक्म फ़र्माया। इत्तिफ़ाक़न[2] उस ज़माने में मेरे पास कुछ माल मौजूद था। मैंने कहा, आज मेरे पास इत्तिफ़ाक़ से माल मौजूद है। अगर मैं अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से कभी भी बढ़ सकता हूं, तो आज बढ़ जाऊंगा। यह सोचकर मैं ख़ुशी-ख़ुशी घर गया और जो कुछ भी घर में रखा था, उसमें से आधा ले आया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि घर वालों के लिए क्या छोड़ा ? मैंने अर्ज़ किया, कि छोड़ आया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, आख़िर क्या छोड़ा ? मैंने अर्ज़ किया, आधा छोड़ आया और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० जो कुछ रखा था, सब ले आये। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अबूबक्र ! घर वालों के लिये क्या छोड़ा ? उन्होंने फ़र्माया, उनके लिए अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० को छोड़ आया यानी अल्लाह और उसके रसूल पाक सल्ल० के नाम की बरकत और उनकी रज़ा और ख़ुशनूदी को छोड़ आया।

हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं, मैंने कहा हज़रत अबूबक्र रज़ि० से कभी नहीं बढ़ सकता।

फ़— ख़ूबियों और नेकियों में इसकी कोशिश करना कि दूसरे से बढ़ जाऊं यह मुस्तहसन और मंदूब है[3] क़ुरआन पाक में भी इसकी तर्ग़ीब[4] आयी है। यह क़िस्सा ग़ज़वा-ए-तबूक का है। उस वक़्त में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चंदे की ख़ास तौर से तर्ग़ीब फ़र्मायी थी और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने

1. दर्मियानी, 2. संयोग से, 3. पसंददीदा काम, 4. चाव पैदा करना,

अपने-अपने हौसले के मुवाफ़िक़ बल्कि हिम्मत व वुस्अत से ज़्यादा इआनतें फ़र्मायीं, जिनका ज़िक्र बाब 2 के क़िस्सा 9 में भी मुख़्तसर तौर पर गुज़रा है।

جزاهم الله عنا وعن سائر المسلمين واحسن الجزاء

जज़ाहुमुल्लाहु अन्ना व अन साइरिल मुस्लिमीन (अह्सनल जज़ाइ०)

5. सहाबा रज़ि० का दूसरों की वजह से प्यासे मरना

हज़रत अबू जह्म बिन हुज़ैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि यर्मूक की लड़ाई में मैं अपने चचाज़ाद भाई की तलाश में निकला कि वह लड़ाई में शरीक थे और एक मशकीज़ा पानी का मैंने अपने साथ लिया कि मुम्किन है वह प्यासे हों तो पानी पिलाऊं। इत्तिफ़ाक़ से वह एक जगह इस हालत में पड़े हुए मिले कि दम तोड़ रहे थे और जांकनी शुरू थी। मैंने पूछा पानी का घूंट दूं। उन्होंने इशारे से कहा हां कि इतने में दूसरे साहब ने जो क़रीब ही पड़े थे, और वह भी मरने के क़रीब थे, आह की। मेरे चचाज़ाद भाई ने आवाज़ सुनी तो मुझे उनके पास जाने का इशारा किया। मैं उनके पास पानी लेकर गया। वह हिशाम बिन अबिल आस थे। उनके पास पहुंचा ही था कि उनके पास एक तीसरे साहब उसी हाल में पड़े दम तोड़ रहे थे। उन्होंने आह की। हिशाम रज़ि० ने मुझे उनके पास जाने का इशारा कर दिया। मैं उनके पास पानी लेकर पहुंचा, तो उनका दम निकल चुका था। हिशाम रज़ि० के पास वापस आया तो वह भी जां-ब-हक़ हो चुके थे। उनके पास से अपने भाई के पास लौटा तो इतने में वह भी ख़त्म हो चुके थे। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०[1]

फ़—इस नौअ के मुतअद्दद वाक़िआत कुतुबे हदीस में ज़िक्र किये गये हैं। क्या इंतिहा है इस ईसार की कि अपना भाई आख़िरी दम तोड़ रहा हो और प्यासा हो ऐसी हालत में किसी दूसरे की तरफ़ तवज्जोह करना भी मुश्किल हो जाता है, च-जाय-कि उसको प्यासा छोड़कर दूसरे को पानी पिलाने चला जाय। और इन मरने वालों की रूहों को अल्लाह जल्ल शानुहू अपने लुत्फ़ व फ़ज़्ल से नवाज़ें कि मरने के वक़्त भी जब होश व हवास सब ही जवाब दे देते हैं, यह लोग हमदर्दी में जान देते हैं।

---

1. दिरायां,

6. हज़रत हमज़ा रज़ि० का कफ़न

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा हज़रत हमज़ा ग़ज़वा-ए-उहद में शहीद हो गये और बे-दर्द काफ़िरों ने आपके कान-नाक वग़ैरह आज़ा[1] काट दिये और सीना चीर कर दिल निकाला और तरह-तरह के ज़ुल्म किये। लड़ाई के ख़त्म पर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और दूसरे सहाबा शहीदों की लाशें तलाश फ़र्माकर उनकी तज्हीज़ व तक्फ़ीन[2] का इंतिज़ाम फ़र्मा रहे थे कि हज़रत हमज़ा रज़ि० को इस हालत में देखा, निहायत सद्मा हुआ और एक चादर से उनको ढांक दिया।

इतने में हज़रत हमज़ा रज़ि० की हक़ीक़ी बहन हज़रत सफ़ीया रज़ि० तशरीफ़ लायीं कि अपने भाई की हालत को देखें। हुज़ूर सल्ल० ने इस ख़्याल से कि आख़िर औरत हैं, ऐसे ज़ुल्मों को देखने का तहम्मुल[3] मुश्किल होगा। उनके साहबज़ादा हज़रत ज़ुबैर रज़ि० से इर्शाद फ़र्माया कि अपनी वालिदा को देखने से मना करो। उन्होंने वालिदा से अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल० ने देखने को मना फ़र्मा दिया। उन्होंने कहा कि मैंने यह सुना है कि मेरे भाई के कान-नाक वग़ैरह काट दिए गए। अल्लाह के रास्ते में यह कौन-सी बड़ी बात है। हम इस पर राज़ी हैं। मैं अल्लाह से सवाब की उम्मीद रखती हूं और इन्शाअल्लाह सब्र करूंगी।

हज़रत ज़ुबैर रज़ि० से जाकर इस कलाम का ज़िक्र किया तो हुज़ूर सल्ल० ने इस जवाब को सुनकर देखने की इजाज़त अता फ़र्मा दी। आकर देखा, इन्नालिल्लाह पढ़ी और उनके लिए इस्तिग़फ़ार और दुआ की।

एक रिवायत में है कि ग़ज़वा-ए-उहुद में जहां लाशें रखी थीं, एक औरत तेज़ी से आ रही थी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, देखो औरत को रोको, हज़रत ज़ुबैर रज़ि० कहते हैं कि मैंने पहचान लिया कि मेरी वालिदा हैं। मैं जल्दी से रोकने के लिए बढ़ा मगर वह क़वी थीं, एक घूंसा मेरे मारा और कहा परे हट जा। मैंने कहा कि हुज़ूर सल्ल० ने मना फ़र्माया है, तो फ़ौरन खड़ी हो गईं, इसके बाद दो कपड़े निकाले और फ़र्माया कि मैं अपने भाई के कफ़न के लिए लाई थी कि मैं उनके इंतिक़ाल की ख़बर सुन चुकी थी। इन कपड़ों में उन्हें कफ़ना देना।

हम लोग वह कपड़े लेकर हज़रत हमज़ा रज़ि० को कफ़नाने लगे। कि बराबर

---

1. अंग, 2. कफ़न-दफ़न, 3. बर्दाश्त,

में एक अंसारी शहीद पड़े हुए थे, जिनका नाम हज़रत सुहैल रज़ि० था। इनका भी कुफ़्फ़ार ने ऐसा ही हाल कर रखा था, जैसा कि हज़रत हमज़ा रज़ि० का था। हमें इस बात से शर्म आई कि हज़रत हमज़ा रज़ि० को दो कपड़ों में कफ़न दिया जाए और अंसारी के पास एक भी न हो। इसलिए हमने दोनों के लिए एक-एक कपड़ा तज्वीज़ कर दिया। मगर एक कपड़ा इनमें बड़ा था, दूसरा छोटा, तो हमने क़ुर्आ डाला कि क़ुर्आ में जो कपड़ा जिनके हिस्से में आ जाएगा, वह उनके कफ़न में लगाया जाए। क़ुर्आ में बड़ा कपड़ा हज़रत सुहैल रज़ि० के हिस्से में आया और छोटा हज़रत हमज़ा रज़ि० के हिस्से में आया जो उनके क़द से भी कम था। कि अगर सर को ढांका जाता तो पांव खुल जाते और पांव की तरफ़ किया जाता तो सर खुल जाता। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि सर को कपड़े से ढांक दो और पांव पर पत्ते वग़ैरह डाल दो।[1]

इब्ने साद रज़ि० की रिवायत में है कि हज़रत सफ़ीया रज़ि० जब दो कपड़े लेकर हज़रत हमज़ा रज़ि० की लाश पर पहुंची तो उनके क़रीब ही एक अंसारी रज़ि० उसी हाल में पड़े हुए थे तो एक-एक कपड़े में दोनों को कफ़न दिया गया। हज़रत हमज़ा रज़ि० का कपड़ा बड़ा था, यह रिवायत मुख़्तसर है और ख़मीस की रिवायत मुफ़स्सल है।

फ़– यह दो जहान के बादशाह के चचा का कफ़न है, वह भी इस तरह कि एक औरत अपने भाई के लिए दो कपड़े देती है। उसमें यह गवारा नहीं कि दूसरा अंसारी रज़ि० बे-कफ़न रहे, एक-एक कपड़ा बांट दिया जाता है और फिर छोटा कपड़ा उस शख़्स के हिस्से में आता है जो कई वजह से तर्जीह का इस्तिहक़ाक़[2] भी रखता है। ग़रीब परवरी और मुसावात[3] के दावेदार अगर अपने दावों में सच्चे हैं तो इन पाक हस्तियों की इत्तिबाअ करें, जो कहकर नहीं, बल्कि करके दिखला गये। हम लोगों के लिए इनका पैरो कहना भी शर्म की बात है।

7. बकरे की सिरी का चक्कर काट कर वापस आना

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़र्माते हैं कि एक सहाबी रज़ि० को किसी शख़्स ने बकरे की सिरी हदिया के तौर पर दी। उन्होंने ख़्याल फ़र्माया कि मेरे फ़्लां साथी

1. ख़मीस, 2. हक़दार होना, 3. बराबरी,

ज़्यादा ज़रूरतमंद हैं, कुंबे वाले हैं। वह और उनके घर वाले ज़्यादा मुहताज हैं, इसलिए उनके पास भेज दी। उनको एक तीसरे साहब के मुताल्लिक़ यही ख़्याल पैदा हुआ और उनके पास भेज दी। ग़रज़ इसी तरह सात घरों में फिरकर वह सिरी सबसे पहले सहाबी रज़ि० के घर लौट आयी।[1]

फ़ु— इस क़िस्से से इन हज़रात का आम तौर से मुहताज और ज़रूरतमंद होना भी मालूम होता है और यह भी कि हर शख़्स को दूसरे की ज़रूरत अपने से मुक़द्दम मालूम होती थी।

8. हज़रत उमर रज़ि० का अपनी बीवी को ज़चगी में ले जाना

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि० अपने ख़िलाफ़त के ज़माने में बसा औक़ात[2] रात को चौकीदारी के तौर पर शहर की हिफ़ाज़त भी करते थे। एक मर्तबा इसी हालत में एक मैदान में गुज़र हुआ, देखा कि एक ख़ेमा बालों का बना हुआ लगा हुआ है, जो पहले वहां नहीं देखा था। उसके क़रीब पहुंचे तो देखा कि एक साहब वहां बैठे हैं और ख़ेमे से कुछ कराहने की आवाज़ आ रही है। सलाम करके उन साहब के पास बैठ गये और दर्याफ़्त किया कि तुम कौन हो ? उन्होंने कहा, एक मुसाफ़िर हूं, जंगल का रहने वाला हूं। अमीरुल मोमिनीन के सामने कुछ अपनी ज़रूरत पेश करके मदद चाहने के वास्ते आया हूं। दर्याफ़्त फ़र्माया कि यह ख़ेमे में से कैसी आवाज़ आ रही है। इन साहब ने कहा, मियां जाओ, अपना काम करो। आपने इस्रार फ़र्माया कि नहीं बता दो, कुछ तक्लीफ़ की आवाज़ है। इन साहब ने कहा औरत की विलादत का वक़्त क़रीब है, दर्दे ज़ेह[3] हो रहा है। आपने दर्याफ़्त फ़र्माया कि कोई दूसरी औरत भी पास है। उन्होंने कहा, कोई नहीं।

आप वहां से उठे और मकान तशरीफ़ ले गये और अपनी बीवी उम्मे कुल्सूम रज़ि० से फ़र्माया कि एक बड़े सवाब की चीज़ मुक़द्दर से तुम्हारे लिए आई है। उन्होंने पूछा, क्या है ? आपने फ़र्माया, एक गांव की रहने वाली बेचारी तन्हा है उसको दर्दे ज़ेह हो रहा है। उन्होंने इर्शाद फ़र्माया कि हां, हां तुम्हारी सलाह हो, तो मैं तैयार हूं और क्यों न तैयार होती कि यह भी आख़िर हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ि० की ही

1. दुर्रेमंसूर, 2. कभी-कभी, 3. प्रसव-पीड़ा,

साहबज़ादी थीं। हज़रत उमर ने फ़र्माया कि बिलादत के वास्ते जिन चीज़ों की ज़रूरत पड़ती हो, तेल गूदड़, वग़ैरह, ले लो और एक हांडी और कुछ घी और दाने वग़ैरह भी साथ ले लो। वह लेकर चलीं। हज़रत उमर रज़ि० ख़ुद पीछे-पीछे हो लिये।

वहां पहुंचकर हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि० तो ख़ेमें चली गयीं और आपने आग जलाकर उस हांडी में दाने उबाले, और घी डाला। इतने में विलादत से फ़राग़त हो गई। अन्दर से हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि० ने आवाज़ देकर अर्ज़ किया, अमीरुल मोमिनीन ! अपने दोस्त को लड़का पैदा होने की बशारत[1] दीजिए।

अमीरुल मोमिनीन का लफ़्ज़ जब उस साहब के कान में पड़ा तो वह बड़े घबराये। आपने फ़र्माया घबराने की बात नहीं। वह हांडी ख़ेमे के पास रख दी कि उस औरत को भी कुछ खिला दें। हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि० ने उसको खिलाया। इसके बाद हांडी बाहर दे दी। हज़रत उमर रज़ि० ने उस बद्दू से कहा कि लो तुम भी खाओ, रात भर तुम्हारे जागने में गुज़र गई। इसके बाद अह्लिया को साथ लेकर घर तशरीफ़ ले आये और उन साहब से फ़र्मा दिया कि कल आना तुम्हारे लिए इंतिज़ाम कर दिया जायेगा।[2]

फ़— हमारे ज़माने का कोई बादशाह या रईस नहीं। कोई मामूली हैसियत का मालदार भी ऐसा है, जो ग़रीब की ज़रूरत में मुसाफ़िर की मदद के वास्ते इस तरह बीवी को रात में जंगल में ले जाये और ख़ुद अपने आप चूल्हा धौंक कर पकाए। मालदार को छोड़िए, कोई दीनदार भी ऐसा करता है ? सोचना चाहिए कि हम जिनके नाम लेवा हैं और उन जैसी बरकात की हर बात में उम्मीदें रखते हैं कोई काम भी हम उन जैसा कर लेते हैं।

9. अबू तल्हा का बाग़ वक़्फ़ करना

हज़रत अनस रज़ि० फ़र्माते हैं कि अबू तल्हा अंसारी रज़ि० मदीना मुनव्वरा में सबसे ज़्यादा और सबसे बड़े बाग़ वाले थे। उनका एक बाग़ था, जिसका नाम बेरहा था। वह उनको बहुत ही ज़्यादा महबूब था। मस्जिदे नबवी के क़रीब था। पानी भी उसमें निहायत शीरीं[3] और इफ़रात से था। हुज़ूर सल्ल० भी अक्सर उस बाग़ में तशरीफ़ ले जाते और उसका पानी नोश फ़र्माते। जब क़ुरआन शरीफ़ की

---

1. ख़ुशख़बरी, 2. दुर्रेमन्सूर, 3. मीठा।

आयत–

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ

लन् तनालुल बिर्र तुंफ़िक़ू मिम्मा तुहिब्बून०

तर्जुमा– तुम नेकी के कामिल दर्जे को नहीं पहुंच सकते, जब तक ऐसी चीज़ों से ख़र्च न करोगे, जो तुमको पसंद है।

नाज़िल हुई तो अबूतल्हा रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि मुझे अपना बाग़ बेरहा सबसे ज़्यादा महबूब है और अल्लाह तआला का इर्शाद है कि महबूब माल अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करो। इसलिए वह अल्लाह के रास्ते में देता हूं। आप जैसा मुनासिब समझें, उसके मुवाफ़िक़ उसको ख़र्च फ़र्मा दें। हुज़ूर सल्ल० ने बहुत ज़्यादा मसर्रत का इज़्हार फ़र्माया और फ़र्माया कि बहुत ही उम्दा माल है। मैं यह मुनासिब समझता हूं कि उसको अपने अह्ले क़राबत[2] में तक़्सीम कर दो। अबू तल्हा रज़ि० ने उसको अपने रिश्तेदारों में तक़्सीम फ़र्मा दिया।[3]

फ़—हम भी अपना कोई महबूबतरीन माल, जायदाद, कोई एक-आध वाज़ सुनकर, क़ुरआन पाक की कोई आयत पढ़कर या सुनकर इस तरह बे-धड़क ख़ैरात कर देते हैं। अगर वक़्फ़ वग़ैरह करने का ख़्याल भी आता है तो ज़िन्दगी से मायूस हो जाने के बाद वारिसों से ख़फ़ा होकर उनको महरूम करने की नीयत से और बरस के बरस इस सोच में लगा देते हैं कि कोई सूरत ऐसी पैदा हो जाए कि मेरी ज़िन्दगी में तो मेरे ही काम आये, बाद में जो हो वह होता रहे, हां, नाम व नमूद की कोई चीज़ हो, ब्याह-शादी की तक़रीब हो, तो सूदी क़र्ज़ से भी इन्कार नहीं।

10. हज़रत अबूज़र रज़ि० का अपने ख़ादिम को तंबीह फ़र्माना

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि० मशहूर सहाबी हैं, जिनके इस्लाम लाने का क़िस्सा बाब 1 के नं० 5 पर गुज़र चुका है। यह बड़े ज़ाहिद लोगों में थे। माल न अपने पास जमा रखते थे, न यह चाहते थे कि कोई दूसरा जमा रखे। मालदार लोगों से हमेशा लड़ाई रहती थी। इसलिए हज़रत उस्मान रज़ि० के हुक्म से रब्ज़ा में रहने लगे थे, जो जंगल में एक मामूली-

---

1. रिश्तेदारों, 2. दरेमंसूर,

सी आबादी थी।

हज़रत अबूज़र रज़ि० के पास चन्द ऊंट थे और एक नातवान ज़ईफ़[1] सा चरवाहा था, जो उनकी ख़बरगीरी करता था, उसी पर गुज़र था। एक शख़्स क़बीला बनूसुलैम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और यह तमन्ना ज़ाहिर की, कि मैं आपकी ख़िदमत में रहना चाहता हूं, ताकि आपके फ़ुयूज़[2] से इस्तिफ़ादा[3] करूं। मैं आपके चरवाहे की मदद करता रहूंगा और आपकी बरकात से फ़ायदा भी हासिल करूंगा।

हज़रत अबूज़र रज़ि० ने इर्शाद फ़र्माया कि मेरा दोस्त वह है जो मेरी इताअत करे, अगर तुम भी मेरी इताअत के लिए तैयार हो, शौक़ से रहो, कहना न मानो तो तुम्हारी ज़रूरत नहीं। सुलैमी साहब ने अर्ज़ किया, किस चीज़ में आप अपनी इताअत चाहते हैं। फ़र्माया कि जब मैं अपने माल में से किसी चीज़ के ख़र्च का हुक्म करूं तो उम्दा से उम्दा माल ख़र्च किया जाये।

वह कहते हैं कि मैंने क़ुबूल किया और रहने लगा। इत्तिफ़ाक़ से एक दिन किसी ने ज़िक्र किया कि पानी पर कुछ लोग रहते हैं, जो ज़रूरतमंद हैं, खाने के मुहताज हैं। मुझ से फ़र्माया, एक ऊंट ले आओ। मैं गया, मैंने देखा कि एक बहुत ही उम्दा ऊंट है जो निहायत क़ीमती, निहायत कारआमद और सवारी में मुतीअ[4]। मैंने हस्बे वायदा उसको ले जाने का इरादा किया, मगर मुझे ख़्याल हुआ कि ग़ुरबा को खिलाना ही तो हैं और यह ऊंट बहुत ज़्यादा कारआमद है, हज़रत की और मुताल्लिक़ीन की ज़रूरत का है, उसको छोड़कर उससे ज़रा कम दर्जे की उम्दा ऊंटनी कि उस ऊंट के अलावा और बाक़ी सबसे बेहतर थी, लेकर हाज़िरे ख़िदमत हुआ। फ़र्माया कि तुमने ख़ियानत की, मैं समझ गया और वापस आकर वही ऊंट ले गया। पास बैठने वालों से इर्शाद फ़र्माया कि दो आदमी ऐसे हैं, जो अल्लाह के वास्ते एक काम करें? दो आदमी उठे। उन्होंने अपने आपको पेश किया, फ़र्माया कि इसको ज़िब्ह करो और ज़िब्ह के बाद गोश्त काटकर जितने घर पानी पर आबाद हैं, उनको शुमार करके, अबूज़र रज़ि० का यानी अपना घर भी एक अदद उनमें शुमार कर लो, और सबको बराबर तक़्सीम कर दो। मेरे घर भी उतना ही जाये, जितना उनमें से हर घर में जाए। उन्होंने तामीले इर्शाद की और तक़्सीम कर दिया।

इसके बाद मुझे बुलाया और फ़र्माया कि तू ने मेरी वसीयत उम्दा माल ख़र्च

---

1. कमज़ोर-बूढ़ा, 2. फ़ैज़, मेहरबानीयों, 3. फ़ायदा उठाना, 4. इताअत गुज़ार,

करने की जान-बूझकर छोड़ी या भूल गया था ? अगर भूल गया था तो माज़ूर है। मैंने अर्ज़ किया कि भूला तो नहीं था। मैंने अव्वल उसी ऊंट को लिया था, मगर मुझे ख़्याल हुआ कि यह बहुत कारआमद है आपको अक्सर इसकी ज़रूरत रहती है, महज़ इस वजह से छोड़ दिया था। फ़र्माया कि महज़ मेरी ज़रूरत से छोड़ा था। अर्ज़ किया कि महज़ आपकी ज़रूरत से छोड़ा था। फ़र्माया अपनी ज़रूरत का दिन बताऊं ? मेरी ज़रूरत का दिन वह है जिस दिन मैं क़ब्र के गढ़े में अकेला डाल दिया जाऊंगा, वह दिन मेरी ज़रूरत और एहतियाज[1] का है।'

माल के अन्दर तीन हिस्सेदार हैं- एक तक़दीर, जो माल के ले जाने में किसी चीज का इन्तिज़ार नहीं करती। अच्छा-बुरा हर क़िस्म का ले जाती है। दूसरा वारिस जो इसके इन्तिज़ार में है, तू मरे तो वह ले ले और तीसरा हिस्सेदार तू ख़ुद है। अगर हो सकता हो और तेरी ताक़त में हो तो तीनों हिस्सेदारों में सबसे ज़्यादा आजिज़ न बन। अल्लाह तआला का इर्शाद है-

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ

लन् तनालुलबिर्रहत्ता तुंफ़िक़ू मिम्मातुहिब्बून०

इसलिए जो माल मुझे सबसे ज़्यादा पसन्द है, उसको मैं अपने लिए आगे चलता करूं, ताकि वह मेरे लिए जमा रहे[2]।

फ़— 'तीन हिस्सेदारों में सबसे ज़्यादा आजिज़ न बन' का मतलब यह है कि जो हो सके, अपने लिए आख़िरत का ज़ख़ीरा जमा कर ले। ऐसा न हो कि मुक़द्दर ग़ालिब आ जाए और वह माल तुझ से ज़ाया हो जाय या तू मर जाए और वह दूसरों के क़ब्ज़े में आ जाए कि बाद में कोई किसी को नहीं पूछता। आल-औलाद, बीवी-बच्चे, सब थोड़े-बहुत दिनों रोकर चुप हो जायेंगे। ऐसा बहुत कम होता है कि म[illegible]ाले के लिए भी कुछ सद्क़ा ख़ैरात कर दें और उसको याद रखें।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद वारिद है, आदमी कहता है कि मेरा माल, मेरा माल। हालांकि उसका माल सिर्फ़ वह है जो खा लिया और ख़त्म कर दिया या पहन लिया और पुराना कर दिया या अल्लाह के रास्ते में ख़र्च कर दिया और अपने लिए ख़ज़ाने में जमा कर दिया। इसके सिवा जो कुछ है, वह दूसरों का माल है, लोगों के लिए जमा कर रहा है।

एक हदीस में आया है, हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त फ़र्माया, तुम में से ऐसा कौन

---

1. मुहताजगी, 2. दुर्रेमंसूर,

शख़्स है जिसको अपने वारिस का माल अपने से अच्छा लगे। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! ऐसा कौन होगा जिसको दूसरे का माल अपने से ज़्यादा महबूब हो। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अपना माल सिर्फ़ वही है जो आगे भेज दिया जाए और जो छोड़ दिया, वह वारिस का माल है[1]।

11. हज़रत जाफ़र रज़ि० का क़िस्सा

हज़रत जाफ़र तैयार रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचाज़ाद भाई और हज़रत अली रज़ि० के हक़ीक़ी भाई हैं। अव्वल तो यह सारा ही घराना और ख़ानदान बल्कि आले-औलाद सख़ावत,[2] करम, शुजाअत[3], बहादुरी में मुमताज़ रहे और हैं, लेकिन हज़रत जाफ़र रज़ि० मसाकीन के साथ ख़ास ताल्लुक़ रखते थे और ज़्यादा उठना-बैठना ग़ुरबा ही के साथ होता था। कुफ़्फ़ार की तकालीफ़ से तंग होकर अव्वल हब्शा की हिजरत की और कुफ़्फ़ार ने वहां भी पीछा किया, तो नज़ाशी के यहां अपनी सफ़ाई पेश करना पड़ी, जिसका क़िस्सा पहले बाब के नं० 10 पर गुज़रा। वहां से वापसी पर मदीना तय्यिबा की हिजरत की और ग़ज़वा-ए-मौता में शहीद हुए जिसका क़िस्सा अगले बाब के ख़त्म पर आ रहा है।

इनके इंतिक़ाल की ख़बर पर हुज़ूर सल्ल० उनके घर ताज़ियत[4] के तौर पर तशरीफ़ ले गये और उनके साहबज़ादों अब्दुल्लाह और औन और मुहम्मद को बुलाया, वह सब कम उम्र थे। उनके सर पर हाथ फेरा और बरकत की दुआ फ़र्मायी। सारी ही औलाद में बाप का रंग था, मगर अब्दुल्लाह में सख़ावत का मज़मून बहुत ज़्यादा था। इसी वजह से उनका लक़ब क़ुत्बुएसख़ा (सख़ावत का क़ुत्ब) था। सात वर्ष की उम्र में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बैअत हुई।

इन्हीं अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि० से किसी शख़्स ने हज़रत अली करमल्लाहु वज्हहु के यहां सिफ़ारिश करायी। उनकी सिफ़ारिश पर उसका काम हो गया तो उसने नज़राने के तौर पर चालीस हज़ार दिरहम भेजे, उन्होंने वापस कर दिये कि हम लोग अपनी नेकी को फ़रोख़्त नहीं किया करते।

एक मर्तबा कहीं से दो हज़ार दिरहम नज़राने में आये, उसी मज़लिस में तक़्सीम फ़र्मा दिये। एक ताजिर बहुत सी शकर लेकर आया, मगर बाज़ार में फ़रोख़्त न हुई।

---

1. मिश्कात, 2. दान-पुण्य, 3. बहादुरी, 4. मातमपुर्सी,

उसको फ़िक्र व रंज हुआ। अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि० ने अपने कारिंदों से कहा कि सारी शक्र इसने ख़रीद लो और लोगों में मुफ़्त लुटा दो। रात को क़बीले में जो मेहमान आ जाता था, वह उनके यहां से खाना-पीना हर क़िस्म की ज़रूरियात[1] पूरी करता।[2]

हज़रत ज़ुबैर रज़ि० एक लड़ाई में शरीक थे। एक दिन अपने बेटे अब्दुल्लाह को वसीयत फ़र्मायी कि मेरा ख़्याल यह है कि आज मैं शहीद हो जाऊंगा, तुम मेरा क़र्ज़ा अदा कर देना, और फ़्लां-फ़्लां काम करना। यह वसीयतें करके उसी दिन शहीद हो गए। साहबज़ादे ने जब क़र्ज़ा को जोड़ा तो बाईस लाख दिरहम थे और यह क़र्ज़ा भी इसी तरह हुआ था कि अमानतदार बहुत मशहूर थे, लोग अपनी-अपनी अमानतें बहुत कसरत से रखते। यह फ़र्मा देते कि रखने की जगह तो मेरे पास नहीं, यह रक़म क़र्ज़ है, अब तुम्हें ज़रूरत हो तो ले लेना, यह कहकर उसको सदक़ा कर देते और यह भी वसीयत की कि जब कोई मुश्किल पेश आये तो मेरे मौला से कह देना।

अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि मैं मौला को न समझा। मैंने पूछा आपके मौला कौन ? फ़र्मायी कि अल्लाह तआला। चुनांचे हज़रत अब्दुल्लाह ने तमाम क़र्ज़ा अदा किया। कहते हैं कि जब कोई दिक़्क़त पेश आती तो मैं कहता, ऐ ज़ुबैर के मौला! फ़्लां काम नहीं होता, वह फ़ौरन हो जाता।

यह अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० कहते हैं कि मैंने एक बार इन अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि० से कहा कि मेरे वालिद के क़र्ज़े की फ़िहरिस्त में तुम्हारे ज़िम्मे दस लाख दिरहम लिखे हैं। कहने लगे कि जब चाहो ले लो। इसके बाद मालूम हुआ कि मुझ से ग़लती हुई। मैं दोबारा गया। मैंने कहा कि वह तो तुम्हारे उनके ज़िम्मे हैं। कहने लगे मैंने माफ़ कर दिए। मैंने कहा कि मैं माफ़ नहीं कराता। कहने लगे जब तुम्हें सहूलत हो, दे देना। मैंने कहा उसके बदले ज़मीन ले लो। ग़नीमत के माल में ज़मीन बहुत सी आयी हुई थी, अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि० ने कहा अच्छा। मैंने एक ज़मीन उनको दे दी जो मामूली हैसियत की थी। कि पानी वग़ैरह भी उसमें नहीं था। उन्होंने फ़ौरन क़ुबूल कर ली और ग़ुलाम से कहा उस ज़मीन में मुसल्ला बिछा दे। उसने मुसल्ला बिछा दिया,, दो रक्अत नमाज़ वहां पढ़ी और बहुत देर तक सज्दे में पड़े रहे। नमाज़ से फ़ारिग़ होकर ग़ुलाम से कहा कि इस जगह को खोदो। उसने खोदना शुरू किया एक पानी का चश्मा वहां से उबलने लगा।[3]

---

1. ज़रूरतें, 2. असाबा, 3. असदुलग़ाबा,

फ़— इन हज़रात सहाबा किराम रज़ि० के यहां यह और इसी क़िस्म की चीज़ें जो इस बाब में लिखी गयीं, कोई बड़ी बात न थी, इन हज़रात की आम आदतें ऐसी ही थीं।

सातवां बाब

बहादुरी, दिलेरी और मौत का शौक़

जिसका लाज़िमी नतीजा बहादुरी है कि जब आदमी मरने ही के सर हो जाये तो फिर सब कुछ कर सकता है। सारी बुज़दिली, सोच-फ़िक्र ज़िन्दगी ही के वास्ते है और जब मरने का इश्तियाक़ पैदा हो जाए तो न माल की मुहब्बत रहे और न दुश्मन का ख़ौफ़। काश मुझे भी उन सच्चों के तुफ़ैल यह दौलत नसीब हो जाती।

1. इब्ने जह्श रज़ि० और इब्ने सअद रज़ि० की दुआयें

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जह्श रज़ि० ने ग़ज़्वा-ए-उहद में हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० से कहा कि ऐ सअद ! आओ मिलकर दुआ करें। हर शख़्स अपनी ज़रूरत के मुवाफ़िक़ दुआ करे। दूसरा आमीन कहे कि यह क़ुबूल होने के ज़्यादा करीब है। दोनों हज़रात ने एक कोने में जाकर दुआ फ़र्मायी।

अव्वल हज़रत सअद रज़ि० ने दुआ की, या अल्लाह ! जब कल को लड़ाई हो तो मेरे मुक़ाबले में एक बड़े बहादुर को मुक़र्रर फ़र्मा जो सख़्त हमले वाला हो, वह मुझ पर सख़्त हमला करे और मैं उस पर ज़ोरदार हमला करूं। फिर मुझे उस पर फ़त्ताह नसीब फ़र्मा कि मैं उसको तेरे रास्ते में क़त्ल करूं और उसकी ग़नीमत हासिल करूं। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने आमीन कही और उस के बाद हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने दुआ की, ऐ अल्लाह ! कल को मैदान में एक बहादुर से मुक़ाबला करा। जो सख़्त हमले वाला हो, मैं उस पर शिद्दत से हमला करूं, वह भी मुझ पर ज़ोर से हमला करे और फिर वह मुझे क़त्ल कर दे, फिर मेरे नाक-कान काट ले। फिर क़यामत में जब तेरे हुज़ूर में पेशी हो, तो तू कहे कि अब्दुल्लाह! तेरे नाक-कान क्यों काटे गये ? हज़रत साद रज़ि० ने आमीन कही। दूसरे दिन लड़ाई हुई और दोनों

हज़रात की दुआएं उसी तरह से क़ुबूल हुई, जिस तरह मांगी थी।[1]

सअद रज़ि० कहते हैं कि अब्दुल्लाह बिन जह्श की दुआ मेरी दुआ से बेहतर थी। मैंने शाम को देखा कि उनके नाक-कान एक तागे में पिरोए हुए हैं, उहद की लड़ाई में उनकी तलवार भी टूट गयी थी। हुज़ूर सल्ल० ने उनको एक टहनी अता फ़र्मायी, जो उनके हाथ में जाकर तलवार बन गई और अर्से तक बाद में रही और दो सौ दीनार को फ़रोख़्त हुई।[2]

दीनार सोने के एक सिक्के का नाम है।

फ़ु– इस क़िस्से में जहां एक जानिब कमाले बहादुरी है कि बहादुर दुश्मन से मुक़ाबले की तमन्ना है वहां दूसरी जानिब कमाले इश्क़ भी है कि महबूब के रास्ते में बदन के टुकड़े-टुकड़े होने की तमन्ना करे और आख़िर में जब वह पूछें कि यह सब क्यों हुआ, तो मैं अर्ज़ करूं कि तुम्हारे लिए-

रहेगा कोई तो तेग़े सितम की यादगारों में।
मेरे लाशे के टुकड़े दफ़्न करना सौ मज़ारों में।।

2. उहद की लड़ाई में हज़रत अली रज़ि० की बहादुरी

ग़ज़्वा-ए-उहद में मुसलमानों को कुछ शिकस्त हुई थी, जिसकी बड़ी वजह नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक इर्शाद पर अमल न करना था, जिसका ज़िक्र बाब 1 क़िस्सा 2 में गुज़र चुका।

उस वक़्त मुसलमान चारों तरफ़ से कुफ़्फ़ार के बीच में आ गये, जिसकी वजह से बहुत से लोग शहीद भी हुए और कुछ भागे भी। नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी कुफ़्फ़ार के एक जत्थे के बीच में आ गये और कुफ़्फ़ार ने यह मशहूर कर दिया था कि हुज़ूर सल्ल० शहीद हो गये।

सहाबा रज़ि० इस ख़बर से बहुत परेशान हाल थे और इसी वजह से बहुत से भागे और इधर उधर मुतफ़र्रिक़[3] हो गए। हज़रत अली करमल्लाहु वज्हहू फ़र्माते

1. ख़मीस 2. असाबा, 3. बिखर जाना,

हैं कि जब कुफ़्फ़ार ने मुसलमानों को घेर लिया और हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरी नज़र से ओझल हो गए, तो मैंने हुज़ूर सल्ल० को अव्वल ज़िंदों में तलाश किया, न पाया, फिर शहीदों में जाकर तलाश किया, वहां भी न पाया तो मैंने अपने दिल में कहा कि ऐसा तो हो नहीं सकता कि हुज़ूर सल्ल० लड़ाई से भाग जाएं। बज़ाहिर हक़ तआला शानुहू हमारे आमाल की वजह से हम पर नाराज़ हुए, इसलिए अपने पाक रसूल सल्ल० को आसमान पर उठा लिया, इसलिए अब इससे बेहतर कोई सूरत नहीं कि मैं भी तलवार लेकर काफ़िरों के जत्थे में घुस जाऊं, यहां तक कि मारा जाऊं।

मैंने तलवार लेकर हमला किया, यहां तक कि कुफ़्फ़ार बीच में से हटते गये और मेरी निगाह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर पड़ गयी, तो बेहद मसर्रत हुई और मैंने समझा कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने मलाइका[1] के ज़रिए से अपने महबूब की हिफ़ाज़त की। मैं हुज़ूर सल्ल० के पास जाकर खड़ा हुआ कि एक जमाअत की जमाअत कुफ़्फ़ार की हुज़ूर सल्ल० पर हमला के लिए आयी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि अली ! इनको रोको।

मैंने तन्हा ने उस जमाअत का मुक़ाबला किया और उनके मुंह फेर दिये और बाज़ों को क़त्ल कर दिया। इसके बाद फिर एक और जमाअत हुज़ूर सल्ल० पर हमले की नीयत से बढ़ी। आपने फिर हज़रत अली की तरफ़ इशारा फ़र्माया। उन्होंने फिर तन्हा उस जमाअत का मुक़ाबला किया। इसके बाद हज़रत जिब्रील अलै० ने आकर हज़रत अली रज़ि० की इस जवांमर्दी और मदद की तारीफ़ की तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, 'इन्नहू मिन्नी व अना मिन्हु' (बिशक अली मुझ से हैं और मैं अली से हूं) यानी कमाले इत्तिहाद की तरफ़ इशारा फ़र्माया, तो हज़रत जिब्रील ने अर्ज़ किया, 'व अनामिन्कुमा' (मैं तुम दोनों से हूं)।[2]

फ़— एक तन्हा आदमी का जमाअत से भिड़ जाना और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुक़द्दस ज़ात को न पाकर मर जाने की नीयत से कुफ़्फ़ार के जमघटे में घुस जाना, जहां एक तरफ़ हुज़ूर सल्ल० के साथ सच्ची मुहब्बत और इश्क़ का पता देता है, वहां दूसरी जानिब कमाले बहादुरी और दिलेरी, जुर्अत का भी नक़्शा है।

---

1. फ़रिश्तों, 2. कुर्रतुल उयून,

3. हज़रत हंज़ला रज़ि० की शहादत

ग़ज़्वा-ए-उहुद में हज़रत हंज़ला रज़ि० अव्वल से शरीक नहीं थे। कहते हैं कि उनकी नई शादी हुई थी, बीवी से हम-बिस्तर हुए थे। उसके बाद ग़ुस्ल की तैयारी कर रहे थे और ग़ुस्ल करने के लिए बैठ भी गए, सर को धो रहे थे कि एकदम मुसलमानों के शिकस्त की आवाज़ कान में पड़ी, जिसकी ताब न ला सके। उसी हालत में तलवार हाथ में ले ली और लड़ाई के मैदान की तरफ़ बढ़े चले गए और कुफ़्फ़ार पर हमला किया और बराबर बढ़ते चले गए कि उसी हालत में शहीद हो गए। चूंकि शहीद को अगर जुनबी न हो तो बग़ैर ग़ुस्ल दिए दफ़न किया जाता है, इसलिए उनको भी उसी तरह कर दिया। मगर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल ने देखा, मलायका उन्हें ग़ुस्ल दे रहे हैं, हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा से मलाइका के ग़ुस्ल देने का तज़्किरा फ़र्माया।

अबूसईद साइदी रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद सुनकर हंज़ला रज़ि० को जाकर देखा तो उनके सर से ग़ुस्ल का पानी टपक रहा था। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वापसी पर तहक़ीक़ फ़र्माया तो उनके बग़ैर नहाये जाने का क़िस्सा मालूम हुआ।[1]

फ़ु०— यह भी कमाले बहादुरी है। बहादुर आदमी को अपने इरादे में तास्ख़ीर करना दुश्वार होता है, इसीलिए इतना इन्तिज़ार भी नहीं किया कि ग़ुस्ल पूरा कर लेते।

4. अम्र बिन जमूह रज़ि० की तमन्ना-ए-शहादत

हज़रत अम्र बिन जमूह रज़ि० पांव से लंगड़े थे। उनके चार बेटे थे, जो अक्सर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में भी हाज़िर होते और लड़ाइयों में शिर्कत भी करते थे। ग़ज़्वा-ए-उहद में उम्र बिन ज़मूह रज़ि० को भी शौक़ पैदा हुआ कि मैं भी जाऊं। लोगों ने कहा, तुम माज़ूर हो, लंगड़े पन की वजह से चलना दुश्वार है। उन्होंने फ़र्माया, कैसी बुरी बात है कि मेरे बेटे तो जन्नत में जाएं और मैं रह जाऊं। बीवी ने भी

1. नापाक,

उभारने के लिए ताने के तौर पर कहा कि मैं तो देख रही हूं कि वह लड़ाई से भाग कर लौट आया। अम्र रज़ि० ने यह सुनकर हथियार लिये और क़िब्ले की तरफ़ मुंह करके दुआ की, 'अल्लाहुम्मा ला तरद्दनी इला अह्ली' (ऐ अल्लाह ! मुझे अपने अह्ल की तरफ़ न लौटाइयो)।'

इसके बाद हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अपनी क़ौम के मना करने का और अपनी ख़्वाहिश का इज़्हार किया और कहा कि मैं उम्मीद करता हूं कि अपने लंगड़े पैर से जन्नत में चलूं-फिरूं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि अल्लाह ने तुम को माज़ूर किया है, तो न जाने में क्या हर्ज है। उन्होंने फिर ख़्वाहिश की, तो आपने इजाज़त दे दी।

अब्दुल्ला रज़ि० कहते हैं कि मैंने अम्र रज़ि० को लड़ाई में देखा कि अकड़ते हुए जाते थे और कहते थे कि ख़ुदा की क़सम ! मैं जन्नत का मुश्ताक़[1] हूं। उनका एक बेटा भी उनके पीछे दौड़ा हुआ जाता था। दोनों लड़ते रहे हत्ताकि दोनों शहीद हुए उनकी बीवी अपने ख़ाविन्द और बेटे की लाश को ऊंट पर लादकर दफ़्न के लिए मदीना लाने लगीं तो वह ऊंट बैठ गया। बड़ी दिक़्क़त से उसको मार कर उठाया और मदीना लाने की कोशिश की, मगर वह उहद की तरफ़ मुंह करता था। उनकी बीवी ने हुज़ूर सल्ल० से ज़िक्र किया। आपने फ़र्माया, ऊंट को यही हुक्म है। क्या अम्र चलते हुए कुछ कहकर गये थे, उन्होंने अर्ज़ किया कि क़िब्ले की तरफ़ मुंह करके यह दुआ की थी, 'अल्लाहुम्मा ला तरद्दनी इला अह्ली' आपने फ़र्माया, इसी वजह से यह ऊंट इस तरफ़ नहीं जाता[2]।

फ़— इसी का नाम है जन्नत का शौक़ और यही है वह सच्चा इश्क़ अल्लाह का और उसके रसूल का, जिसकी वजह से सहाबा रज़ि० कहां से कहां पहुंच गये कि उनके जख़्मे मरने के बाद भी वैसे ही रहते। बहुतेरी कोशिश की कि ऊंट चले मगर, वह या तो बैठ जाता था या उहद की तरफ़ चलता था।

5. हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ि० की शहादत

हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ि० इस्लाम लाने से पहले बड़े नाज़ के पले हुए

1. शौक़ व तमन्ना करने वाला, 2. कुर्

और मालदार लड़कों में थे। उनके बाप इनके लिए दो-दो सौ दिरहम का जोड़ा ख़रीद कर पहनाते थे, नव उम्र थे, बहुत ज़्यादा नाज़ व नेमत में परवरिश पाते थे। इस्लाम के शुरू ही ज़माने में घर वालों से छुपकर मुसलमान हो गये और उसी हालत में रहते। किसी ने उनके घर वालों को भी ख़बर दी। उन्होंने उनको बांधकर क़ैद कर दिया। कुछ रोज़ इसी हालत में गुज़रे और जब मौक़ा मिला, तो छुपकर भाग गये और जो लोग हब्शा की हिजरत कर रहे थे उनके साथ हिजरत करके चले गये। वहां से वापस आकर मदीना मुनव्वरा की हिजरत फ़र्मायी और ज़ुह्द व फ़क्र[1] की ज़िंदगी बसर करने लगे और ऐसी तंगी की हालत थी कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ फ़र्मा थे। हज़रत मुस्अब सामने से गुज़रे। उनके पास सिर्फ़ एक चादर थी जो कई जगह से फटी हुई थी और एक जगह बजाय कपड़े के चमड़े का पेवंद लगा हुआ था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनकी इस हालत और उस पहली हालत का तज़्किरा फ़र्माते हुए आंखों में आंसू भर लाये।

ग़ज़्वा-ए-उहद में मुहाजिरीन का झंडा उनके हाथ में था। जब मुसलमान निहायत परेशानी की हालत में मुंतशिर हो रहे थे, तो यह जमे हुए खड़े थे। एक काफ़िर उनके क़रीब आया और तलवार से हाथ काट दिया कि झंडा गिर जाये और मुसलमानों को गोया खुली शिकस्त हो जावे। उन्होंने फ़ौरन दूसरे हाथ में ले लिया। उसने दूसरे हाथ को भी काट डाला। उन्होंने दोनों बाज़ुओं को जोड़कर सीने से झंडे को चिमटा लिया कि गिरे नहीं। उसने उनके तीर मारा, जिससे शहीद हो गए, मगर ज़िंदगी में झंडे को गिरने न दिया। इसके बाद झंडा गिरा, जिसको फ़ौरन दूसरे शख़्स ने उठा लिया।

जब उनको दफ़न करने की नौबत आयी तो सिर्फ़ एक चादर उनके पास थी, जो पूरे बदन पर नहीं आती थी। अगर सर की तरफ़ से ढांका जाता तो पांव खुल जाते और पांव की तरफ़ की जाती तो सर खुल जाता। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि चादर को सर की जानिब कर दिया जाये और पांव पर इज़ख़िर के पत्ते डाल दिया जाए।[2]

फ़– यह आख़िरी ज़िन्दगी है उस नाज़ुक और नाज़ों में पले हुए की, जो दो सौ दिरहम का जोड़ा पहनता था कि आज उसको कफ़न की एक चादर भी पूरी नहीं मिलती और उस पर हिम्मत यह कि ज़िन्दगी में झंडा गिरने न दिया। दोनों

---

1. तंगी, 2. कुरे, असाबा

हाथ कट गये मगर फिर भी उसको न छोड़ा। बड़े नाज़ों के पले हुए थे, मगर ईमान उन लोगों के दिलों में कुछ ऐसी तरह से जमता था कि फिर वह अपने सिवा किसी चीज़ को भी न छोड़ता था। रुपया-पैसा, राहत-आराम, हर किस्म की चीज़ से हटाकर अपने में लगा लेता था।

6. यर्मूक की लड़ाई में हज़रत सअद रज़ि० का ख़त

इराक़ की लड़ाई के वक़्त हज़रत उमर रज़ि० का इरादा ख़ुद लड़ाई में शिर्कत फ़र्माने का था, अवाम और ख़वास दोनों क़िस्म के मज्मों में कई रोज़ तक इसमें मश्वरा होता रहा कि हज़रत उमर रज़ि० का ख़ुद शरीक होना ज़्यादा मुनासिब है या मदीना रह कर लश्करों के रवाना करते रहने का इंतिज़ाम ज़्यादा मुनासिब है। अवाम की राय थी कि ख़ुद शिर्कत मुनासिब है और ख़्वास की राय थी कि दूसरी सूरत ज़्यादा बेहतर है। मश्वरों की गुफ़्तगू में हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० का भी तज़्करा आ गया। उनको सबने पसंद कर लिया कि उनको अगर भेजा जावे तो बहुत मुनासिब है, फिर हज़रत उमर रज़ि० के जाने की ज़रूरत नहीं।

हज़रत सअद रज़ि० बड़े बहादुर और अरब के शेरों में शुमार होते थे, ग़रज़ यह तज्वीज़ हो गई और उनको भेज दिया गया। जब क़ादसिया पर हमला के लिए पहुंचे तो शाहकिस्रा ने उनके मुक़ाबले के लिए रुस्तम को जो मशहूर पहलवान था, तज्वीज़ किया। रुस्तम ने हर चन्द कोशिश की और बादशाह से बार-बार इसकी दर्ख़्वास्त की कि मुझे अपने पास रहने दें। ख़ौफ़ का ग़ल्बा था, मगर इज़्हार इसका करता था कि मैं यहां से लश्करों के भेजने में और सलाह-मश्वरा में मदद करूंगा। मगर बादशाह ने जिसका नाम यज़्दजुर्द था। क़ुबूल न किया और उसको मजबूरन जंग में शरीक होना पड़ा।[1]

हज़रत सअद रज़ि० जब रवाना होने लगे तो हज़रत उमर रज़ि० ने उनको वसीयत फ़र्मायी, जिसके अल्फ़ाज़ का मुख़्तसर तर्जुमा यह है- सअद तुम्हें यह बात धोखे में न डाले कि तुम हुज़ूर सल्ल० के मामू कहलाते हो और हुज़ूर सल्ल० के सहाबी हो। अल्लाह तआला बुराई को बुराई से नहीं धोते, बल्कि बुराई को भलाई से धोते

1. अज़्हर,

हैं, अल्लाह तआला के और बन्दों के दर्मियान कोई रिश्ता नहीं है। उसके यहां सिर्फ़ उसकी बन्दगी मक़बूल है। अल्लाह के यहां शरीफ़-रज़ील[1] सब बराबर हैं, सब ही उसके बन्दे हैं और वह सबका रब है। उसके इन्आमात बन्दगी से हासिल होते हैं हर अम्र में इस चीज़ को देखना, जो हुज़ूर सल्ल० का तरीक़ा था, वही अमल की चीज़ है। मेरी इस नसीहत को याद रखना। तुम एक बहुत बड़े काम के लिए भेजे जा रहे हो, उससे छुटकारा सिर्फ़ हक़ के इत्तिबाअ से हो सकता है। अपने आप को और अपने साथियों को ख़ूबी का आदी बनाना, अल्लाह के ख़ौफ़ को इख़्तियार करना, और अल्लाह का ख़ौफ़ दो बातों में जमा होता है- उसकी इताअत में और गुनाह से परहेज़ करने में और अल्लाह की इताअत जिसको भी नसीब हुई, दुनियां से बुग्ज़ और आख़िरत की मुहब्बत से नसीब हुई।[2]

इसके बाद हज़रत सअद रज़ि० निहायत बशाश्त[3] से लश्कर लेकर रवाना हुए, जिसका अन्दाज़ा उस ख़त से होता है, जो उन्होंने रुस्तम को लिखा है, जिसमें वह लिखते हैं, फ़ इन्न मअिय क़ौमंय्युहिब्बुनल मौत कंमा युहिब्बूनल अआजिमुल ख़म्र बेशक मेरे साथ ऐसी जमाअत है, जो मौत को ऐसा ही महबूब रखती है, जैसा कि तुम लोग शराब पीने को महबूब रखते हो।[4]

फ़— शराब के दिलदादों से पूछो कि इसमें क्या मज़ा है। जो लोग मौत को ऐसा महबूब रखते हों, कामियाबी क्यों न उनके क़दम चूमे।

7. हज़रत वह्ब बिन क़ाबूस रज़ि० की उहद में शहादत

हज़रत वह्ब बिन क़ाबूस रज़ि० एक सहाबी हैं जो किसी वक़्त में मुसलमान हुए थे और अपने घर किसी गांव में रहते थे, बकरियां चराते थे, अपने भतीजे के साथ एक रस्सी में बकरियां बांधे हुए मदीना मुनव्वरा पहुंचे, पूछा कि हुज़ूर सल्ल० कहां तशरीफ़ ले गये। मालूम हुआ कि उहद की लड़ाई पर गये हुए हैं। बकरियों को वहीं छोड़कर हुज़ूर सल्ल० के पास पहुंच गये। इतने में एक जमाअत कुफ़्फ़ार की हमला करती हुई आयी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, जो उनको मुंतशिर[5] कर दे, वह जन्नत में मेरा साथी है। हज़रत वह्ब रज़ि० ने ज़ोर से तलवार चलानी शुरू की

1. अच्छे बुरे 2. अफ़्हर, 3. ख़ुशी-ख़ुशी, 4. तफ़्सीरी अज़ीज़ी अव्वल, 5. बिखरादे,

और सबको हटा दिया। दूसरी मर्तबा फिर यही सूरत पेश आयी। तीसरी मर्तबा फिर ऐसा ही हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने उनको जन्नत की ख़ुशख़बरी दी। इसका सुन्ना था कि तलवार लेकर कुफ़्फ़ार के जमघटे में घुस गये और शहीद हुए।

हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० कहते हैं कि मैंने वह्ब रज़ि० जैसी दिलेरी और बहादुरी किसी की भी किसी लड़ाई में नहीं देखी और शहीद होने के बाद हुज़ूर सल्ल० को मैंने देखा कि वह्ब रज़ि० के सिरहाने खड़े थे और इर्शाद फ़र्माते थे कि अल्लाह तुम से राज़ी हो, मैं तुम से राज़ी हूं। इसके बाद ख़ुद हुज़ूर सल्ल० ने अपने दस्ते मुबारक से दफ़न फ़र्माया, बावजूद यह कि उस लड़ाई में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुद भी ज़ख़्मी थे।

हज़रत उमर रज़ि० फ़र्माते थे कि मुझे किसी के अमल पर भी इतना रश्क नहीं आया, जितना वह्ब रज़ि० के अमल पर आया। मेरा दिल चाहता है कि अल्लाह के यहां उन जैसा आमालनामा लेकर पहुंचूं।[1]

फ़— उन पर रश्क उस ख़ास कारनामे की वजह से है कि जान को जान नहीं समझा वरना ख़ुद हज़रत उमर रज़ि० और दूसरे हज़रात के दूसरे कारनामे इससे कहीं बढ़े हुए हैं।

8 बिअरेमऊना की लड़ाई

बिअरे मऊना की लड़ाई एक मशहूर लड़ाई है, जिसमें सत्तर सहाबा रज़ि० की एक जमाअत पूरी की पूरी शहीद हुई, जिनको क़ुर्रा[2] कहते हैं, इसलिए कि सब हज़रात क़ुरान मजीद के हाफ़िज़ थे और सिवाए चन्द मुहाजिरीन के अक्सर अंसार थे। हुज़ूरे सल्ल० को उनके साथ बड़ी मुहब्बत थी, क्योंकि यह हज़रात रात का अक्सर हिस्सा ज़िक्र व तिलावत में गुज़ारते थे और दिन को हुज़ूर सल्ल० की बीवियों के घरों की ज़रूरियात लकड़ी, पानी वग़ैरह पहुंचाया करते थे। इस मक़्बूल जमाअत को नज्द का रहने वाला क़ौम बनी आमिर का एक शख़्स जिसका नाम आमिर बिन मालिक और कुन्नियत अबूबरा थी, अपने साथ अपनी पनाह में तब्लीग़ और वाज़ के नाम से ले गया था।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद भी फ़र्माया कि मुझे अंदेशा

---

1. असाबा, क़ुर्रा, 2. क़ुरआन पढ़ने वाले,

है कि मेरे अस्हाब को मज़र्रत[1] न पहुंचे, मगर उस शख़्स ने बहुत ज़्यादा इत्मीनान दिलाया। आपने इन सत्तर सहाबा रज़ि० को हमराह कर दिया और एक वालानामा आमिर बिन तुफ़ैल के नाम जो बनी आमिर का रईस था, तहरीर फ़र्माया, जिसमें इस्लाम की दावत थी। यह हज़रात मदीने से रुख़्सत होकर बिअरे मऊना पहुंचे तो ठहर गये और दो साथी एक हज़रत उमर बिन उमैया रज़ि०, दूसरे हज़रत मुंज़िर बिन उमर रज़ि० सब के ऊंटों को लेकर चराने के लिए तशरीफ़ ले गये और हज़रत हराम रज़ि० अपने साथ दो हज़रात को साथियों में से लेकर आमिर बिन तुफ़ैल के पास हुज़ूर सल्ल० का वालानामा देने के लिए तशरीफ़ ले गये। क़रीब पहुंच कर हज़रत हराम रज़ि० ने अपने दोनों साथियों से फ़र्माया कि तुम यहां ठहर जाओ, मैं आगे जाता हूं। अगर मेरे साथ कोई दग़ा न की गई तो तुम भी चले आना, वरना यहीं से वापस हो जाना कि तीन के मारे जाने से एक का मारा जाना बेहतर है।

आमिर बिन तुफ़ैल उस आमिर बिन मालिक का भतीजा था, जो इन सहाबा रज़ि० को अपने साथ लाया था। उसको इस्लाम से और मुसलमानों से ख़ास अदावत थी। हज़रत हराम रज़ि० ने वालानामा दिया तो उसने ग़ुस्से में पढ़ा भी नहीं, बल्कि हज़रत हराम रज़ि० के एक ऐसा नेज़ा मारा जो पार निकल गया।

हज़रत हराम रज़ि० 'फ़ुज़्तु व रब्बिल कअबति' (रब्बे काबा की क़सम, मैं तो कामियाब हो गया) कहकर जां-ब-हक़[2] हुए।

उसने न इसकी परवाह की कि क़ासिद को मारना किसी क़ौम के नज़दीक भी जायज़ नहीं और न इसका लिहाज़ किया कि मेरा चचा इन हज़रात को अपनी पनाह में लाया है। उनको शहीद करने के बाद उसने अपनी क़ौम को जमा किया और इस पर आमादा किया कि इन मुसलमानों में से एक को भी ज़िन्दा न छोड़ो, लेकिन इन लोगों ने अबूबरा की पनाह की वजह से तरद्दुद किया तो उसने आस-पास के और लोगों को जमा किया, बहुत बड़ी जमाअत के साथ इन सत्तर सहाबी रज़ि० का मुक़ाबला किया। यह हज़रात आख़िर कहां तक मुक़ाबला करते और चारों तरफ़ से कुफ़्फ़ार में घिरे हुए थे। बजुज़ एक काब बिन ज़ैद रज़ि० के, जिन में कुछ ज़िन्दगी की रमक़[3] बाक़ी थी और कुफ़्फ़ार उनको मुर्दा समझ कर छोड़ गये थे, बाक़ी सब शहीद हो गये।

---

1. नुक़सान 2. इंतिक़ाल फ़रमा गये, 3. यानी सांस चल रही थी,

हज़रत उमर रज़ि और मुंज़िर, जो ऊंट चराने गए हुए थे, उन्होंने आसमान की तरफ़ देखा तो मुर्दारख़ोर जानवर उड़ रहे थे। दोनों हज़रात यह कहकर लौटे कि ज़रूर कोई हादसा पेश आया। यहां आ कर देखा तो अपने साथियों को शहीद पाया और सवारों को ख़ून की भरी हुई तलवारें लिए हुए उनके गिर्द चक्कर लगाते देखा। यह हालत देख कर दोनों हज़रात ठिठके और बाहम मश्वरा किया कि क्या करना चाहिए।

उमर बिन उमैया रज़ि० ने कहा कि चलो वापस चलकर हुज़ूर सल्ल० को इत्तिला दें। मगर हज़रत मुंज़िर रज़ि० ने जवाब दिया कि ख़बर तो हो ही जायेगी। मेरा तो दिल नहीं मानता कि शहादत को छोड़ूं और उस जगह से चला जाऊं, जहां हमारे दोस्त पड़े सो रहे हैं। आगे बढ़ो और साथियों से जा मिलो। चुनांचे दोनों आगे बढ़े और मैदान में कूद गए। हज़रत मुंज़िर रज़ि० शहीद हुए और हज़रत उमर बिन उमैया रज़ि० गिरफ़्तार हुए, मगर चूंकि आमिर की मां के ज़िम्मे किसी मन्नत के सिलसिले में एक ग़ुलाम का आज़ाद करना था, इसलिए आमिर ने उनको इस मन्नत में आज़ाद कर दिया।

इन हज़रात में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० के ग़ुलाम हज़रत आमिर बिन फ़ुहैरा रज़ि० भी थे। उनके क़ातिल जब्बार बिन सलमा कहते हैं कि मैंने जब उनके बरछा मारा और वह शहीद हुए तो उन्होंने कहा, फ़ुज़्तु बल्लाहि (ख़ुदा की क़सम! मैं कामियाब हुआ) इसके बाद मैंने देखा कि उनकी लाश आसमान को उड़ी चली गई। मैं बहुत मुतहय्यर[1] हुआ और मैंने बाद में लोगों से पूछा कि मैंने ख़ुद बरछा मारा, वह मरे, लेकिन फिर भी वह कहते हैं, मैं कामियाब हो गया, तो वह कामियाबी क्या थी ? लोगों ने बताया कि वह कामियाबी जन्नत की थी, इस पर मैं मुसलमान हो गया।[2]

फ़— यह ही हैं वह लोग, जिन पर इस्लाम को बजा तौर पर फ़ख़्र है। बेशक मौत उनके लिए शराब से ज़्यादा महबूब थी और क्यों न होती, जब दुनिया में काम ही ऐसे किये थे, जिन पर अल्लाह के यहां की सुर्ख़ रूई[3] यक़ीनी थी, इसलिए जो मरता था, वह कामियाब होता था।

---

1. हैरत व ताज्जुब में, 2. ख़मीस 3. कामियाबी.

आ रही है।

5. हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० का ख़ून पीना

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मरतबा सींगियाँ लगवायीं और जो ख़ून निकला वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० को दिया कि उसको कहीं दबा दें, वह गये और आकर अर्ज़ किया कि दबा दिया। हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त फ़र्माया कहां ? अर्ज़ किया, मैंने पी लिया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि जिसके बदन में मेरा ख़ून जायेगा, उसको जहन्नम की आग नहीं छू सकती, मगर तेरे लिए भी लोगों से हलाकत है और लोगों को तुझसे।[1]

फ़– हुज़ूर सल्ल० के फ़ुज़्लात, पाख़ाना-पेशाब वग़ैरह सब पाक हैं। इसलिए इसमें कोई इश्काल नहीं। हुज़ूर सल्ल० के इस इर्शाद का मतलब कि हलाकत है, उलमा ने लिखा है कि सल्तनत और इमारत की तरफ़ इशारा है कि इमारत होगी और लोग उसमें मुज़ाहिम[2] होंगे। चुनांचे अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० जब पैदा हुए थे, उस वक़्त भी हुज़ूर सल्ल० ने इस तरफ़ इशारा फ़र्माया था कि एक मेंढ़ा है, भेड़ियों के दर्मियान, ऐसे भेड़िये जो कपड़े पहने हुए होंगे, चुनांचे यज़ीद और अब्दुल मलिक दोनों के साथ हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० की मशहूर लड़ाई हुई और आख़िर शहीद हुए।

6. हज़रत मालिक बिन सिनान रज़ि० का ख़ून पीना

उहद की लड़ाई में जब नबी अक़रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहरा-ए-अन्वर या सरे मुबारक में ख़ोद के दो हल्क़े घुस गये थे तो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु दौड़े हुए आगे बढ़े और दूसरी जानिब से हज़रत अबूउबैदा रज़ि० दौड़े और आगे बढ़ कर ख़ोद के हल्क़े दांत से खींचने शुरू किए। एक हल्क़ा निकाला, जिससे एक दांत हज़रत अबूउबैदा रज़ि० का टूट गया, इसकी परवाह न की। दूसरा हल्क़ा खींचा, जिससे दूसरा दांत भी टूटा, लेकिन हल्क़ा वह भी खींच ही लिया। इन हल्क़ों के निकलने से हुज़ूर सल्ल० के पाक जिस्म से ख़ून निकलने लगा, तो हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० के वालिद माजिद मालिक बिन सिनान रज़ि०

---

1. ख़मीस, 2. रोक बनेंगे,

Click-->

Click-->

Click-->

Click-->

बुरी तरह से पढ़ाते थे, आप ख़ुद ही सोच लीजिए कि कितना वजन रखता है। बनिये की दुकान पर जाने के वास्ते या अंग्रेजों की चाकरी के वास्ते 3/4 की तालीम अहमियत रखती हो, मगर अल्लाह के यहां तालीमे क़ुरआन सब से अहम है।

4. ख़ुशआवाज़ी से पढ़ो जैसा कि इससे पहली हदीस में गुज़र चुका।

5. और इसके माना में ग़ौर करो। तौरात से उहया में नक़्ल किया है, हक़ सुब्हानुहू व तक़द्दुस इर्शाद फ़रमाते हैं, ऐ मेरे बन्दे ! तुझे मुझ से शर्म नहीं आती। तेरे पास रास्ते में किसी दोस्त का ख़त आ जाता है तो चलते-चलते रास्ते में ठहर जाता है, अलग बैठ कर ग़ौर से पढ़ता है, एक-एक लफ़्ज़ पर ग़ौर करता है, मेरी किताब तुझ पर गुज़रती है मैं ने इस में सब कुछ वाज़ेह कर दिया है। बाज़ अहम उमूर का बार-बार तकरार किया है ताकि तू इस पर ग़ौर करे और तू बे-परवाही से उड़ा देता है। क्या मैं तेरे नज़दीक तेरे दोस्तों से भी ज़लील हूं। ऐ मेरे बंन्दे ! तेरे बाज़ दोस्त तेरे पास बैठ कर बातें करते हैं तू हमातन इधर मुतवज्जह हो जाता है। कान लगाता है, ग़ौर करता है, कोई बीच में तुझसे बात करने लगता है तो तू इशारे से उसको रोकता है, मना करता है, मैं तुझसे अपने कलाम के ज़रिए से बातें करता हूं और तू ज़रा भी मुतवज्जह नहीं होता। क्या मैं तेरे नज़दीक तेरे दोस्तों से भी ज़्यादा ज़लील हूं। आह ! तदब्बुर और ग़ौर के मुताल्लिक़ कुछ मुक़दमे में और कुछ हदीस न० 8 के ज़ेल में मज़्कूर हो चुका है।

6. और इसका बदला दुनियां में न चाहो यानी तिलावत पर कोई मुआवज़ा न लो कि आख़िरत में इसका बहुत बड़ा मुआवज़ा मिलने वाला है। दुनियां में अगर इसका मुआवज़ा ले लिया जावेगा तो ऐसा है जैसा कि रुपयों के बदले कोई शख़्स कोड़ियों पर राज़ी हो जावे। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जब मेरी उम्मत दीनार व दिरहम को बड़ी-चीज़ समझने लगेगी, इस्लाम की हैबत[1] इससे जाती रहेगी और जब अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुन्कर छोड़ देगी तो बरकते वही से यानी फ़हमे क़ुरआन से महरूम हो जाएगी। 'कज़ा फ़िल एह्याई अल्लाहुम्मह फ़ज़्ना मिन्हु०' كَذَا فِي الْإِحْيَاءِ اَللّٰهُمَّ احْفَظْنَا مِنْهُ

(٢٨) عَنْ وَاثِلَةَ رَفَعَهُ أُعْطِيْتُ مَكَانَ التَّوْرٰةِ السَّبْعَ وَأُعْطِيْتُ مَكَانَ الزَّبُوْرِ الْمِئِيْنَ وَأُعْطِيْتُ مَكَانَ الْإِنْجِيْلِ الْمَثَانِيَ وَفُضِّلْتُ بِالْمُفَصَّلِ

(لاحمد والكبير كذا في جمع الفوائد)

28. 'वासिला रज़ि० ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल किया है कि मुझे तौरात के बदले में सब्अ तवील मिली हैं और ज़बूर के बदले में

मईन और इंजील के बदले में मसानी और मुफ़स्सल मख़्सूस है मेरे साथ।'

कलाम पाक की अव्वल सात सूरतें तूल कहलाती हैं। इसके बाद की ग्यारह सूरतें मईन कहलाती हैं। इसके बाद की बीस सूरतें मसानी, इसके बाद ख़त्मे क़ुरआन तक मुफ़स्सल। यह मशहूर क़ौल है। बाज़-बाज़ सूरतों में इख़्तिलाफ़ भी है कि यह तूल में दाख़िल हैं या मईन में, इसी तरह मसानी में दाख़िल हैं या मुफ़स्सल में। मगर हदीस शरीफ़ के मतलब व मक़्सूद में इस इख़्तिलाफ़ से कोई फ़र्क नहीं आता। मक़्सद यह है कि जिस क़दर कुतुबे मशहूरा समावीया[1] पहले नाज़िल हुई हैं, उन सब की नज़ीर क़ुरआन शरीफ़ में मौजूद है और उनके अलावा मुफ़स्सल इस कलाम पाक में मख़्सूस है, जिसकी मिसाल पहली किताबों में नहीं मिलती।

(٢٩) عَنْ اَبِيْ سَعِيْدِ نِ الْخُدْرِيِّ قَالَ جَلَسْتُ فِيْ عِصَابَةٍ مِّنْ ضُعَفَاءِ الْمُهَاجِرِيْنَ وَ اِنَّ بَعْضَهُمْ لَيَسْتَتِرُ بِبَعْضٍ مِّنَ الْعُرْيِ وَقَارِئٌ يَّقْرَأُ عَلَيْنَا اِذْ جَاءَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَامَ عَلَيْنَا فَلَمَّا قَامَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَكَتَ الْقَارِئُ فَسَلَّمَ ثُمَّ قَالَ مَا كُنْتُمْ تَصْنَعُوْنَ قُلْنَا نَسْتَمِعُ اِلٰى كِتَابِ اللّٰهِ تَعَالٰى فَقَالَ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ جَعَلَ مِنْ اُمَّتِيْ مَنْ اُمِرْتُ اَنْ اَصْبِرَ نَفْسِيْ مَعَهُمْ قَالَ فَجَلَسَ وَسْطَنَا لِيَعْدِلَ بِنَفْسِهِ فِيْنَا ثُمَّ قَالَ بِيَدِهٖ هٰكَذَا فَتَحَلَّقُوْا وَبَرَزَتْ وُجُوْهُهُمْ لَهٗ فَقَالَ اَبْشِرُوْا يَا مَعْشَرَ صَعَالِيْكِ الْمُهَاجِرِيْنَ بِالنُّوْرِ التَّامِّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ قَبْلَ اَغْنِيَاءِ النَّاسِ بِنِصْفِ يَوْمٍ وَذٰلِكَ خَمْسُمِائَةِ سَنَةٍ (رواه ابوداؤد)

29. अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि मैं ज़ुअफ़ा मुहाजिरीन[2] की जमाअत में एक मर्तबा बैठा हुआ था। उन लोगों के पास कपड़ा भी इतना न था कि जिस से पूरा बदन ढांप लें। बाज़ लोग बाज़ की ओट करते थे और एक शख़्स क़ुरआन शरीफ़ पढ़ रहा था कि इतने में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ फ़र्मा हुए और बिल्कुल हमारे क़रीब खड़े हो गये। हुज़ूर सल्ल० के आने पर क़ारी चुप हो गया तो हुज़ूर सल्ल० ने सलाम किया और फिर दर्याफ़्त फ़र्माया कि तुम लोग क्या कर रहे थे, हमने अर्ज किया कि कलामुल्लाह सुन रहे थे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है जिसने मेरी उम्मत में ऐसे लोग पैदा फ़र्माये कि मुझे उनमें ठहरने का हुक्म किया गया, इसके बाद हुज़ूर सल्ल० हमारे बीच में

1. मशहूर आसमानी किताबें, 2. मुहाजिर सहाबा में के कमज़ोर लोग,

Click-->

Click-->

Click-->

Document Outline

- 1 Start
- Hikayate Sahaba
- Fazail e Namaz
- Fazail e Tablig
- Fazail e Zikr
- Fazail e Quran Majeed
- Fazail e Ramzan
- Fazail e Durood Shareef
- Musalmano ki Maujuda Pasti ka Wahid Ilaaj
- Names of Allah
- Names of Muhammad (s.a.w)